अपभ्रंश रचना सौरभ

डॉ. कमलचन्द सोगाणी

प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी
राजस्थान

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अपभ्रंश रचना सौरभ

डॉ. कमलचन्द सोगाणी
पूर्व प्रोफेसर, दर्शनशास्त्र
सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर

प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जैनविद्या संस्थान
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी
राजस्थान

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

◆ प्रकाशक
अपभ्रंश साहित्य अकादमी,
जैनविद्या संस्थान,
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी,
श्रीमहावीरजी - 322 220 (राजस्थान)

◆ प्राप्ति स्थान
1. जैनविद्या संस्थान, श्रीमहावीरजी
2. साहित्य विक्रय केन्द्र
दिगम्बर जैन नसियाँ भट्टारकजी,
सवाई रामसिंह रोड,
जयपुर - 302 004

◆ द्वितीय संस्करण, 2003
◆ प्रतियाँ 2000

◆ मूल्य 70.00

◆ कम्प्यूटर टाईपसैटिंग
आयुष ग्राफिक्स
डी-173-(ए), बापू नगर, जयपुर - 302 015
फोन :- (नि.) 2708265, (मो.) 94140-76708

◆ मुद्रक
जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि.
एम. आई. रोड, जयपुर - 302 001

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

डॉ. हरिवल्लभ चुनीलाल भायाणी

एवं

स्व. डॉ. हीरालाल जैन

को

सादर समर्पित

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अनुक्रमणिका

पाठ सं.	विषय		पृ.सं.
	आरम्भिक (द्वितीय संस्करण)		i
	प्रकाशकीय (प्रथम संस्करण)		iii
	प्रस्तावना (प्रथम संस्करण)		v
	प्रारम्भिक		vii
पाठ 1	सर्वनाम		1
	उत्तम पुरुष एकवचन	**वर्तमानकाल**	
पाठ 2	सर्वनाम		2
	मध्यम पुरुष एकवचन	**वर्तमानकाल**	
पाठ 3	सर्वनाम		3
	अन्य पुरुष एकवचन	**वर्तमानकाल**	
पाठ 4	सर्वनाम-एकवचन		4
	आकारान्त आदि क्रियाएँ	**वर्तमानकाल**	
पाठ 5	सर्वनाम		5
	उत्तम पुरुष बहुवचन	**वर्तमानकाल**	
पाठ 6	सर्वनाम		7
	मध्यम पुरुष बहुवचन	**वर्तमानकाल**	
पाठ 7	सर्वनाम		9
	अन्य पुरुष बहुवचन	**वर्तमानकाल**	
पाठ 8	सर्वनाम-बहुवचन		11
	आकारान्त आदि क्रियाएँ	**वर्तमानकाल**	
पाठ 9	सर्वनाम		13
	उत्तम पुरुष एकवचन	**विधि एवं आज्ञा**	
पाठ 10	सर्वनाम		14
	मध्यम पुरुष एकवचन	**विधि एवं आज्ञा**	
पाठ 11	सर्वनाम		16
	अन्य पुरुष एकवचन	**विधि एवं आज्ञा**	
पाठ 12	सर्वनाम - एकवचन		17
	आकारान्त आदि क्रियाएँ	**विधि एवं आज्ञा**	

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ सं.	विषय		पृ.सं.
पाठ 13	सर्वनाम		18
	उत्तम पुरुष बहुवचन	**विधि एवं आज्ञा**	
पाठ 14	सर्वनाम		20
	मध्यम पुरुष बहुवचन	**विधि एवं आज्ञा**	
पाठ 15	सर्वनाम		22
	अन्य पुरुष बहुवचन	**विधि एवं आज्ञा**	
पाठ 16	सर्वनाम-बहुवचन		24
	आकारान्त आदि क्रियाएँ	**विधि एवं आज्ञा**	
पाठ 17	**अकर्मक क्रियाएँ**		26
	अभ्यास		
पाठ 18	सर्वनाम		28
	उत्तम पुरुष एकवचन	**भविष्यत्काल**	
पाठ 19	सर्वनाम		29
	मध्यम पुरुष एकवचन	**भविष्यत्काल**	
पाठ 20	सर्वनाम		30
	अन्य पुरुष एकवचन	**भविष्यत्काल**	
पाठ 21	सर्वनाम-एकवचन		32
	आकारान्त आदि क्रियाएँ	**भविष्यत्काल**	
पाठ 22	सर्वनाम		33
	उत्तम पुरुष बहुवचन	**भविष्यत्काल**	
पाठ 23	सर्वनाम		35
	मध्यम पुरुष बहुवचन	**भविष्यत्काल**	
पाठ 24	सर्वनाम		37
	अन्य पुरुष बहुवचन	**भविष्यत्काल**	
पाठ 25	सर्वनाम-बहुवचन		39
	आकारान्त आदि क्रियाएँ	**भविष्यत्काल**	
पाठ 26	**अभ्यास**		42
पाठ 27	**सम्बन्धक भूत कृदन्त**		44
पाठ 28	**हेत्वर्थक कृदन्त**		46

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ सं.	विषय		पृ.सं.
पाठ 29	संज्ञाएँ एवं क्रियाएँ		
	अकारान्त संज्ञा शब्द	**पुल्लिंग**	48
	अकर्मक क्रियाएँ		
पाठ 30	अकारान्त संज्ञा	पुल्लिंग	50
	प्रथमा एकवचन		
पाठ 31	अकारान्त संज्ञा	पुल्लिंग	52
	प्रथमा बहुवचन		
पाठ 32	**अभ्यास**		54
पाठ 33	संज्ञाएँ एवं क्रियाएँ		
	अकारान्त संज्ञा शब्द	**नपुंसकलिंग**	56
	अकर्मक क्रियाएँ		
पाठ 34	अकारान्त संज्ञा	नपुंसकलिंग	58
	प्रथमा एकवचन		
पाठ 35	अकारान्त संज्ञा	नपुंसकलिंग	60
	प्रथमा बहुवचन		
पाठ 36	**अभ्यास**		62
पाठ 37	संज्ञाएँ एवं क्रियाएँ		
	आकारान्त संज्ञा शब्द	**स्त्रीलिंग**	63
	अकर्मक क्रियाएँ		
पाठ 38	आकारान्त संज्ञा	स्त्रीलिंग	65
	प्रथमा एकवचन		
पाठ 39	आकारान्त संज्ञा	स्त्रीलिंग	67
	प्रथमा बहुवचन		
पाठ 40	**अभ्यास**		69
पाठ 41	**भूतकालिक कृदन्त**	**कर्तृवाच्य**	70
पाठ 42	**वर्तमान कृदन्त**		74
पाठ 43	**अभ्यास**		79
पाठ 44	**भूतकालिक कृदन्त**	**भाववाच्य**	80
पाठ 45	**अभ्यास**		83
पाठ 46	**अकर्मक क्रियाएँ**	**भाववाच्य**	84
पाठ 47	**अभ्यास**		87
पाठ 48	**विधि कृदन्त**	**भाववाच्य**	88

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ सं.	विषय		पृ.सं.
पाठ 49	**अभ्यास**		92
पाठ 50	संज्ञा-सर्वनाम द्वितीया एकवचन		93
	सकर्मक क्रियाएँ		
पाठ 51	संज्ञा-सर्वनाम द्वितीया बहुवचन	पु.-नपुं.-स्त्रीलिंग	96
	सकर्मक क्रियाएँ		
पाठ 52	**सकर्मक क्रियाएँ**		99
	अभ्यास		
पाठ 53	**सकर्मक क्रियाएँ**	**कर्मवाच्य**	101
पाठ 54	संज्ञा - शब्द	पुल्लिंग	109
	इकारान्त, उकारान्त		
	सकर्मक क्रियाएँ		
पाठ 55	**अभ्यास**		111
पाठ 56	**भूतकालिक कृदन्त**	**कर्मवाच्य**	112
पाठ 57	**अभ्यास**		115
पाठ 58	**इकारान्त, उकारान्त** संज्ञा शब्द	पु.-नपुं.-स्त्रीलिंग	116
पाठ 59	**सकर्मक क्रियाएँ**		118
पाठ 60	इकारान्त, उकारान्त संज्ञाएँ		119
	प्रथमा, तृतीया		
	एकवचन, बहुवचन		
पाठ 61	**विधि कृदन्त**	**कर्मवाच्य**	122
पाठ 62	**अभ्यास**		127
पाठ 63	**विविध कृदन्त**		128
	द्वितीयासहित		
पाठ 64	**अभ्यास**		130
पाठ 65	संज्ञा-सर्वनाम	पु.-नपुं.-स्त्रीलिंग	131
	चतुर्थी-षष्ठी एकवचन		
पाठ 66	संज्ञा	इका., उका., पु.-नपु.	135
	चतुर्थी-षष्ठी एकवचन		
पाठ 67	संज्ञा-सर्वनाम	पु.-नपुं.-स्त्रीलिंग	137
	चतुर्थी-षष्ठी बहुवचन		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ सं.	विषय		पृ.सं.
पाठ 68	संज्ञा	इका., उका., पु.-नपु.	141
	चतुर्थी-षष्ठी बहुवचन		
पाठ 69	अभ्यास		143
पाठ 70	संज्ञा-सर्वनाम		144
	पंचमी एकवचन		
पाठ 71	संज्ञा		146
	पंचमी एकवचन		
पाठ 72	संज्ञा		147
	पंचमी बहुवचन		
पाठ 73	संज्ञा-सर्वनाम		148
	पंचमी बहुवचन		
पाठ 74	संज्ञा		149
	सप्तमी एकवचन		
पाठ 75	संज्ञा-सर्वनाम		150
	सप्तमी बहुवचन		
पाठ 76	संज्ञा		151
	सम्बोधन, एक-बहुवचन		
पाठ 77	प्रेरणार्थक प्रत्यय		152
पाठ 78	स्वार्थिक प्रत्यय		156
पाठ 79	विविध सर्वनाम		157
	अभ्यास		
पाठ 80	अव्यय		159
पाठ 81	क्रिया-रूप व प्रत्यय		160
पाठ 82	क्रिया-रूप व प्रत्यय		163
पाठ 83	(क) संज्ञा-रूप		164
	(ख) सर्वनाम-रूप		170
	(ग) संख्यावाची रूप		185
पाठ 84	संज्ञाशब्दरूपों के प्रत्यय		193
परिशिष्ट 1	संज्ञा कोष		208
परिशिष्ट 2	क्रिया कोष		217

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आरम्भिक

(द्वितीय संस्करण)

'अपभ्रंश रचना सौरभ' का द्वितीय संस्करण पाठकों के हाथों में समर्पित करते हुए हर्ष का अनुभव हो रहा है। इसके प्रथम संस्करण का पाठकों ने भरपूर उपयोग किया, इसके लिए हम उनके आभारी हैं।

तीर्थंकर महावीर ने धर्म-प्रचार के निमित्त तत्कालीन लोक-भाषा 'प्राकृत' का प्रयोग किया। प्राकृत भाषा की परम्परा अपभ्रंश को प्राप्त हुई, और अपभ्रंश की कोख से ही सिन्धी, पंजाबी, मराठी, गुजराती, राजस्थानी, बिहारी, उड़िया, बंगला, असमी, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी आदि भारतीय भाषाओं का जन्म हुआ है। इस तरह से राष्ट्रभाषा व लगभग सभी नव्य भारतीय आर्यभाषाओं का मूलस्रोत होने का गौरव अपभ्रंश भाषा को प्राप्त है।

'अपभ्रंश ईसा की लगभग सातवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी तक सम्पूर्ण उत्तर भारत की सामान्य लोक-जीवन के परस्पर व्यवहार की बोली रही है।' डॉ. देवेन्द्रकुमार जैन का कथन है कि अपभ्रंश के महाकवि स्वयंभू और पुष्पदन्त अपने समय की लोक-भाषा अपभ्रंश में नहीं लिखते तो सम्भवतः 'पृथ्वीराज रासो', 'सुरसागर', और 'रामचरितमास' का सृजन लोक-भाषाओं में सम्भव नहीं होता। डॉ. रंजनसूरिदेव लिखते हैं, 'रचना-प्रक्रिया की दृष्टि से गोस्वामी तुलसीदास भी महाकवि स्वयंभू के काव्य-वैभव एवं भाषिकी गरिमा से पूर्णत: प्रभावित हैं।' राजा भोज के युग में (1022-1063 ई.) अपभ्रंश कवियों का राजदरबारों में सम्मानपूर्ण स्थान था।

यह कहना अतिशयोक्ति नहीं है कि अपभ्रंश भाषा और साहित्य का विकसित रूप ही हिन्दी है। डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार- 'साहित्यिक परम्परा की दृष्टि से विचार किया जाए तो अपभ्रंश के सभी काव्यरूपों की परम्परा हिन्दी में ही सुरक्षित है।' द्विवेदी जी ने तो अपभ्रंश को हिन्दी की 'प्राणधारा' ही कहा है। हिन्दी को ठीक से समझने के लिए अपभ्रंश की जानकारी आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है। अत: राष्ट्रभाषा हिन्दी सहित आधुनिक भारतीय भाषाओं के सन्दर्भ में यह कहना कि अपभ्रंश का अध्ययन राष्ट्रीय चेतना और एकता का पोषक है, उचित प्रतीत होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी द्वारा संचालित 'जैनविद्या संस्थान' के अन्तर्गत 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी' की स्थापना सन् 1988 में की गई। वर्तमान में इसके माध्यम से प्राकृत-अपभ्रंश का अध्यापन पत्राचार से किया जाता है। 'अपभ्रंश काव्य सौरभ', 'अपभ्रंश अभ्यास सौरभ', 'प्रौढ अपभ्रंश रचना सौरभ भाग-1', 'प्रौढ प्राकृत अपभ्रंश रचना सौरभ भाग-2' अकादमी के महत्त्वपूर्ण प्रकाशन हैं। आशा है अपभ्रंश के अध्ययनार्थियों के लिए इस पुस्तक का द्वितीय संस्करण उपयोगी सिद्ध होगा।

पुस्तक प्रकाशन के लिए अपभ्रंश साहित्य अकादमी के कार्यकर्ता एवं जयपुर प्रिण्टर्स प्रा. लि. धन्यवादार्ह हैं।

नरेश कुमार सेठी	**नरेन्द्र कुमार पाटनी**	**डॉ. कमलचन्द सोगाणी**
अध्यक्ष	मंत्री	संयोजक
प्रबन्धकारिणी कमेटी		जैनविद्या संस्थान समिति
दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी		जयपुर

तीर्थंकर मल्लिनाथ जन्म कल्याणक दिवस
मार्गशीर्ष शुक्ल एकादशी, वीर निर्वाण सं. 2530
4 दिसम्बर, 2003

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रकाशकीय

(प्रथम संस्करण)

हमारे देश में प्राचीनकाल से ही लोकभाषाओं में साहित्य-रचना होती रही है। 'अपभ्रंश' भी एक ऐसी ही लोकभाषा/जनभाषा थी जिसमें जीवन की सभी विधाओं में पुष्कलमात्रा में साहित्य रचा गया। 8वीं से 13वीं शताब्दी तक यह सारे उत्तर-भारत की साहित्यिक भाषा रही। अपभ्रंश साहित्य की विशालता, लोकप्रियता और महत्ता के कारण ही आचार्य हेमचन्द्र ने अपने 'प्राकृत-व्याकरण' के चतुर्थ पाद में सूत्र संख्या 329 से 446 तक स्वतन्त्र रूप से अपभ्रंश भाषा की व्याकरण-रचना की।

अपभ्रंश भारतीय आर्यभाषाओं (उत्तर-भारतीय भाषाओं) की जननी है, उनके विकास की एक अवस्था है। अत: हिन्दी एवं अन्य सभी उत्तर-भारतीय भाषाओं के विकास के इतिहास के अध्ययन के लिये अपभ्रंश भाषा का अध्ययन आवश्यक है।

अनेक कारणों से अपभ्रंश का साहित्य प्रकाशित न होने से इसकी रुचि पाठकों में न पनप सकी और इसके समुचित ज्ञान का अभाव बना रहा। धीरे-धीरे यह अपरिचय की ओट में छिप गई, इसके अध्ययन-अध्यापन की भी उचित व्यवस्था न हो सकी, परिणामत: अपभ्रंश का अध्ययन अत्यन्त दुष्कर हो गया।

अपभ्रंश साहित्य के अध्ययन-अध्यापन एवं प्रचार-प्रसार के उद्देश्य से दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी द्वारा संचालित जैनविद्या संस्थान के अन्तर्गत 'अपभ्रंश साहित्य अकादमी' की स्थापना 1988 में की गई। अकादमी का प्रयास है - अपभ्रंश के अध्ययन-अध्यापन को सशक्त करके उसके सही रूप को सामने रखना जिससे प्राचीन साहित्यिक-निधि के साथ-साथ आधुनिक आर्यभाषाओं के स्वभाव और उनकी सम्भावनाएँ भी स्पष्ट हो सकें।

किसी भी भाषा को सीखने, जानने, समझने के लिये उसके रचनात्मक स्वरूप/संरचना को जानना आवश्यक है। अपभ्रंश के अध्ययन के लिये भी उसकी रचना-प्रक्रिया एवं व्याकरण का ज्ञान आवश्यक है। 'अपभ्रंश रचना सौरभ' इसी क्रम का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एक प्रकाशन है। यद्यपि अपभ्रंश व्याकरण सम्बन्धी कुछ पुस्तकें प्रकाशित हैं किन्तु आचार्य हेमचन्द्र के सूत्रों के आधार पर अनुवाद एवं रचना कार्य की दृष्टि से हिन्दी में तथा आधुनिक शैली में प्रकाशित पुस्तक का अभाव ही है।

'अपभ्रंश रचना सौरभ' इस दिशा में प्रथम व अनूठा प्रयास है। इसकी शैली, प्रणाली एवं प्रस्तुतिकरण अत्यन्त सहज, सरल, सुबोध, एवं नवीन/आधुनिक है जो विद्यार्थियों के लिये अत्यन्त उपयोगी है। शिक्षक के अभाव में स्वयं पढ़कर भी पाठक/विद्यार्थी इससे लाभान्वित हो सकते हैं। इस अर्थ में 'अपभ्रंश रचना सौरभ' 'अपभ्रंश शिक्षक' सिद्ध होगी।

इसके रचनाकार हैं डॉ. कमलचन्द सोगाणी, सेवानिवृत्त प्रोफेसर, दर्शनविभाग, सुखाड़िया विश्वविद्यालय, उदयपुर। भाषा/भाषिक अर्थ/भाषिक संरचना का दर्शन से एक सूक्ष्म और अव्यक्त सम्बन्ध होता है, शायद यही कारण है कि डॉ. सोगाणी दर्शन के प्रोफेसर होते हुये भी अपभ्रंश-प्राकृत आदि प्राचीन भाषाओं से जुड़े हुए हैं। अपभ्रंश-प्राकृत जगत् में आपका नाम खूब जाना-माना है। 'अपभ्रंश रचना सौरभ' के लिए हम उनके अत्यन्त आभारी हैं। पुस्तक प्रकाशन में सहयोगी कार्यकर्त्ता एवं मुद्रण के लिये मदरलैण्ड प्रिण्टिंग प्रेस, जयपुर धन्यवादार्ह है।

ऋषभ निर्वाण दिवस
माघ कृष्ण चतुर्दशी, वि. सं. 2047
जयपुर

ज्ञानचन्द्र खिन्दूका
संयोजक
जैनविद्या संस्थान समिति

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रस्तावना

(प्रथम संस्करण)

अपभ्रंश भारतीय आर्य-परिवार की एक सुसमृद्ध लोक भाषा रही है। इसका प्रकाशित-अप्रकाशित विपुल साहित्य इसके विकास की गौरवमयी गाथा कहने में समर्थ है। स्वयंभू, पुष्पदन्त, धनपाल, वीर, नयनन्दि, कनकामर, जोइन्दु, रामसिंह, हेमचन्द्र, रइधू आदि अपभ्रंश भाषा के अमर साहित्यकार हैं। कोई भी देश व संस्कृति इनके आधार से अपना मस्तक ऊँचा रख सकती है। विद्वानों का मत है "अपभ्रंश ही वह आर्य भाषा है जो ईसा की लगभग सातवीं शताब्दी से तेरहवीं शताब्दी तक सम्पूर्ण उत्तर-भारत की सामान्य लोक-जीवन के परस्पर भाव-विनिमय और व्यवहार की बोली रही है।[1]" यह निर्विवाद तथ्य है कि अपभ्रंश की कोख से ही सिन्धी, पंजाबी, मराठी, गुजराती, राजस्थानी, बिहारी, उड़िया, बंगला, असमी, पश्चिमी हिन्दी, पूर्वी हिन्दी आदि आधुनिक भारतीय भाषाओं का जन्म हुआ है। इस तरह से राष्ट्र भाषा का मूल स्रोत होने का गौरव अपभ्रंश भाषा को प्राप्त है। यह कहना युक्तिसंगत है - "अपभ्रंश और हिन्दी का सम्बन्ध अत्यन्त गहरा और सुदृढ़ है, वे एक-दूसरे की पूरक हैं। हिन्दी को ठीक से समझने के लिए अपभ्रंश की जानकारी आवश्यक ही नहीं अनिवार्य है।"[2] डॉ. हजारीप्रसाद द्विवेदी के अनुसार - "हिन्दी साहित्य में (अपभ्रंश की) प्राय: पूरी परम्पराएँ ज्यों की त्यों सुरक्षित हैं।"[2] अत: राष्ट्रभाषा हिन्दीसहित आधुनिक भारतीय भाषाओं के सन्दर्भ में यह कहना कि अपभ्रंश का अध्ययन राष्ट्रीय चेतना और एकता का पोषक है, उचित प्रतीत होता है।

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि अपभ्रंश भाषा को सीखना-समझना अत्यन्त महत्त्वपूर्ण है। इसी बात को ध्यान में रखकर **"अपभ्रंश रचना सौरभ"** नामक पुस्तक की रचना की गई है। इस पुस्तक के पाठों को ऐसे क्रम में रखा गया है जिससे पाठक सहज-सुचारु रूप से अपभ्रंश भाषा के व्याकरण को सीख

---

1. हिन्दी के विकास में अपभ्रंश का योग, डॉ. नामवरसिंह, पृष्ठ 287।
2. अपभ्रंश और अवहट्ट : एक अन्तर्यात्रा, डॉ. शम्भूनाथ पाण्डेय, 1979, पृ. 9।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सकें और अपभ्रंश में रचना करने का अभ्यास भी कर सकें। अपभ्रंश में वाक्य-रचना के द्वारा ही अपभ्रंश का व्याकरण सिखाने का प्रयास किया गया है।

हेमचन्द्राचार्य के अपभ्रंश-व्याकरण के सूत्रों का आधार प्रस्तुत पुस्तक के पाठों में लिया गया है। व्याकरण के जो पक्ष इसमें छूट गए हैं उनको '**प्रौढ़ अपभ्रंश रचना सौरभ**' में दिया जाएगा। पाठकों के सुझाव मेरे बहुत काम के होंगे।

आभार

व्याकरण-रचना से सम्बन्धित पुस्तकों का प्रूफ-संशोधन का कार्य अत्यन्त कठिन होता है। किन्तु मुझे हर्ष है कि अपभ्रंश के मेरे विद्यार्थियों-सुश्री प्रीति जैन और सुश्री सीमा बत्रा ने, जिन्होंने अकादमी की 'अपभ्रंश डिप्लोमा' परीक्षा उत्तीर्ण की है और जो अकादमी में कार्यरत हैं, इस कठिन कार्य को सहर्ष और रुचिपूर्वक सम्पन्न किया है। अत: मैं उनका आभारी हूँ। मैं सुश्री प्रीति जैन का विशेष रूप से आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक में महत्त्वपूर्ण सुधार सुझाए और विद्यार्थियों के दृष्टिकोण से प्रस्तुतिकरण को संशोधित किया।

मेरी धर्मपत्नी श्रीमती कमलादेवी सोगाणी ने इस पुस्तक को लिखने में जो सहयोग दिया है उसके लिए आभार व्यक्त करता हूँ।

इस पुस्तक को प्रकाशित करने के लिए जैनविद्या संस्थान समिति एवं उसके संयोजक श्री ज्ञानचन्द्र जी खिन्दूका ने जो व्यवस्था की है उसके लिए आभार प्रकट करता हूँ।

कमलचन्द सोगाणी

परामर्शदाता
अपभ्रंश साहित्य अकादमी
जयपुर।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रारम्भिक

अपभ्रंश भाषा के सम्बन्ध में निम्नलिखित सामान्य जानकारी आवश्यक है -

अपभ्रंश की वर्णमाला

स्वर - अ, आ, इ, ई, उ, ऊ, ए, ओ।

व्यंजन - क, ख, ग, घ, ङ।
च, छ, ज, झ, ञ।
ट, ठ, ड, ढ, ण।
त, थ, द, ध, न।
प, फ, ब, भ, म।
य, र, ल, व।
स, ह।
ः, ।, ँ

यहाँ ध्यान देने योग्य है कि असंयुक्त अवस्था में **ङ** और **ञ** का प्रयोग अपभ्रंश में नहीं पाया जाता है। हेमचन्द्र कृत अपभ्रंश व्याकरण में **ङ** और **ञ** का संयुक्त प्रयोग उपलब्ध है। **न** का भी संयुक्त और असंयुक्त अवस्था में प्रयोग देखा जाता है। **ङ, ञ, न** के स्थान पर संयुक्त अवस्था में अनुस्वार भी विकल्प से होता है।

वचन

अपभ्रंश भाषा में दो ही वचन होते हैं- एकवचन और बहुवचन।

लिंग

अपभ्रंश भाषा में तीन लिंग होते हैं- पुल्लिग, नपुंसकलिंग और स्त्रीलिंग।

पुरुष

अपभ्रंश भाषा में तीन पुरुष होते हैं- उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष, अन्य पुरुष।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कारक

अपभ्रंश भाषा में आठ कारक होते हैं -

	विभक्ति	कारक	कारक-चिह्न
1.	प्रथमा	कर्त्ता	ने
2.	द्वितीया	कर्म	को
3.	तृतीया	करण	से, द्वारा आदि
4.	चतुर्थी	संप्रदान	के लिए
5.	पंचमी	अपादान	से
6.	षष्ठी	सम्बन्ध	का, के, की
7.	सप्तमी	अधिकरण	में, पर
8.	सम्बोधन	सम्बोधन	हे, अरे, भो

अपभ्रंश में चतुर्थी और षष्ठी विभक्ति के लिये एक ही प्रत्यय है।

क्रिया

अपभ्रंश भाषा में दो प्रकार की क्रियाएँ होती हैं- सकर्मक और अकर्मक।

काल

अपभ्रंश भाषा में चार प्रकार के काल वर्णित हैं -

1. वर्तमानकाल 2. भूतकाल
3. भविष्यत्काल 4. विधि एवं आज्ञा

अपभ्रंश भाषा में भूतकाल को व्यक्त करने के लिये भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग बहुलता से किया गया है।

शब्द

अपभ्रंश में चार प्रकार के शब्द पाए जाते हैं -

1. अकारान्त 2. आकारान्त
3. इकारान्त (इ, ई) 4. उकारान्त (उ, ऊ)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 1

सर्वनाम

हउं = मैं — उत्तम पुरुष एकवचन

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना,	**सय** = सोना,	**णच्च** = नाचना
रूस = रूसना,	**लुक्क** = छिपना,	**जग्ग** = जागना
जीव = जीना		

वर्तमानकाल

हउं	हसउं/हसमि/हसामि/हसेमि	= मैं हँसता हूँ / हँसती हूँ।
हउं	सयउं/सयमि/सयामि/सयेमि	= मैं सोता हूँ / सोती हूँ।
हउं	णच्चउं/णच्चमि/णच्चामि/णच्चेमि	= मैं नाचता हूँ / नाचती हूँ।
हउं	रूसउं/रूसमि/रूसामि/रूसेमि	= मैं रूसता हूँ / रूसती हूँ।
हउं	लुक्कउं/लुक्कमि/लुक्कामि/लुक्केमि	= मैं छिपता हूँ / छिपती हूँ।
हउं	जग्गउं/जग्गमि/जग्गामि/जग्गेमि	= मैं जागता हूँ / जागती हूँ।
हउं	जीवउं/जीवमि/जीवामि/जीवेमि	= मैं जीता हूँ / जीती हूँ।

---

1. **हउं** = मैं, उत्तम पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।
2. वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष एकवचन में **उं** और **मि** प्रत्यय क्रिया में लगते हैं। '**मि**' प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य '**अ**' का **आ** और **ए** भी हो जाता है।
3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं। अकर्मक क्रिया वह होती है जिसका कोई कर्म नहीं होता और जिसका प्रभाव कर्ता पर ही पड़ता है। 'मैं हँसता हूँ' इसमें हँसने का प्रभाव 'मैं' पर ही पड़ता है। इस वाक्य में हँसने की क्रिया का कोई कर्म नहीं है।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। इनमें कर्ता '**हउं**' के अनुसार क्रियाओं के **पुरुष** और **वचन** हैं। यहाँ '**हउं**' उत्तम पुरुष एकवचन में है, तो क्रियाएँ भी उत्तम पुरुष एकवचन में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 2

सर्वनाम

तुहुं = तुम — **मध्यम पुरुष एकवचन**

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना,	**सय** = सोना,	**णच्च** = नाचना
रूस = रूसना,	**लुक्क** = छिपना,	**जग्ग** = जागना
जीव = जीना		

वर्तमानकाल

तुहुं	हसहि/हससि/हससे/हसेसि	= तुम हँसते हो/हँसती हो।
तुहुं	सयहि/सयसि/सयसे/सयेसि	= तुम सोते हो/सोती हो।
तुहुं	णच्चहि/णच्चसि/णच्चसे/णच्चेसि	= तुम नाचते हो/नाचती हो।
तुहुं	रूसहि/रूससि/रूससे/रूसेसि	= तुम रूसते हो/रूसती हो।
तुहुं	लुक्कहि/लुक्कसि/लुक्कसे/लुक्केसि	= तुम छिपते हो/छिपती हो।
तुहुं	जग्गहि/जग्गसि/जग्गसे/जग्गेसि	= तुम जागते हो/जागती हो।
तुहुं	जीवहि/जीवसि/जीवसे/जीवेसि	= तुम जीते हो/जीती हो।

---

1. **तुहुं** = तुम, मध्यम पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।
2. वर्तमानकाल के मध्यम पुरुष एकवचन में **'हि'**, **'सि'** और **'से'** प्रत्यय क्रिया में लगते हैं। **'सि'** प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'ए'** भी हो जाता है। यदि क्रिया के अन्त में 'अ' न हो, तो **'से'** प्रत्यय नहीं लगता है (देखें पाठ - 4)
3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। इनमें कर्ता **'तुहुं'** के अनुसार क्रियाओं के **पुरुष** और **वचन** हैं। यहाँ **'तुहुं'** मध्यम पुरुष एकवचन में है, तो क्रियाएँ भी मध्यम पुरुष एकवचन में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 3

सर्वनाम

सो = वह (पुरुष), **सा** = वह (स्त्री) — **अन्य पुरुष एकवचन**

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना,	**सय** = सोना,	**णच्च** = नाचना
रूस = रूसना,	**लुक्क** = छिपना,	**जग्ग** = जागना
जीव = जीना		

वर्तमानकाल

सो	हसइ/हसेइ/हसए	= वह हँसता है।
सा	हसइ/हसेइ/हसए	= वह हँसती है।
सो	सयइ/सयेइ/सयए	= वह सोता है।
सा	सयइ/सयेइ/सयए	= वह सोती है।
सो	णच्चइ/णच्चेइ/णच्चए	= वह नाचता है।
सा	णच्चइ/णच्चेइ/णच्चए	= वह नाचती है।
सो	रूसइ/रूसेइ/रूसए	= वह रूसता है।
सा	रूसइ/रूसेइ/रूसए	= वह रूसती है।
सो	लुक्कइ/लुक्केइ/लुक्कए	= वह छिपता है।
सा	लुक्कइ/लुक्केइ/लुक्कए	= वह छिपती है।
सो	जग्गइ/जग्गेइ/जग्गए	= वह जागता है।
सा	जग्गइ/जग्गेइ/जग्गए	= वह जागती है।
सो	जीवइ/जीवेइ/जीवए	= वह जीता है।
सा	जीवइ/जीवेइ/जीवए	= वह जीती है।

---

1. **सो** = वह (पुरुष), **सा** = वह (स्त्री), अन्य पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)
2. (क) वर्तमान काल के अन्य पुरुष एकवचन में '**इ**' और '**ए**' प्रत्यय क्रिया में लगते हैं। '**इ**' प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य '**अ**' का '**ए**' भी हो जाता है।
   (ख) '**ए**' प्रत्यय अकारान्त क्रियाओं में ही लगता है। आकारान्त, ओकारान्त, उकारान्त क्रियाओं में 'ए' प्रत्यय नहीं लगेगा। **ठा** = ठहरना, **हो** = होना, **हु** = होना आदि क्रियाओं में '**ए**' प्रत्यय वर्तमान काल में नहीं लगेगा (देखें पाठ 4)।
3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 4

सर्वनाम-एकवचन

आकारान्त आदि क्रियाएँ

हउं = मैं, **तुहुं** = तुम, **सो** = वह (पुरुष), **सा** = वह (स्त्री)

अकर्मक क्रियाएँ

ठा = ठहरना, **ण्हा** = नहाना, **हो** = होना

वर्तमानकाल

हउं	ठाउं/ठामि	= मैं ठहरता हूँ / ठहरती हूँ।
हउं	ण्हाउं/ण्हामि	= मैं नहाता हूँ / नहाती हूँ।
हउं	होउं/होमि	= मैं होता हूँ / होती हूँ।
तुहुं	ठाहि/ठासि	= तुम ठहरते हो / ठहरती हो।
तुहुं	ण्हाहि/ण्हासि	= तुम नहाते हो / नहाती हो।
तुहुं	होहि/होसि	= तुम होते हो / होती हो।
सो	ठाइ	= वह ठहरता है।
सा	ठाइ	= वह ठहरती है।
सो	ण्हाइ	= वह नहाता है।
सा	ण्हाइ	= वह नहाती है।
सो	होइ	= वह होता है।
सा	होइ	= वह होती है।

---

1. हउं = मैं, — उत्तम पुरुष एकवचन
   तुहुं = तुम, — मध्यम पुरुष एकवचन
   सो = वह (पुरुष), सा = वह (स्त्री) — अन्य पुरुष एकवचन
   → पुरुष वाचक सर्वनाम एकवचन

2. अकारान्त क्रियाओं को छोड़कर आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं के मध्यम पुरुष एकवचन में 'से' प्रत्यय नहीं लगता है तथा इसी प्रकार अन्य पुरुष एकवचन में 'ए' प्रत्यय नहीं लगता है। ये दोनों प्रत्यय (से और ए) केवल वर्तमानकाल की अकारान्त क्रियाओं में ही लगते हैं।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 5

सर्वनाम

अम्हे } = हम दोनों/हम सब[1]
अम्हइं }

उत्तम पुरुष बहुवचन

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना, **सय** = सोना, **णच्च** = नाचना
रूस = रूसना, **लुक्क** = छिपना, **जग्ग** = जागना
जीव = जीना,

वर्तमानकाल

अम्हे / अम्हइं	हसहुं/हसमो/हसमु/हसम	= हम दोनों हँसते हैं/हँसती हैं। हम सब हँसते हैं/हँसती हैं।
अम्हे / अम्हइं	सयहुं/सयमो/सयमु/सयम	= हम दोनों सोते हैं/सोती हैं। हम सब सोते हैं/सोती हैं।
अम्हे / अम्हइं	णच्चहुं/णच्चमो/णच्चमु/णच्चम	= हम दोनों नाचते हैं/नाचती हैं। हम सब नाचते हैं/नाचती हैं।
अम्हे / अम्हइं	रूसहुं/रूसमो/रूसमु/रूसम	= हम दोनों रूसते हैं/रूसती हैं। हम सब रूसते हैं/रूसती हैं।
अम्हे / अम्हइं	लुक्कहुं/लुक्कमो/लुक्कमु/लुक्कम	= हम दोनों छिपते हैं/छिपती हैं। हम सब छिपते हैं/छिपती हैं।
अम्हे / अम्हइं	जग्गहुं/जग्गमो/जग्गमु/जग्गम	= हम दोनों जागते हैं/जागती हैं। हम सब जागते हैं/जागती हैं।
अम्हे / अम्हइं	जीवहुं/जीवमो/जीवमु/जीवम	= हम दोनों जीते हैं/जीती हैं। हम सब जीते हैं/जीती हैं।

---

1. अम्हे } = हम दोनों/हम सब, उत्तम पुरुष बहुवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)
अम्हइं }

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2. वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष बहुवचन में 'हुं', **मो, मु** और **म** प्रत्यय क्रिया में लगते हैं। **'मो', 'मु'** और **'म'** प्रत्यय लगने पर अकारान्त क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'आ', 'इ'** और 'ए' भी हो जाता है। अत: **हसामो, हसामु, हसाम/हसिमो, हसिमु, हसिम/हसेमो, हसेमु, हसेम** रूप और बनेंगे। इसी प्रकार अन्य अकारान्त क्रियाओं के साथ भी समझ लेना चाहिये।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। यहाँ कर्त्ता उत्तम पुरुष बहुवचन में है। अत: क्रिया भी उत्तम पुरुष बहुवचन की ही लगी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 6

सर्वनाम

मध्यम पुरुष बहुवचन

तुम्हे
तुम्हइं } = तुम दोनों/तुम सब

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना,	**सय** = सोना,	**णच्च** = नाचना
रूस = रूसना,	**लुक्क** = छिपना,	**जग्ग** = जागना
जीव = जीना,		

वर्तमानकाल

तुम्हे / तुम्हइं	हसहु/हसह/हसित्था	= तुम दोनों हँसते हो/हँसती हो। तुम सब हँसते हो/हँसती हो।
तुम्हे / तुम्हइं	सयहु/सयह/सयित्था	= तुम दोनों सोते हो/सोती हो। तुम सब सोते हो/सोती हो।
तुम्हे / तुम्हइं	णच्चहु/णच्चह/णच्चित्था	= तुम दोनों नाचते हो/नाचती हो। तुम सब नाचते हो/नाचती हो।
तुम्हे / तुम्हइं	रूसहु/रूसह/रूसित्था	= तुम दोनों रूसते हो/रूसती हो। तुम सब रूसते हो/रूसती हो।
तुम्हे / तुम्हइं	लुक्कहु/लुक्कह/लुक्कित्था	= तुम दोनों छिपते हो/छिपती हो। तुम सब छिपते हो/छिपती हो।
तुम्हे / तुम्हइं	जग्गहु/जग्गह/जग्गित्था	= तुम दोनों जागते हो/जागती हो। तुम सब जागते हो/जागती हो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुम्हे, तुम्हइं } जीवहु/जीवह/जीवित्था = तुम दोनों जीते हो/जीती हो, तुम सब जीते हो/जीती हो

---

1. तुम्हे, तुम्हइं } = तुम दोनों/तुम सब, मध्यम पुरुष बहुवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)
2. वर्तमानकाल के मध्यम पुरुष बहुवचन में **'हु'**, **'ह'** और **'इत्था'** प्रत्यय क्रिया में लगते हैं।
3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। यहाँ कर्ता मध्यम पुरुष बहुवचन में है अतः क्रिया भी मध्यम पुरुष बहुवचन की लगी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 7
सर्वनाम

ते = वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष) **अन्य पुरुष बहुवचन**
ता = वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ)

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना,	**सय** = सोना,	**णच्च** = नाचना
रूस = रूसना,	**लुक्क** = छिपना,	**जग्ग** = जागना
जीव = जीना,		

वर्तमानकाल

ते	हसहिं/हसन्ति/हसन्ते/हसिरे	=	वे दोनों हँसते हैं। वे सब हँसते हैं।
ता	हसहिं/हसन्ति/हसन्ते/हसिरे	=	वे दोनों हँसती हैं। वे सब हँसती हैं।
ते	सयहिं/सयन्ति/सयन्ते/सयिरे	=	वे दोनों सोते हैं। वे सब सोते हैं।
ता	सयहिं/सयन्ति/सयन्ते/सयिरे	=	वे दोनों सोती हैं। वे सब सोती हैं।
ते	णच्चहिं/णच्चन्ति/णच्चन्ते/णच्चिरे	=	वे दोनों नाचते हैं। वे सब नाचते हैं।
ता	णच्चहिं/णच्चन्ति/णच्चन्ते/णच्चिरे	=	वे दोनों नाचती हैं। वे सब नाचती हैं।
ते	रूसहिं/रूसन्ति/रूसन्ते/रूसिरे	=	वे दोनों रूसते हैं। वे सब रूसते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता	रूसहिं/रूसन्ति/रूसन्ते/रूसिरे	=	वे दोनों रूसती हैं। वे सब रूसती हैं।
ते	लुक्कहिं/लुक्कन्ति/लुक्कन्ते/लुक्किरे	=	वे दोनों छिपते हैं। वे सब छिपते हैं।
ता	लुक्कहिं/लुक्कन्ति/लुक्कन्ते/लुक्किरे	=	वे दोनों छिपती हैं। वे सब छिपती हैं।
ते	जग्गहिं/जग्गन्ति/जग्गन्ते/जग्गिरे	=	वे दोनों जागते हैं। वे सब जागते हैं।
ता	जग्गहिं/जग्गन्ति/जग्गन्ते/जग्गिरे	=	वे दोनों जागती हैं। वे सब जागती हैं।
ते	जीवहिं/जीवन्ति/जीवन्ते/जीविरे	=	वे दोनों जीते हैं। वे सब जीते हैं।
ता	जीवहिं/जीवन्ति/जीवन्ते/जीविरे	=	वे दोनों जीती हैं। वे सब जीती हैं।

---

1. **ते** = वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)
ता = वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ) } =अन्य पुरुष बहुवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)
2. वर्तमानकाल के अन्य पुरुष बहुवचन में **'हिं'**, **'न्ति'**, **'न्ते'** और **'इरे'** प्रत्यय क्रिया में लगते हैं।
3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। यहाँ कर्ता अन्य पुरुष बहुवचन में है। अत: क्रिया भी अन्य पुरुष बहुवचन की लगी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 8

सर्वनाम-बहुवचन

आकारान्त आदि क्रियाएँ

अम्हे / अम्हइं = हम दोनों / हम सब

तुम्हे / तुम्हइं = तुम दोनों / तुम सब

ते = वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)

ता = वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ)

अकर्मक क्रियाएँ

ठा = ठहरना, **ण्हा** = नहाना, **हो** = होना

वर्तमानकाल

अम्हे / अम्हइं	ठाहुं/ठामो/ठामु/ठाम	=	हम दोनों ठहरते हैं/ठहरती हैं। हम सब ठहरते हैं/ठहरती हैं।
अम्हे / अम्हइं	ण्हाहुं/ण्हामो/ण्हामु/ण्हाम	=	हम दोनों नहाते हैं/नहाती हैं। हम सब नहाते हैं/नहाती हैं।
अम्हे / अम्हइं	होहुं/होमो/होमु/होम	=	हम दोनों होते हैं/होती हैं। हम सब होते हैं/होती हैं।
तुम्हे / तुम्हइं	ठाहु/ठाह/ठाइत्था	=	तुम दोनों ठरहते हो/ठहरती हो। तुम सब ठहरते हो/ठहरती हो।
तुम्हे / तुम्हइं	ण्हाहु/ण्हाह/ण्हाइत्था	=	तुम दोनों नहाते हो/नहाती हो। तुम सब नहाते हो/नहाती हो।
तुम्हे / तुम्हइं	होहु/होह/होइत्था	=	तुम दोनों होते हो/होती हो। तुम सब होते हो/होती हो।
ते	**ठाहिं**/ठान्ति→ठन्ति/ठान्ते→ठन्ते/ठाइरे	=	वे दोनों ठहरते हैं। वे सब ठहरते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता	ठाहिं/ठान्ति→ठन्ति/ठान्ते→ठन्ते/ठाइरे	=	वे दोनों ठहरती हैं। वे सब ठहरती हैं।
ते	ण्हाहिं/ण्हान्ति→ण्हन्ति/ण्हान्ते→ण्हन्ते/ण्हाइरे	=	वे दोनों नहाते हैं। वे सब नहाते हैं।
ता	ण्हाहिं/ण्हान्ति→ण्हन्ति/ण्हान्ते→ण्हन्ते/ण्हाइरे	=	वे दोनों नहाती हैं। वे सब नहाती हैं।
ते	होहिं/होन्ति/होन्ते/होइरे	=	वे दोनों होते हैं। वे सब होते हैं।
ता	होहिं/होन्ति/होन्ते/होइरे	=	वे दोनों होती हैं। वे सब होती हैं।

---

1. अम्हे, अम्हइं } = हम दोनों/हम सब, उत्तम पुरुष बहुवचन,
   तुम्हे, तुम्हइं } = तुम दोनों/तुम सब, मध्यम पुरुष बहुवचन,
   } पुरुषवाचक सर्वनाम बहुवचन

   ते = वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)
   ता = वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ)
   } अन्य पुरुष बहुवचन

2. **वर्तमानकाल के प्रत्यय (पाठ 1 से 8 तक)**

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	उं, मि	हुं, मो, मु, म
मध्यम पुरुष	हि, सि, से	हु, ह, इत्था
अन्य पुरुष	इ, ए	हिं, न्ति, न्ते, इरे

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। इनमें कर्ता के अनुसार क्रियाओं के पुरुष और वचन हैं।
5. संयुक्ताक्षर के पहिले यदि दीर्घ स्वर हो तो वह ह्रस्व हो जाता है - ठान्ति→ठन्ति, ण्हान्ति→ण्हन्ति आदि। अपभ्रंश में 'आ', 'ई' और 'ऊ' दीर्घस्वर होते हैं तथा 'अ', 'इ', 'उ', 'ए' और 'ओ' ह्रस्व स्वर माने जाते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 9

सर्वनाम

हउं = मैं **उत्तम पुरुष एकवचन**

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना,	**सय** = सोना,	**णच्च** = नाचना
रूस = रूसना,	**लुक्क** = छिपना,	**जग्ग** = जागना
जीव = जीना		

विधि एवं आज्ञा

हउं	हसमु/हसेमु	= मैं हँसूँ।
हउं	सयमु/सयेमु	= मैं सोवूँ।
हउं	णच्चमु/णच्चेमु	= मैं नाचूँ।
हउं	रूसमु/रूसेमु	= मैं रूसूँ।
हउं	लुक्कमु/लुक्केमु	= मैं छिपूँ।
हउं	जग्गमु/जग्गेमु	= मैं जागूँ।
हउं	जीवमु/जीवेमु	= मैं जीवूँ।

---

1. **हउं** = मैं, उत्तम पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।
2. विधि एवं आज्ञा के उत्तम पुरुष एकवचन में '**मु**' प्रत्यय क्रिया में लगता है। '**मु**' प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य '**अ**' का '**ए**' भी हो जाता है।
3. जब किसी कार्य के लिए प्रार्थना की जाती है तथा आज्ञा एवं उपदेश दिया जाता है तो इन भावों को प्रकट करने के लिए विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय क्रिया में लगा दिये जाते हैं।
4. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं। अकर्मक क्रिया वह होती है जिसका कोई कर्म नहीं होता है और जिसका प्रभाव कर्ता पर ही पड़ता है। 'मैं हँसूँ' में 'हँसूँ' का पूरा सम्बन्ध 'मैं' से ही है, इसमें 'हँसूँ' का कोई कर्म नहीं है।
5. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। इनमें कर्ता 'हउं' के अनुसार क्रियाओं के पुरुष और वचन हैं। यहाँ '**हउं**' उत्तम पुरुष एकवचन में है, तो क्रियाएँ भी उत्तम पुरुष एकवचन में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 10

सर्वनाम

तुहुं = तुम — **मध्यम पुरुष एकवचन**

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना,	**सय** = सोना,	**णच्च** = नाचना
रूस = रूसना,	**लुक्क** = छिपना,	**जग्ग** = जागना
जीव = जीना		

विधि एवं आज्ञा

तुहुं	हसि/हसे/हसु/हस हसहि/हसेहि/हससु/हसेसु	= तुम हँसो।
तुहुं	सयि/सये/सयु/सय सयहि/सयेहि/सयसु/सयेसु	= तुम सोवो।
तुहुं	णच्चि/णच्चे/णच्चु/णच्च णच्चहि/णच्चेहि/णच्चसु/णच्चेसु	= तुम नाचो।
तुहुं	रूसि/रूसे/रूसु/रूस रूसहि/रूसेहि/रूससु/रूसेसु	= तुम रूसो।
तुहुं	लुक्कि/लुक्के/लुक्कु/लुक्क लुक्कहि/लुक्केहि/लुक्कसु/लुक्केसु	= तुम छिपो।
तुहुं	जग्गि/जग्गे/जग्गु/जग्ग जग्गहि/जग्गेहि/जग्गसु/जग्गेसु	= तुम जागो।
तुहुं	जीवि/जीवे/जीवु/जीव जीवहि/जीवेहि/जीवसु/जीवेसु	= तुम जीवो।

---

1. **तुहुं** = तुम, मध्यम पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।
2. विधि एवं आज्ञा के मध्यम पुरुष एकवचन में **'इ'**, **'ए'**, **'उ'**, **'0'**, **'हि'** और **'सु'**

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रत्यय क्रिया में लगते हैं। 'हि' और 'सु' प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'ए'** भी हो जाता है।

3 शून्य प्रत्यय अकारान्त क्रियाओं में ही लगता है। आकारान्त, ओकारान्त, इकारान्त आदि क्रियाओं में शून्य प्रत्यय विधि एवं आज्ञा में नहीं लगेगा। **ठा** = ठहरना, **हो** = होना, **हु** = होना आदि क्रियाओं में शून्य प्रत्यय नहीं होता है।

4. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

5. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। इनमें कर्ता **'तुहुं'** के अनुसार क्रियाओं के पुरुष और वचन हैं। यहाँ **'तुहुं'** मध्यम पुरुष एकवचन में है तो क्रियाएँ भी मध्यम पुरुष एकवचन में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 11

सर्वनाम

सो = वह (पुरुष)

सा = वह (स्त्री)

अन्य पुरुष एकवचन

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना,	**सय** = सोना,	**णच्च** = नाचना
रूस = रूसना,	**लुक्क** = छिपना,	**जग्ग** = जागना
जीव = जीना		

विधि एवं आज्ञा

सो	हसउ/हसेउ	= वह हँसे।
सा	हसउ/हसेउ	= वह हँसे।
सो	सयउ/सयेउ	= वह सोए।
सा	सयउ/सयेउ	= वह सोए।
सो	णच्चउ/णच्चेउ	= वह नाचे।
सा	णच्चउ/णच्चेउ	= वह नाचे।
सो	रूसउ/रूसेउ	= वह रूसे।
सा	रूसउ/रूसेउ	= वह रूसे।
सो	लुक्कउ/लुक्केउ	= वह छिपे।
सा	लुक्कउ/लुक्केउ	= वह छिपे।
सो	जग्गउ/जग्गेउ	= वह जागे।
सा	जग्गउ/जग्गेउ	= वह जागे।
सो	जीवउ/जीवेउ	= वह जीवे।
सा	जीवउ/जीवेउ	= वह जीवे।

1. **सो** = वह (पुरुष), **सा** = वह (स्त्री), अन्य पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।
2. विधि एवं आज्ञा के अन्य पुरुष एकवचन में '**उ**' प्रत्यय क्रिया में लगता है। '**उ**' प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य '**अ**' का '**ए**' भी हो जाता है।
3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 12

सर्वनाम-एकवचन

आकारान्त आदि क्रियाएँ

हउं = मैं

तुहुं = तुम

सो = वह (पुरुष)

सा = वह (स्त्री)

अकर्मक क्रियाएँ

ठा = ठहरना, **ण्हा** = नहाना, **हो** = होना

विधि एवं आज्ञा

हउं	ठामु	= मैं ठहरूँ।
हउं	ण्हामु	= मैं नहाऊँ।
हउं	होमु	= मैं होऊँ।
तुहुं	ठाइ/ठाए/ठाउ/ठाहि/ठासु	= तुम ठहरो।
तुहुं	ण्हाइ/ण्हाए/ण्हाउ/ण्हाहि/ण्हासु	= तुम नहावो।
तुहुं	होइ/होए/होउ/होहि/होसु	= तुम होवो।
सो	ठाउ	= वह ठहरे।
सा	ठाउ	= वह ठहरे।
सो	ण्हाउ	= वह नहावे।
सा	ण्हाउ	= वह नहावे।
सो	होउ	= वह होवे।
सा	होउ	= वह होवे।

1. हउं = मैं, उत्तम पुरुष एकवचन
   तुहुं = तुम, मध्यम पुरुष एकवचन
   सो = वह (पुरुष) अन्य पुरुष एकवचन
   सा = वह (स्त्री) अन्य पुरुष एकवचन
   } पुरुषवाचक सर्वनाम एकवचन
2. अकारान्त क्रियाओं को छोड़कर आकारान्त, ओकारान्त आदि क्रियाओं के मध्यम पुरुष एकवचन में '0' प्रत्यय नहीं लगता है।
3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 13

सर्वनाम

अम्हे
अम्हइं } = हम दोनों/हम सब[1] — उत्तम पुरुष बहुवचन

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना, **सय** = सोना, **णच्च** = नाचना

रूस = रूसना, **लुक्क** = छिपना, **जग्ग** = जागना

जीव = जीना

विधि एवं आज्ञा

अम्हे अम्हइं	हसमो/हसामो/हसेमो	=	हम दोनों हँसें। हम सब हँसें।
अम्हे अम्हइं	सयमो/सयामो/सयेमो	=	हम दोनों सोवें। हम सब सोवें।
अम्हे अम्हइं	णच्चमो/णच्चामो/णच्चेमो	=	हम दोनों नाचें। हम सब नाचें।
अम्हे अम्हइं	रूसमो/रूसामो/रूसेमो	=	हम दोनों रूसें। हम सब रूसें।
अम्हे अम्हइं	लुक्कमो/लुक्कामो/लुक्केमो	=	हम दोनों छिपें। हम सब छिपें।
अम्हे अम्हइं	जग्गमो/जग्गामो/जग्गेमो	=	हम दोनों जागें। हम सब जागें।
अम्हे अम्हइं	जीवमो/जीवामो/जीवेमो	=	हम दोनों जीवें। हम सब जीवें।

---

1. अम्हे
अम्हइं } = हम दोनों/हम सब, उत्तम पुरुष बहुवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2 विधि एवं आज्ञा के उत्तम पुरुष बहुवचन में **'मो'** प्रत्यय क्रिया में लगता है। **'मो'** प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'आ'** और **'ए'** भी हो जाता है।

3 उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

4 उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। इनमें कर्त्ता **अम्हे/अम्हइं** के अनुसार क्रियाओं के पुरुष और वचन हैं। यहाँ **अम्हे/अम्हइं** उत्तम पुरुष बहुवचन में है, तो क्रियाएँ भी उत्तम पुरुष बहुवचन में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 14

सर्वनाम

मध्यम पुरुष बहुवचन

तुम्हे / तुम्हइं } = तुम दोनों/तुम सब

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना,	**सय** = सोना,	**णच्च** = नाचना
रूस = रूसना,	**लुक्क** = छिपना,	**जग्ग** = जागना
जीव = जीना		

विधि एवं आज्ञा

तुम्हे / **तुम्हइं** }	हसह/हसेह	= तुम दोनों हँसो। / तुम सब हँसो।
तुम्हे / **तुम्हइं** }	सयह/सयेह	= तुम दोनों सोवो। / तुम सब सोवो।
तुम्हे / **तुम्हइं** }	णच्चह/णच्चेह	= तुम दोनों नाचो। / तुम सब नाचो।
तुम्हे / **तुम्हइं** }	रूसह/रूसेह	= तुम दोनों रूसो। / तुम सब रूसो।
तुम्हे / **तुम्हइं** }	लुक्कह/लुक्केह	= तुम दोनों छिपो। / तुम सब छिपो।
तुम्हे / **तुम्हइं** }	जग्गह/जग्गेह	= तुम दोनों जागो। / तुम सब जागो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुम्हे तुम्हइं	जीवह/जीवेह	=	तुम दोनों जीवो। तुम सब जीवो।

---

1. **तुम्हे / तुम्हइं** = तुम दोनों/तुम सब, मध्यम पुरुष बहुवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।
2. विधि एवं आज्ञा के मध्यम पुरुष बहुवचन में '**ह**' प्रत्यय क्रिया में लगता है। '**ह**' प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य '**अ**' का '**ए**' भी हो जाता है।
3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। इनमें कर्ता **तुम्हे/तुम्हइं** के अनुसार क्रियाओं के पुरुष और वचन हैं। यहाँ कर्ता **तुम्हे/तुम्हइं** मध्यम पुरुष बहुवचन में है तो क्रियाएँ भी मध्यम पुरुष बहुवचन में लगी हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 15

सर्वनाम

ते = वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष) **अन्य पुरुष बहुवचन**

ता = वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ)

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना,	**सय** = सोना,	**णच्च** = नाचना
रूस = रूसना,	**लुक्क** = छिपना,	**जग्ग** = जागना
जीव = जीना		

विधि एवं आज्ञा

ते	हसन्तु/हसेन्तु	=	वे दोनों हँसें। वे सब हँसें।
ता	हसन्तु/हसेन्तु	=	वे दोनों हँसें। वे सब हँसें।
ते	सयन्तु/सयेन्तु	=	वे दोनों सोवें। वे सब सोवें।
ता	सयन्तु/सयेन्तु	=	वे दोनों सोवें। वे सब सोवें।
ते	णच्चन्तु/णच्चेन्तु	=	वे दोनों नाचें। वे सब नाचें।
ता	णच्चन्तु/णच्चेन्तु	=	वे दोनों नाचें। वे सब नाचें।
ते	रूसन्तु/रूसेन्तु	=	वे दोनों रूसें। वे सब रूसें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता	रूसन्तु/रूसेन्तु	=	वे दोनों रूसें। वे सब रूसें।
ते	लुक्कन्तु/लुक्केन्तु	=	वे दोनों छिपें। वे सब छिपें।
ता	लुक्कन्तु/लुक्केन्तु	=	वे दोनों छिपें। वे सब छिपें।
ते	जग्गन्तु/जग्गेन्तु	=	वे दोनों जागें। वे सब जागें।
ता	जग्गन्तु/जग्गेन्तु	=	वे दोनों जागें। वे सब जागें।
ते	जीवन्तु/जीवेन्तु	=	वे दोनों जीवें। वे सब जीवें।
ता	जीवन्तु/जीवेन्तु	=	वे दोनों जीवें। वे सब जीवें।

---

1. **ते** = वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष) } अन्य पुरुष बहुवचन
   ता = वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ) } (पुरुषवाचक सर्वनाम)
2. विधि एवं आज्ञा के अन्य पुरुष बहुवचन में '**न्तु**' प्रत्यय क्रिया में लगता है। '**न्तु**' प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य '**अ**' का '**ए**' भी हो जाता है।
3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 16

सर्वनाम-बहुवचन

आकारान्त आदि क्रियाएँ

अम्हे, अम्हइं = हम दोनों/हम सब

तुम्हे, तुम्हइं = तुम दोनों/तुम सब

ते = वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)

ता = वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ)

अकर्मक क्रियाएँ

ठा = ठहरना, ण्हा = नहाना, हो = होना

विधि एवं आज्ञा

अम्हे, अम्हइं	ठामो	=	हम दोनों ठहरें। हम सब ठहरें।
अम्हे, अम्हइं	ण्हामो	=	हम दोनों नहावें। हम सब नहावें।
अम्हे, अम्हइं	होमो	=	हम दोनों होवें। हम सब होवें।
तुम्हे, तुम्हइं	ठाह	=	तुम दोनों ठहरो। तुम सब ठहरो।
तुम्हे, तुम्हइं	ण्हाह	=	तुम दोनों नहावो। तुम सब नहावो।
तुम्हे, तुम्हइं	होह	=	तुम दोनों होवो। तुम सब होवो।
ते	ठान्तु→ठन्तु	=	वे दोनों ठहरें। वे सब ठहरें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ता	ठान्त→ठन्तु	=	वे दानों ठहरें। वे सब ठहरें।
ते	ण्हान्तु→ण्हन्तु	=	वे दोनों नहावें। वे सब नहावें।
ता	ण्हान्तु→ण्हन्तु	=	वे दोनों नहावें। वे सब नहावें।
ते	होन्तु	=	वे दोनों होवें। वे सब होवें।
ता	होन्तु	=	वे दोनों होवें। वे सब होवें।

---

1. **अम्हे**, **अम्हइं** = हम दोनों/हम सब, उत्तम पुरुष बहुवचन, } पुरुषवाचक सर्वनाम बहुवचन

   तुम्हे, **तुम्हइं** = तुम दोनों/तुम सब, मध्यम पुरुष बहुवचन, } पुरुषवाचक सर्वनाम बहुवचन

   ते = वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष) } अन्य पुरुष बहुवचन

   ता = वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ) } अन्य पुरुष बहुवचन

2. **विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय (पाठ 9 से 16 तक)**

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मु	मो
मध्यम पुरुष	इ, ए, उ, 0 हि, सु	ह
अन्य पुरुष	उ	न्तु

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। इनमें कर्ता के अनुसार क्रियाओं के पुरुष और वचन हैं।
5. संयुक्ताक्षर से पहले यदि दीर्घ स्वर हो तो वह ह्रस्व हो जाता है।
   जैसे - ठान्ति→ठन्ति, ण्हान्ति→ण्हन्ति आदि। अपभ्रंश में '**आ**', '**ई**' और '**ऊ**' दीर्घ स्वर होते हैं तथा '**अ**', '**इ**', '**उ**', '**ए**' और '**ओ**' ह्रस्व स्वर माने जाते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 17

अकर्मक क्रियाएँ

अभ्यास

1. निम्नलिखित अकर्मक क्रियाओं को कर्तृवाच्य में प्रयोग कीजिये। यह प्रयोग वर्तमानकाल तथा विधि एवं आज्ञा में हो। कर्ता के रूप में पुरुषवाचक सर्वनामों को रखें -

लज्ज	= शरमाना,	**भिड**	= भिड़ना
रुव	= रोना,	**उच्छल**	= उछलना
डर	= डरना,	**उज्जम**	= प्रयास करना
कलह	= कलह करना,	**उल्लस**	= खुश होना
थक्क	= थकना,	**कंप**	= काँपना
अच्छ	= बैठना,	**मर**	= मरना
पड	= गिरना,	**खेल**	= खेलना
उट्ठ	= उठना,	**कुल्ल**	= कूदना
तडफड	= छटपटाना,	**जुज्झ**	= लड़ना
घुम	= घूमना,	**मुच्छ**	= मूर्च्छित होना

2. निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिये -

(1) हम छिपते हैं। (2) हम छिपें। (3) वह डरता है। (4) वह डरे। (5) तुम उठते हो। (6) वे सब उठें। (7) मैं खेलता हूँ। (8) तुम सब खेलो। (9) वह खुश होती है। (10) वे खुश हों। (11) वह बैठता है। (12) वह बैठे। (13) तुम बैठो। (14) वे रोते हैं। (15) हम उछलते हैं। (16) मैं भिड़ता हूँ। (17) तुम छटपटाते हो। (18) तुम कूदो।(19) हम प्रयास करें। (20) तुम घूमो। (21) हम काँपते हैं। (22) तुम काँपो। (23) वह लड़े। (24) वे लड़ें। (25) तुम नहाते हो। (26) तुम नहावो। (27) वे ठहरें। (28) तुम थको। (29) तुम सब मूर्च्छित होते हो। (30) हम ठहरते हैं। (31) वे सब खेलती हैं। (32) मैं खेलती हूँ। (33) तुम उठती हो। (34) वह काँपती है। (35) हम बैठती हैं।

3. निम्नलिखित वर्तमानकालिक वाक्यों को शुद्ध कीजिये (क्रिया का शुद्ध रूप लगाइये)-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(1) हउं रूसहिं। (2) तुहुं हसउं। (3) सो ठामि।
(4) अम्हे हसह। (5) तुम्हे हसहिं। (6) ते ठामो।
(7) ता ठाइ। (8) तुम्हइं थक्कहि। (9) ते मरइ।
(10) हउं लज्जमो। (11) तुहुं पडित्था। (12) सो खेलन्ति।
(13) अम्हइं उट्ठसे। (14) सा घुमन्ति। (15) तुहुं ठाइ।

4. निम्नलिखित वर्तमानकालिक वाक्यों को शुद्ध कीजिये (पुरुषवाचक सर्वनाम का शुद्ध रूप लिखें) -

(1) हउं लज्जहुं। (2) अम्हे रुवउं। (3) तुम्हे रूवमि।
(4) सो डरहु। (5) ता पडमो। (6) तुम्हइं उट्ठइ।
(7) अम्हइं उच्छलहि। (8) हउं कंपित्था। (9) तुहुं मरन्ते।
(10) तुम्हे मरइ। (11) तुम्हे ठासि। (12) हउं कुल्लहिं।
(13) तुम्हे ण्हामु। (14) अम्हे होहु। (15) तुहुं मुच्छेइ।

5. निम्नलिखित विधि एवं आज्ञावाचक वाक्यों को शुद्ध कीजिये (क्रिया का शुद्ध रूप लगाइये) -

(1) हउं पडउ। (2) तुहुं रुवमो। (3) सो थक्कि।
(4) अम्हे हसह। (5) तुम्हइं डरन्तु। (6) अम्हइं कंपह।
(7) सा घुमि। (8) ता खेलमो। (9) ते मरहि।
(10) हउं उल्लस। (11) तुहुं कुल्लेइ। (12) तुम्हे मुच्छसु।
(13) ते भिडउ। (14) अम्हइं जुज्झेन्तु। (15) तुम्हइं ठामो।

6. निम्नलिखित विधि एवं आज्ञावाचक वाक्यों को शुद्ध कीजिये (पुरुषवाचक सर्वनाम का शुद्ध रूप लिखें) -

(1) हउं लज्जमो। (2) तुहुं रूवउ। (3) अम्हे हसेह।
(4) तुम्हे डरामो। (5) तुम्हइं लुक्केमो। (6) ते अच्छउ।
(7) सो उट्ठह। (8) ता होह। (9) अम्हइं ठन्तु।
(10) तुम्हे हस। (11) अम्हे पडसु। (12) सो होउ।
(13) ते होमो। (14) हउं लुक्कि। (15) हउं तडफड।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 18

सर्वनाम

हउं = मैं — **उत्तम पुरुष एकवचन**

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना, **सय** = सोना, **णच्च** = नाचना
रूस = रूसना, **लुक्क** = छिपना, **जग्ग** = जागना
जीव = जीना

भविष्यत्काल

हउं	हसेसउं/हसेसमि/हसिहिउं/हसिहिमि	= मैं हँसूँगा/मैं हँसूँगी।
हउं	सयेसउं/सयेसमि/सयिहिउं/सयिहिमि	= मैं सोवूँगा/मैं सोवूँगी।
हउं	णच्चेसउं/णच्चेसमि/णच्चिहिउं/णच्चिहिमि	= मैं नाचूँगा/मैं नाचूँगी।
हउं	रूसेसउं/रूसेसमि/रूसिहिउं/रूसिहिमि	= मैं रूसूँगा/मैं रूसूँगी।
हउं	लुक्केसउं/लुक्केसमि/लुक्किहिउं/लुक्किहिमि	= मैं छिपूँगा/मैं छिपूँगी।
हउं	जग्गेसउं/जग्गेसमि/जग्गिहिउं/जग्गिहिमि	= मैं जागूँगा/मैं जागूँगी।
हउं	जीवेसउं/जीवेसमि/जीविहिउं/जीविहिमि	= मैं जीवूँगा/मैं जीवूँगी।

---

1. **हउं** = मैं, उत्तम पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।
2. भविष्यत्काल के उत्तम पुरुष एकवचन में '**स**' और '**हि**' प्रत्यय क्रिया में जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष एकवचन के प्रत्यय '**उं**' और '**मि**' जोड़ दिये जाते हैं। '**स**' प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य '**अ**' का '**ए**' हो जाता है और '**हि**' प्रत्यय जोड़ने पर क्रिया के अन्त्य '**अ**' का '**इ**' हो जाता है। भविष्यत्काल बनाने के लिये वर्तमानकालिक प्रत्ययों का प्रयोग उपर्युक्त प्रकार से किया जाता है।
3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। इनमें कर्ता '**हउं**' के अनुसार क्रियाओं के **पुरुष** और **वचन** हैं। यहाँ '**हउं**' उत्तम पुरुष एकवचन में है, तो क्रियाएँ भी उत्तम पुरुष एकवचन में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 19

सर्वनाम

तुहुं = तुम **मध्यम पुरुष एकवचन**

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना,	**सय** = सोना,	**णच्च** = नाचना
रूस = रूसना,	**लुक्क** = छिपना,	**जग्ग** = जागना
जीव = जीना		

भविष्यत्काल

तुहुं	हसेसहि/हसेससि/हसिहिहि/हसिहिसि	= तुम हँसोगे।
तुहुं	सयेसहि/सयेससि/सयिहिहि/सयिहिसि	= तुम सोवोगे।
तुहुं	णच्चेसहि/णच्चेससि/णच्चिहिहि/णच्चिहिसि	= तुम नाचोगे।
तुहुं	रूसेसहि/रूसेससि/रूसिहिहि/रूसिहिसि	= तुम रूसोगे।
तुहुं	लुक्केसहि/लुक्केससि/लुक्किहिहि/लुक्किहिसि	= तुम छिपोगे।
तुहुं	जग्गेसहि/जग्गेससि/जग्गिहिहि/जग्गिहिसि	= तुम जागोगे।
तुहुं	जीवेसहि/जीवेससि/जीविहिहि/जीविहिसि	= तुम जीवोगे।

---

1. तुहुं = तुम, मध्यम पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।
2. भविष्यत्काल के मध्यम पुरुष एकवचन में **'स'** और **'हि'** प्रत्यय क्रिया में जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के मध्यम पुरुष एकवचन के प्रत्यय **'हि'** और **'सि'** जोड़ दिये जाते हैं। **'से'** प्रत्यय जोड़कर भी रूप बना लेने चाहिये (हसेससे, हसिहिसे)। **'स'** प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'ए'** हो जाता है और **'हि'** प्रत्यय जोड़ने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** हो जाता है। भविष्यत्काल बनाने के लिये वर्तमानकालिक प्रत्ययों का प्रयोग उपर्युक्त प्रकार से किया जाता है।
3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 20

सर्वनाम

सो = वह (पुरुष),

सा = वह (स्त्री),

अन्य पुरुष एकवचन

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना,	**सय** = सोना,	**णच्च** = नाचना
रूस = रूसना,	**लुक्क** = छिपना,	**जग्ग** = जागना
जीव = जीना		

भविष्यत्काल

सो	हसेसइ/हसेसए/हसिहिइ/हसिहिए	= वह हँसेगा।
सा	हसेसइ/हसेसए/हसिहिइ/हसिहिए	= वह हँसेगी।
सो	सयेसइ/सयेसए/सयिहिइ/सयिहिए	= वह सोवेगा।
सा	सयेसइ/सयेसए/सयिहिइ/सयिहिए	= वह सोवेगी।
सो	णच्चेसइ/णच्चेसए/णच्चिहिइ/णच्चिहिए	= वह नाचेगा।
सा	णच्चेसइ/णच्चेसए/णच्चिहिइ/णच्चिहिए	= वह नाचेगी।
सो	रूसेसइ/रूसेसए/रूसिहिइ/रूसिहिए	= वह रूसेगा।
सा	रूसेसइ/रूसेसए/रूसिहिइ/रूसिहिए	= वह रूसेगी।
सो	लुक्केसइ/लुक्केसए/लुक्किहिइ/लुक्किहिए	= वह छिपेगा।
सा	लुक्केसइ/लुक्केसए/लुक्किहिइ/लुक्किहिए	= वह छिपेगी।
सो	जग्गेसइ/जग्गेसए/जग्गिहिइ/जग्गिहिए	= वह जागेगा।
सा	जग्गेसइ/जग्गेसए/जग्गिहिइ/जग्गिहिए	= वह जागेगी।
सो	जीवेसइ/जीवेसए/जीविहिइ/जीविहिए	= वह जीवेगा।
सा	जीवेसइ/जीवेसए/जीविहिइ/जीविहिए	= वह जीवेगी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1. सो = वह (पुरुष), सा = वह (स्त्री), अन्य पुरुष एकवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।

2. भविष्यत्काल के अन्य पुरुष एकवचन में 'स' और 'हि' प्रत्यय क्रिया में जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के अन्य पुरुष एकवचन के 'इ' और 'ए' प्रत्यय क्रिया में लगते हैं। 'स' प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य 'अ' का 'ए' हो जाता है और 'हि' प्रत्यय जोड़ने पर क्रिया के अन्त्य 'अ' का 'इ' हो जाता है। भविष्यत्काल बनाने के लिये वर्तमानकालिक प्रत्ययों का प्रयोग उपर्युक्त प्रकार से किया जाता है।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 21

सर्वनाम-एकवचन

आकारान्त आदि क्रियाएँ

हउं = मैं, **सो** = वह (पुरुष),

तुहुं = तुम **सा** = वह (स्त्री),

अकर्मक क्रियाएँ

ठा = ठहरना, **ण्हा** = नहाना, **हो** = होना

भविष्यत्काल

हउं	ठासउं/ठासमि/ठाहिउं/ठाहिमि	= मैं ठहरूँगा/मैं ठहरूँगी।
हउं	ण्हासउं/ण्हासमि/ण्हाहिउं/ण्हाहिमि	= मैं नहाऊँगा/मैं नहाऊँगी।
हउं	होसउं/होसमि/होहिउं/होहिमि	= मैं होवूँगा/मैं होवूँगी।
तुहुं	ठासहि/ठाससि/ठाहिहि/ठाहिसि	= तुम ठहरोगे/तुम ठहरोगी।
तुहुं	ण्हासहि/ण्हाससि/ण्हाहिहि/ण्हाहिसि	= तुम नहावोगे/तुम नहावोगी।
तुहुं	होसहि/होससि/होहिहि/होहिसि	= तुम होवोगे/तुम होवोगी।
सो	ठासइ/ठाहिइ	= वह ठहरेगा।
सा	ठासइ/ठाहिइ	= वह ठहरेगी।
सो	ण्हासइ/ण्हाहिइ	= वह नहावेगा।
सा	ण्हासइ/ण्हाहिइ	= वह नहावेगी।
सो	होसइ/होहिइ	= वह होगा।
सा	होसइ/होहिइ	= वह होगी।

---

1. हउं = मैं, उत्तम पुरुष एकवचन
   तुहुं = तुम, मध्यमपुरुष एकवचन
   सो = वह (पुरुष) } अन्य पुरुष एकवचन
   सा = वह (स्त्री) }
   } पुरुष वाचक सर्वनाम एकवचन
2. भविष्यत्काल के तीनों पुरुषों के एकवचन में **'स'** और **'हि'** प्रत्यय क्रिया में जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के प्रत्यय उपर्युक्त प्रकार से जोड़ दिये जाते हैं।
3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 22

सर्वनाम

अम्हे
अम्हइं } = हम दोनों/हम सब

उत्तम पुरुष बहुवचन

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना, **सय** = सोना, **णच्च** = नाचना
रूस = रूसना, **लुक्क** = छिपना, **जग्ग** = जागना
जीव = जीना

भविष्यत्काल

अम्हे **अम्हइं**	हसेसहुं/हसेसमो/हसेसमु/हसेसम/ हसिहिहुं/हसिहिमो/हसिहिमु/हसिहिम	=	हम दोनों हँसेंगे/हँसेंगी। हम सब हँसेंगे/हँसेंगी।
अम्हे **अम्हइं**	सयेसहुं/सयेसमो/सयेसमु/सयेसम/ सयिहिहुं/सयिहिमो/सयिहिमु/सयिहिम	=	हम दोनों सोयेंगे/सोयेंगी। हम सब सोयेंगे/सोयेंगी।
अम्हे **अम्हइं**	णच्चेसहुं/णच्चेसमो/णच्चेसमु/ णच्चेसम /	=	हम दोनों नाचेंगे/नाचेंगी।
	णच्चिहिहुं/णच्चिहिमो/णच्चिहिमु/ णच्चिहिम/	=	हम सब नाचेंगे/नाचेंगी।
अम्हे **अम्हइं**	रूसेसहुं/रूसेसमो/रूसेसमु/रूसेसम रूसिहिहुं/रूसिहिमो/रूसिहिमु/रूसिहिम	=	हम दोनों रूसेंगे/रूसेंगी। हम सब रूसेंगे/रूसेंगी।
अम्हे **अम्हइं**	लुक्केसहुं/लुक्केसमो/लुक्केसमु/ लुक्केसम/	=	हम दोनों छिपेंगे/छिपेंगी।
	लुक्किहिहुं/लुक्किहिमो/लुक्किहिमु/ लुक्किहिम	=	हम सब छिपेंगे/छिपेंगी।
अम्हे **अम्हइं**	जग्गेसहुं/जग्गेसमो/जग्गेसमु/जग्गेसम जग्गिहिहुं/जग्गिहिमो/जग्गिहिमु/जग्गिहिम	=	हम दोनों जागेंगे/जागेंगी। हम सब जागेंगे/जागेंगी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अम्हे } जीवेसहुं/जीवेसमो/जीवेसमु/जीवेसम = हम दोनों जीवेंगे/जीवेंगी।
अम्हइं } जीविहिहुं/जीविहिमो/जीविहिमु/जीविहिम = हम सब जीवेंगे/जीवेंगी।

1. **अम्हे** } = हम दोनों/हम सब, उत्तम पुरुष बहुवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।
   अम्हइं }

2. भविष्यत्काल के उत्तम पुरुष बहुवचन में 'स' और '**हि**' प्रत्यय क्रिया में जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के उत्तम पुरुष बहुवचन के '**हुं**', '**मो**', '**मु**' और '**म**' प्रत्यय क्रिया में लगते हैं। '**स**' प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य '**अ**' का 'ए' हो जाता है और '**हि**' प्रत्यय जोड़ने पर क्रिया के अन्त्य '**अ**' का '**इ**' हो जाता है। भविष्यत्काल बनाने के लिये वर्तमानकालिक प्रत्ययों का प्रयोग उपर्युक्त प्रकार से किया जाता है।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। यहाँ कर्त्ता **अम्हे/अम्हइं** उत्तम पुरुष बहुवचन में है, तो क्रिया भी उत्तम पुरुष बहुवचन की लगी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 23

सर्वनाम

तुम्हे
तुम्हइं } = तुम दोनों/तुम सब

मध्यम पुरुष बहुवचन

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना, **सय** = सोना, **णच्च** = नाचना
रूस = रूसना, **लुक्क** = छिपना, **जग्ग** = जागना
जीव = जीना

भविष्यत्काल

तुम्हे	हसेसहु/हसेसह/हसेसइत्था/	=	तुम दोनों हँसोगे/हँसोगी।
तुम्हइं	हसिहिहु/हसिहिह/हसिहित्था		तुम सब हँसोगे/हँसोगी।
तुम्हे	सयेसहु/सयेसह/सयेसइत्था/	=	तुम दोनों सोवोगे/सोवोगी।
तुम्हइं	सयिहिहु/सयिहिह/सयिहित्था		तुम सब सोवोगे/सोवोगी।
तुम्हे	णच्चेसहु/णच्चेसह/णच्चेसइत्था/	=	तुम दोनों नाचोगे/नाचोगी।
तुम्हइं	णच्चिहिहु/णच्चिहिह/णच्चिहित्था		तुम सब नाचोगे/नाचोगी।
तुम्हे	रूसेसहु/रूसेसह/रूसेसइत्था/	=	तुम दोनों रूसोगे/रूसोगी।
तुम्हइं	रूसिहिहु/रूसिहिह/रूसिहित्था		तुम सब रूसोगे/रूसोगी।
तुम्हे	लुक्केसहु/लुक्केसह/लुक्केसइत्था/	=	तुम दोनों छिपोगे/छिपोगी।
तुम्हइं	लुक्किहिहु/लुक्किहिह/लुक्किहित्था		तुम सब छिपोगे/छिपोगी।
तुम्हे	जग्गेसहु/जग्गेसह/जग्गेसइत्था/	=	तुम दोनों जागोगे/जागोगी।
तुम्हइं	जग्गिहिहु/जग्गिहिह/जग्गिहित्था		तुम सब जागोगे/जागोगी।
तुम्हे	जीवेसहु/जीवेसह/जीवेसइत्था/	=	तुम दोनों जीवोगे/जीवोगी।
तुम्हइं	जीविहिहु/जीविहिह/जीविहित्था		तुम सब जीवोगे/जीवोगी।

---

1. **तुम्हे**
तुम्हइं } = तुम दोनों/तुम सब, मध्यम पुरुष बहुवचन (पुरुषवाचक सर्वनाम)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

2. भविष्यत्काल के मध्यम पुरुष बहुवचन में 'स' और 'हि' प्रत्यय क्रिया में जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के मध्यम पुरुष बहुवचन के 'हु', 'ह' और 'इत्था' प्रत्यय क्रिया में लगते हैं। 'स' प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य 'अ' का 'ए' हो जाता है और 'हि' प्रत्यय जोड़ने पर क्रिया के अन्त्य 'अ' का 'इ' हो जाता है। इत्था प्रत्यय के योग में **स+इत्था = सइत्था, हि+इत्था = हित्था** रूप बनते हैं। भविष्यत्काल बनाने के लिये वर्तमानकालिक प्रत्ययों का प्रयोग उपर्युक्त प्रकार से किया जाता है।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। यहाँ कर्त्ता **तुम्हे/तुम्हइं** मध्यम पुरुष बहुवचन में हैं, तो क्रिया भी मध्यम पुरुष बहुवचन की लगी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 24

सर्वनाम

ते = वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष) **अन्य पुरुष बहुवचन**

ता = वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ)

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना,	**सय** = सोना,	**णच्च** = नाचना
रूस = रूसना,	**लुक्क** = छिपना,	**जग्ग** = जागना
जीव = जीना		

भविष्यत्काल

ते	हसेसहिं/हसेसन्ति/हसेसन्ते/हसेसइरे	= वे दोनों हँसेंगे।
	हसिहिहिं/हसिहिन्ति/हसिहिन्ते/हसिहिइरे	वे सब हँसेंगे।
ता	हसेसहिं/हसेसन्ति/हसेसन्ते/हसेसइरे	= वे दोनों हँसेंगी।
	हसिहिहिं/हसिहिन्ति/हसिहिन्ते/हसिहिइरे	वे सब हँसेंगी।
ते	सयेसहिं/सयेसन्ति/सयेसन्ते/सयेसइरे	= वे दोनों सोयेंगे।
	सयिहिहिं/सयिहिन्ति/सयिहिन्ते/सयिहिइरे	वे सब सोयेंगे।
ता	सयेसहिं/सयेसन्ति/सयेसन्ते/सयेसइरे	= वे दोनों सोयेंगी।
	सयिहिहिं/सयिहिन्ति/सयिहिन्ते/सयिहिइरे	वे सब सोयेंगी।
ते	णच्चेसहिं/णच्चेसन्ति/णच्चेसन्ते/णच्चेसइरे	= वे दोनों नाचेंगे।
	णच्चिहिहिं/णच्चिहिन्ति/णच्चिहिन्ते/णच्चिहिइरे	वे सब नाचेंगे।
ता	णच्चेसहिं/णच्चेसन्ति/णच्चेसन्ते/णच्चेसइरे	= वे दोनों नाचेंगी।
	णच्चिहिहिं/णच्चिहिन्ति/णच्चिहिन्ते/णच्चिहिइरे	वे सब नाचेंगी।
ते	रूसेसहिं/रूसेसन्ति/रूसेसन्ते/रूसेसइरे	= वे दोनों रूसेंगे।
	रूसिहिहिं/रूसिहिन्ति/रूसिहिन्ते/रूसिहिइरे	वे सब रूसेंगे।
ता	रूसेसहिं/रूसेसन्ति/रूसेसन्ते/रूसेसइरे	= वे दोनों रूसेंगी।
	रूसिहिहिं/रूसिहिन्ति/रूसिहिन्ते/रूसिहिइरे	वे सब रूसेंगी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते	लुक्केसहिं/लुक्केसन्ति/लुक्केसन्ते/लुक्केसइरे	= वे दोनों छिपेंगे।
	लुक्किहिहिं/लुक्किहिन्ति/लुक्किहिन्ते/लुक्किहिइरे	वे सब छिपेंगे।
ता	लुक्केसहिं/लुक्केसन्ति/लुक्केसन्ते/लुक्केसइरे	= वे दोनों छिपेंगी।
	लुक्किहिहिं/लुक्किहिन्ति/लुक्किहिन्ते/लुक्किहिइरे	वे सब छिपेंगी।
ते	जग्गेसहिं/जग्गेसन्ति/जग्गेसन्ते/जग्गेसइरे	= वे दोनों जागेंगे।
	जग्गिहिहिं/जग्गिहिन्ति/जग्गिहिन्ते/जग्गिहिइरे	वे सब जागेंगे।
ता	जग्गेसहिं/जग्गेसन्ति/जग्गेसन्ते/जग्गेसइरे	= वे दोनों जागेंगी।
	जग्गिहिहिं/जग्गिहिन्ति/जग्गिहिन्ते/जग्गिहिइरे	वे सब जागेंगी।
ते	जीवेसहिं/जीवेसन्ति/जीवेसन्ते/जीवेसइरे	= वे दोनों जीवेंगे।
	जीविहिहिं/जीविहिन्ति/जीविहिन्ते/जीविहिइरे	वे सब जीवेंगे।
ता	जीवेसहिं/जीवेसन्ति/जीवेसन्ते/जीवेसइरे	= वे दोनों जीवेंगी।
	जीविहिहिं/जीविहिन्ति/जीविहिन्ते/जीविहिइरे	वे सब जीवेंगी।

---

1. **ते** = वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष) } अन्य पुरुष बहुवचन
   ता = वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ) } (पुरुषवाचक सर्वनाम)
2. भविष्यत्काल के अन्य पुरुष बहुवचन में **'स'** और **'हि'** प्रत्यय क्रिया में जोड़ने के पश्चात् वर्तमानकाल के अन्य पुरुष बहुवचन के **'हिं'**, **'न्ति'** (**'न्ते'** और **'इरे'**) प्रत्यय क्रिया में लगते हैं। **'स'** प्रत्यय लगने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'ए'** हो जाता है और **'हि'** प्रत्यय जोड़ने पर क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** हो जाता है। भविष्यत्काल बनाने के लिये वर्तमानकालिक प्रत्ययों का प्रयोग उपर्युक्त प्रकार से किया जाता है।
3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। यहाँ कर्ता **ते/ता** अन्य पुरुष बहुवचन में है, अत: क्रिया भी अन्य पुरुष बहुवचन की लगी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 25

सर्वनाम-बहुवचन

आकारान्त आदि क्रियाएँ

अम्हे, अम्हइं = हम दोनों/हम सब

तुम्हे, तुम्हइं = तुम दोनों/तुम सब

ते = वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष)

ता = वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ)

अकर्मक क्रियाएँ

ठा = ठहरना, **ण्हा** = नहाना, **हो** = होना

भविष्यत्काल

अम्हे, अम्हइं	ठासहुं/ठासमो/ठासमु/ठासम ठाहिहुं/ठाहिमो/ठाहिमु/ठाहिम	= हम दोनों ठहरेंगे/ठहरेंगी। हम सब ठहरेंगे/ठहरेंगी।
अम्हे, अम्हइं	ण्हासहुं/ण्हासमो/ण्हासमु/ण्हासम ण्हाहिहुं/ण्हाहिमो/ण्हाहिमु/ण्हाहिम	= हम दोनों नहावेंगे/नहावेंगी। हम सब नहावेंगे/नहावेंगी।
अम्हे, अम्हइं	होसहुं/होसमो/होसमु/होसम होहिहुं/होहिमो/होहिमु/होहिम	= हम दोनों होंगे/होंगी। हम सब होंगे/होंगी।
तुम्हे, तुम्हइं	ठासहु/ठासह/ठासइत्था ठाहिहु/ठाहिह/ठाहित्था	= तुम दोनों ठहरोगे/ठहरोगी। तुम सब ठहरोगे/ठहरोगी।
तुम्हे, तुम्हइं	ण्हासहु/ण्हासह/ण्हासइत्था ण्हाहिहु/ण्हाहिह/ण्हाहित्था	= तुम दोनों नहावोगे/नहावोगी। तुम सब नहावोगे/नहावोगी।
तुम्हे, तुम्हइं	होसहु/होसह/होसइत्था होहिहु/होहिह/होहित्था	= तुम दोनों होंगे/होंगी। तुम सब होंगे/होंगी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ते	ठासहिं/ठासन्ति/ठासन्ते/ठासइरे ठाहिहिं/ठाहिन्ति/ठाहिन्ते/ठाहिइरे	=	वे दोनों ठहरेंगे। वे सब ठहरेंगे।
ता	ठासहिं/ठासन्ति/ठासन्ते/ठासइरे ठाहिहिं/ठाहिन्ति/ठाहिन्ते/ठाहिइरे	=	वे दोनों ठहरेंगी। वे सब ठहरेंगी।
ते	ण्हासहिं/ण्हासन्ति/ण्हासन्ते/ण्हासइरे ण्हाहिहिं/ण्हाहिन्ति/ण्हाहिन्ते/ण्हाहिइरे	=	वे दोनों नहावेंगे। वे सब नहावेंगे।
ता	ण्हासहिं/ण्हासन्ति/ण्हासन्ते/ण्हासइरे ण्हाहिहिं/ण्हाहिन्ति/ण्हाहिन्ते/ण्हाहिइरे	=	वे दोनों नहावेंगी। वे सब नहावेंगी।
ते	होसहिं/होसन्ति/होसन्ते/होसइरे होहिहिं/होहिन्ति/होहिन्ते/होहिइरे	=	वे दोनों होंगे। वे सब होंगे।
ता	होसहिं/होसन्ति/होसन्ते/होसइरे होहिहिं/होहिन्ति/होहिन्ते/होहिइरे	=	वे दोनों होंगी। वे सब होंगी।

---

1. **अम्हे / अम्हइं** } = हम दोनों/हम सब, उत्तम पुरुष बहुवचन,
   तुम्हे / तुम्हइं } = तुम दोनों/तुम सब, **मध्यम पुरुष बहुवचन,**
   ते = वे दोनों (पुरुष)/वे सब (पुरुष) }
   ता = वे दोनों (स्त्रियाँ)/वे सब (स्त्रियाँ) } अन्य पुरुष बहुवचन

   } पुरुषवाचक सर्वनाम बहुवचन

2. **भविष्यत्काल के प्रत्यय** (पाठ 17 से 25 तक)

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	सउं, हिउं	सहुं, हिहुं
	समि, हिमि	समो, हिमो
		समु, हिमु
		सम, हिम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मध्यम पुरुष	सहि, हिहि	सहु, हिहु
	ससि, हिसि	सह, हिह
	ससे, हिसे	सइत्था, हित्था (हि+इत्था)
अन्य पुरुष	सइ, हिइ	सहिं, हिहिं
	सए, हिए	सन्ति, हिन्ति
		सन्ते, हिन्ते
		सइरे, हिइरे

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। इनमें कर्ता के अनुसार क्रियाओं के पुरुष और वचन हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 26

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिये -

(1) हम शरमायेंगे। (2) तुम रोवोगे। (3) हम सब उछलेंगे। (4) मैं खेलूँगा। (5) वह कूदेगा। (6) वे लड़ेंगे। (7) तुम सब मूर्च्छित होवोगे। (8) हम दोनों घूमेंगे। (9) तुम दोनों बैठोगे। (10) हम उठेंगे। (11) वे छटपटाएँगे। (12) तुम थकोगे। (13) वह खुश होगा। (14) हम सब प्रयास करेंगे। (15) तुम मरोगे। (16) तुम दोनों कलह करोगे। (17) वह रोवेगा। (18) मैं गिरूँगा। (19) वह उठेगी। (20) तुम खेलोगी। (21) हम सब भिड़ेंगे। (22) हम छटपटाएँगे। (23) तुम सब कूदोगे। (24) वे घूमेंगे। (25) तुम सब उछलोगे। (26) हम डरेंगे। (27) वे खुश होंगे।

2. निम्नलिखित वाक्यों की भी अपभ्रंश में रचना कीजिये -

(1) मैं काँपता हूँ। (2) तुम लड़ो। (3) वह थकेगा। (4) हम सब डरते हैं। (5) मैं कूदूँ। (6) तुम दोनों उछलोगे। (7) तुम गिरते हो। (8) वह भिड़े। (9) मैं उठूँगा। (10) तुम प्रयास करते हो। (11) वे बैठें। (12) हम खुश होंगे। (13) मैं रोता हूँ। (14) तुम उठो। (15) वे मरेंगी। (16) वह कूदता है। (17) हम उछलें। (18) मैं घूमूँगा। (19) वे थकते हैं। (20) हम खेलें। (21) वह काँपेगी। (22) वह डरती है। (23) वह लड़े। (24) वे शरमायेंगी। (25) वे उठती हैं। (26) तुम दोनों प्रयास करो। (27) तुम सब कूदोगे।

3. निम्नलिखित वाक्यों में रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये (सर्वनाम लिखिये) -

(1) ..... थक्कमि। (2) ..... डरहुं। (3) ..... पडमो। (4) .....उट्ठि।

(5) ..... कलहहि। (6) .....घुमह। (7) ..... अच्छे। (8) ..... मुच्छ। (9) ..... भिडमु। (10) ..... कुल्लउ। (11) ..... जुज्झउं। (12) ..... उज्जमन्तु। (13) ..... कंपसि। (14) ..... उल्लसेइ। (15) ..... उच्छलहु। (16) ..... हरसेसमि। (17) ..... उट्ठेसहुं। (18) ..... कुल्लेसहु। (19) ..... मरेसहिं। (20) ..... मरेसन्ति। (21) ..... खेलिहिसि। (22) ..... लज्जिहिउं। (23) ..... रुविहिह।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(24) ..... जुज्झेसमि। (25) ..... लज्जेसइत्था। (26) ..... मरिहिमो।

(27) ..... मरिहिमु। (28) ..... कंपिहिन्ति। (29) ..... मुच्छिहिन्ति।

(30) ..... उल्लसउं।

4. निम्नलिखित वाक्यों में निर्देशानुसार रिक्त स्थानों की पूर्ति कीजिये -

(1) हउं ..... (कुल्ल-वर्तमानकाल में)।

(2) अम्हे ..... (खेल-भविष्यत्काल में)।

(3) अम्हइं ..... (जुज्झ-वर्तमानकाल में)।

(4) तुम्हे ..... (उट्ठ-विधि एवं आज्ञा में)।

(5) तुहुं ..... (अच्छ-भविष्यत्काल में)।

(6) ते ..... (मुच्छ-वर्तमानकाल में)।

(7) सो ..... (रुव-विधि एवं आज्ञा में)।

(8) ता ..... (डर-विधि एवं आज्ञा में)।

(9) तुहुं ..... (उल्लस-विधि एवं आज्ञा में)।

(10) सा ..... (लज्ज-भविष्यत्काल में)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 27

सम्बन्धक भूत कृदन्त (पूर्वकालिक क्रिया)

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना, **णच्च** = नाचना, **लुक्क** = छिपना

संबन्धक भूत कृदन्त के प्रत्यय	हस	णच्च	लुक्क
इ	**हसि** = हँसकर	**णच्चि** = नाचकर	**लुक्कि** = छिपकर
इउ	**हसिउ** = हँसकर	**णच्चिउ** = नाचकर	**लुक्किउ** = छिपकर
इवि	**हसिवि** = हँसकर	**णच्चिवि** = नाचकर	**लुक्किवि** = छिपकर
अवि	**हसवि** = हँसकर	**णच्चवि** = नाचकर	**लुक्कवि** = छिपकर
एप्पि	**हसेप्पि** = हँसकर	**णच्चेप्पि** = नाचकर	**लुक्केप्पि** = छिपकर
एप्पिणु	**हसेप्पिणु** = हँसकर	**णच्चेप्पिणु** = नाचकर	**लुक्केप्पिणु** = छिपकर
एवि	**हसेवि** = हँसकर	**णच्चेवि** = नाचकर	**लुक्केवि** = छिपकर
एविणु	**हसेविणु** = हँसकर	**णच्चेविणु** = नाचकर	**लुक्केविणु** = छिपकर

वाक्यों में प्रयोग

हउं **हसि/हसिउ/हसिवि/हसवि/हसेप्पि/ हसेप्पिणु/हसेवि/हसेविणु** जीवउं = मैं हँसकर जीता हूँ।

हउं **हसि/हसिउ/हसिवि/हसवि/हसेप्पि/ हसेप्पिणु/हसेवि/हसेविणु** जीवमु = मैं हँसकर जीवूँ।

हउं **हसि/हसिउ/हसिवि/हसवि/हसेप्पि/ हसेप्पिणु/हसेवि/हसेविणु** जीवेसउं = मैं हँसकर जीवूँगा।

तुहुं **णच्चि/णच्चिउ/णच्चिवि/णच्चवि/णच्चेप्पि/ णच्चेप्पिणु/णच्चेवि/णच्चेविणु** थक्कहि = तुम नाचकर थकते हो।

तुहुं **णच्चि/णच्चिउ/णच्चिवि/णच्चवि/णच्चेप्पि/ णच्चेप्पिणु/णच्चेवि/णच्चेविणु** थक्केहि = तुम नाचकर थको।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुहुं **णच्चि/णच्चिउ/णच्चिवि/णच्चवि/णच्चेप्पि/**
णच्चेप्पिणु/णच्चेवि/णच्चेविणु थक्केसहि = तुम नाचकर थकोगे।

इसी प्रकार अन्य पुरुषवाचक सर्वनामों के साथ वाक्य बना लेने चाहिये।

निम्नलिखित वाक्यों में संबन्धक भूत कृदन्तों के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिये -

(1) वह रोकर सोता है। (2) वह शरमाकर उठती है।

(3) वे गिरकर उठते हैं। (4) तुम सब थककर बैठो।

(5) हम खेलकर खुश होते हैं। (6) हम उठकर बैठेंगे।

(7) वे कूदकर खेलेंगे। (8) तुम खेलकर प्रसन्न होवो।

(9) वे रूसकर छिपते हैं। (10) वह घूमकर खुश होगी।

---

1. **क्रिया के अन्त में** प्रत्यय लगने पर जो शब्द बनता है वह कृदन्त कहलाता है। हँसकर, सोकर, जागकर आदि भावों को प्रकट करने के लिये अपभ्रंश में उपर्युक्त प्रत्यय काम में लिये जाते हैं। उन प्रत्ययों के लगने के पश्चात् जो शब्द बनता है, वह संबन्धक भूत कृदन्त कहलाता है। इसमें कर्ता एक क्रिया समाप्त करके दूसरा कार्य करता है तो पहले किये गये कार्य के लिये सम्बन्धक भूत कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। इसमें कृदन्तवाचक शब्द और सामान्य क्रिया दोनों का सम्बन्ध कर्ता से होता है। (वह हँसकर सोता है, इसमें 'हँसने' और 'सोने' का सम्बन्ध 'वह' कर्ता से है) ये शब्द अव्यय होते हैं, इसलिये **इनका रूप परिवर्तन नहीं होता है।**
2. उपर्युक्त सभी प्रत्यय अकर्मक क्रियाओं में लगाये गये हैं।
3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 28

हेत्वर्थक कृदन्त

क्रियाएँ

हस = हँसना, **णच्च** = नाचना

हेत्वर्थक कृदन्त के प्रत्यय	हस	णच्च
एवं	**हसेवं** = हँसने के लिए	**णच्चेवं** = नाचने के लिए
अण	**हसण** = हँसने के लिए	**णच्चण** = नाचने के लिए
अणहं	**हसणहं** = हँसने के लिए	**णच्चणहं** = नाचने के लिए
अणहिं	**हसणहिं** = हँसने के लिए	**णच्चणहिं** = नाचने के लिए
एप्पि	**हसेप्पि** = हँसने के लिए	**णच्चेप्पि** = नाचने के लिए
एप्पिणु	**हसेप्पिणु** = हँसने के लिए	**णच्चेप्पिणु** = नाचने के लिए
एवि	**हसेवि** = हँसने के लिए	**णच्चेवि** = नाचने के लिए
एविणु	**हसेविणु** = हँसने के लिए	**णच्चेविणु** = नाचने के लिए

वाक्यों में प्रयोग

हउं **हसेवं/हसण/हसणहं/हसणहिं/हसेप्पि/हसेप्पिणु/हसेवि/हसेविणु** जीवउं = मैं हँसने के लिए जीता हूँ।

हउं **हसेवं/हसण/हसणहं/हसणहिं/हसेप्पि/हसेप्पिणु/हसेवि/हसेविणु** जीवमु = मैं हँसने के लिए जीवूँ।

हउं **हसेवं/हसण/हसणहं/हसणहिं/हसेप्पि/हसेप्पिणु/हसेवि/हसेविणु** जीवेसउं = मैं हँसने के लिए जीवूँगा।

तुहुं **णच्चेवं/णच्चण/णच्चणहं/णच्चणहिं/णच्चेप्पि/णच्चेप्पिणु/णच्चेवि/णच्चेविणु** उट्ठहि = तुम नाचने के लिए उठते हो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तुहुं **णच्चेवं/णच्चण/णच्चणहं/णच्चणहिं/**
णच्चेप्पि/णच्चेप्पिणु/णच्चेवि/ = तुम नाचने के लिए उठे।
णच्चेविणु उट्ठु

तुहुं **णच्चेवं/णच्चण/णच्चणहं/णच्चणहिं/**
णच्चेप्पि/णच्चेप्पिणु/णच्चेवि/ = तुम नाचने के लिए
णच्चेविणु उट्ठेसहि उठोगे।

इसी प्रकार अन्य पुरुषवाचक सर्वनामों के साथ वाक्य बना लेने चाहिये।

निम्नलिखित वाक्यों में हेत्वर्थक कृदन्तों के प्रत्ययों का प्रयोग कीजिये -

(1) वह थकने के लिए नाचता है।
(2) वह बैठने के लिए गिरती है।
(3) वे लड़ने के लिए छिपते हैं।
(4) तुम सब उठने के लिए बैठो।
(5) हम खेलने के लिए घूमेंगे।
(6) तुम दोनों खुश होने के लिए जीवो।
(7) वे सोने के लिए थकें।
(8) वह जागने के लिए प्रयास करे।
(9) वे नाचने के लिए उठेंगे।
(10) वे कूदने के लिए उठेंगी।

---

1. **क्रिया के अन्त में** प्रत्यय लगने पर जो शब्द बनता है, वह कृदन्त कहलाता है। हँसने के लिए, नाचने के लिए, जीने के लिए आदि भावों को प्रकट करने के लिये अपभ्रंश में उपर्युक्त प्रत्यय काम में लिए जाते हैं। इन प्रत्ययों के लगने के पश्चात् जो शब्द बनते है, वे हेत्वर्थक कृदन्त कहलाते हैं। ये शब्द अव्यय होते हैं, इसलिए **इनका रूप परिवर्तन नहीं होता है।**
2. हेत्वर्थक कृदन्त के अन्तिम चार प्रत्यय (एप्पि, एप्पिणु, एवि, एविणु) संबन्धक भूत कृदन्त के समान हैं, प्रसंग देखकर ही अर्थ लगाना होगा।
3. उपर्युक्त सभी प्रत्यय अकर्मक क्रियाओं में लगाए गए हैं।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 29

संज्ञाएँ एवं क्रियाएँ

(1) अकारान्त संज्ञा शब्द (पुल्लिग)

करह	= ऊँट,	रयण	= रत्न
कुक्कुर	= कुत्ता,	सायर	= समुद्र
गंथ	= पुस्तक,	राय	=नरेश
जणेर	= बाप,	नरिंद	= राजा
पुत्त	= पुत्र,	बालअ	= बालक
पोत्त	= पोता,	दुज्जस	= अपयश
घर	= मकान,	हणुवन्त	= हनुमान
माउल	= मामा,	गव्व	= गर्व
पिआमह	= दादा,	हुअवह	= अग्नि
ससुर	= ससुर,	मारुअ	= पवन
दिअर	= देवर,	पड	= वस्त्र
णर	= मनुष्य,	कयंत	= मृत्यु
परमेसर	= परमेश्वर,	दिवायर	= सूर्य
रहुणन्दण	= राम,	रक्खस	= राक्षस
वय	= व्रत,	सीह	= सिंह
आगम	= शास्त्र,	दुक्ख	= दुःख
सप्प	= साँप,	मित्त	= मित्र
भव	= संसार,	दुह	= दुःख
कूव	= कुआ,	बप्प	= पिता
मेह	= मेघ,	सलिल	= पानी
		गाम	= गाँव

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(2) अकर्मक क्रियाएँ

गल	= गलना,	**णिज्झर**	= झरना
खय	= नष्ट होना,	**सोह**	= शोभना
जल	= जलना,	**सुक्क**	= सूखना
लुढ	= लुढ़कना,	**पसर**	= फैलना
हो	= होना,	**डुल**	= डोलना, हिलना
हु	= होना,	**दुक्ख**	= दुखना
उप्पज्ज	= पैदा होना,	**पला**	= भाग जाना
वल	= मुड़ना,	**बइस**	= बैठना
जर	= बूढ़ा होना,	**बुक्क**	= भोंकना
गज्ज	= गर्जना,	**तुट्ट**	= टूटना
उग	= उगना,	**कंद**	= रोना
उड्ड	= उड़ना,	**हरिस**	= प्रसन्न होना
नस्स	= नष्ट होना		

---

1. उपर्युक्त सभी संज्ञा शब्द अकारान्त पुल्लिग हैं।
2. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 30

अकारान्त संज्ञा (पुल्लिग)

प्रथमा एकवचन

नरिंद = राजा, **बालअ** = बालक

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना, **जग्ग** = जागना

प्रथमा (एकवचन)		**वर्तमानकाल (एकवचन)**
नरिंदु नरिंदो नरिंद नरिंदा	हसइ/हसेइ/हसए	= राजा हँसता है।
बालउ बालओ बालअ बालआ	जग्गइ/जग्गेइ/जग्गए	= बालक जागता है।

प्रथमा (एकवचन)		**विधि एवं आज्ञा(एकवचन)**
नरिंदु नरिंदो नरिंद नरिंदा	हसउ/हसेउ	= राजा हँसे।
बालउ बालओ बालअ बालआ	जग्गउ/जग्गेउ	= बालक जागे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथमा (एकवचन)		भविष्यत्काल (एकवचन)
नरिंदु नरिंदो नरिंद नरिंदा	हसेसइ/हसेसए हसिहिइ/हसिहिए	= राजा हँसेगा।
बालउ बालओ बालअ बालआ	जग्गेसइ/जग्गेसए जग्गिहिइ/जग्गिहिए	= बालक जागेगा।

---

1. नरिंदु/नरिंदो/नरिंद/नरिंदा = **प्रथमा एकवचन** (अकारान्त पुल्लिग)।

2. अकारान्त पुल्लिग शब्द 'नरिंद' में '**उ**', '**ओ**', '**0**', '**0**'→ **आ** प्रत्यय प्रथमा के एकवचन में लगे हैं।

3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। कर्तृवाच्य में कर्ता (व्यक्ति, वस्तु आदि) में **प्रथमा** होती है।

4. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

5. उपर्युक्त संज्ञाओं के साथ जो क्रियारूप काम में आया है वह '**अन्य पुरुष एकवचन**' का है।

6. कर्तृवाच्य में प्रयुक्त संज्ञाओं के साथ '**अन्य पुरुष सर्वनाम**' की क्रिया काम में आती है। यहाँ संज्ञा एकवचन में है अत: क्रिया भी एकवचन की ही लगी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 31

अकारान्त संज्ञा (पुल्लिग)

प्रथमा बहुवचन

नरिंद = राजा, **बालअ** = बालक

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना, **जग्ग** = जागना

प्रथमा (बहुवचन) **वर्तमानकाल (बहुवचन)**

नरिंद, नरिंदा } हसहिं/हसन्ति/हसन्ते/हसिरे = राजा हँसते हैं।

बालअ, बालआ } जग्गहिं/जग्गन्ति/जग्गन्ते/जग्गिरे = बालक जागते हैं।

प्रथमा (बहुवचन) **विधि एवं आज्ञा(बहुवचन)**

नरिंद, नरिंदा } हसन्तु/हसेन्तु = राजा हँसें।

बालअ, बालआ } जग्गन्तु/जग्गेन्तु = बालक जागें।

प्रथमा (बहुवचन) **भविष्यत्काल (बहुवचन)**

नरिंद, नरिंदा } हसेसहिं/हसेसन्ति, हसिहिहिं/हसिहिन्ति = राजा हँसेंगे।

बालअ, बालआ } जग्गेसहिं/जग्गेसन्ति, जग्गिहिहिं/जग्गिहिन्ति = बालक जागेंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1. नरिंद/नरिंदा = **प्रथमा बहुवचन** (अकारान्त पुल्लिग)।

2. अकारान्त पुल्लिग शब्द 'नरिंद' के प्रथमा बहुवचन में '**0**', **0→आ** प्रत्यय लगे हैं।

3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। कर्तृवाच्य में कर्ता (व्यक्ति, वस्तु आदि) में **प्रथमा** होती है।

4. उपर्युक्त संज्ञाओं के साथ जो क्रिया-रूप काम में आया है वह '**अन्य पुरुष बहुवचन**' का है।

5. कर्तृवाच्य में प्रयुक्त संज्ञाओं के साथ '**अन्य पुरुष सर्वनाम**' की क्रिया काम में आती है। यहाँ संज्ञा बहुवचन में है, अत: क्रिया भी बहुवचन की ही लगी है।

6. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 32

अभ्यास

1. निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए -

(क) - (1) मेघ गरजते हैं। (2) वस्त्र सूखता है। (3) रत्न शोभता है। (4) अपयश फैलता है। (5) अग्नि जलती है। (6) पिता उठता है। (7) पुस्तक नष्ट होती है। (8) मित्र प्रयास करता है। (9) रघुनन्दन प्रसन्न होता है। (10) कुत्ता भौंकता है। (11) पुत्र काँपता है। (12) घर गिरता है। (13) मनुष्य बूढ़े होते हैं। (14) गर्व गलता है। (15) दादा थकता है। (16) व्रत शोभते हैं। (17) ऊँट नाचते हैं। (18) सूर्य उगता है। (19) राक्षस डरते हैं। (20) सिंह बैठते हैं।

(ख) - (1) मामा उठे। (2) पोता घूमे। (3) गर्व नष्ट हो। (4) बालक खेलें। (5) राक्षस मरें। (6) दुक्ख गलें। (7) शास्त्र शोभें। (8) मित्र खुश हो। (9) समुद्र फैले। (10) पुत्र जीवे।

(ग) - (1) अग्नि जलेगी। (2) शास्त्र नष्ट होंगे। (3) सर्प उड़ेंगे। (4) रघुनन्दन प्रसन्न होंगे। (5) संसार नष्ट होगा। (6) राक्षस मूर्च्छित होंगे। (7) बालक रूसेगा। (8) मनुष्य प्रयास करेंगे। (9) मकान गिरेंगे। (10) कुआ सूखेगा।

2. निम्नलिखित वर्तमानकालिक वाक्यों को शुद्ध कीजिये (कर्ता के अनुसार क्रिया लगाइये) -

(1)कुक्कुरु बुक्कन्ति। (2) गंथो नस्सन्ते। (3) णरु कंदन्ति। (4) दुक्खु तुट्टन्ति। (5) करहो थक्कन्ति। (6) माउलु थक्कहिं।

3. निम्नलिखित विधि एवं आज्ञावाचक वाक्यों को शुद्ध कीजिए (कर्ता के अनुसार क्रिया लगाइए) -

(1) ससुरो उट्ठन्तु। (2) दिअरु णच्चन्तु। (3) परमेसरो हरिसेन्तु। (4) हणुवन्तो बइसन्तु। (5) सीहु पलान्तु। (6) कयंतो होन्तु।

4. निम्नलिखित रिक्त स्थानों की निर्देशानुसार पूर्ति कीजिये (कर्ता के अनुसार क्रिया लगाइये) -

(1) मेह ..... (पसर-भविष्यत्काल में)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(2) कूवा ..... (सुक्क-भविष्यत्काल में)।

(3) सप्पु ..... (लुक्क-विधि एवं आज्ञा में)।

(4) पुत्त ..... (जग्ग-वर्तमानकाल में)।

(5) घरो ..... (पड-भविष्यत्काल में)।

(6) हुअवह ..... (जल-भविष्यत्काल में)।

(7) आगम ..... (सोह-वर्तमानकाल में)।

(8) भव ..... (खय-भविष्यत्काल में)।

(9) बप्प ..... (उज्जम-विधि एवं आज्ञा में)।

(10) रक्खस ..... (जुज्झ-भविष्यत्काल में)।

5. निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए -

(क) - (1) कुत्ता डरकर रोता है। (2) पिता हँसकर जीता है। (3) राजा प्रसन्न होकर उठते हैं। (4) सर्प डरकर भागते हैं। (5) ससुर रूसकर भिड़ता है। (6) रत्न पड़कर टूटता है। (7) पिता जागकर डोलता है।

(ख) - (1) पिता हँसने के लिए जीवे। (2) पोता नाचने के लिए उठे। (3) अग्नि नष्ट होने के लिए जले। (4) दादा घूमने के लिए उठे। (5) पानी सूखने के लिए झरे। (6) मित्र दुःखी होकर लड़ता है। (7) सूर्य शोभने के लिए उगे।

(ग) - (1) पुत्र कलह करके शरमायेगा। (2) मित्र प्रसन्न होने के लिए जीवेगा। (3) ऊँट थकने के लिए नाचेगा। (4) घर गिरकर नष्ट होगा। (5) व्रत टूटकर गलेगा। (6) राक्षस मरने के लिए कूदेंगे। (7) पानी फैलकर सूखेगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 33

संज्ञाएँ एवं क्रियाएँ

(1) अकारान्त संज्ञा शब्द (नपुंसकलिंग)

विमाण	= विमान,	मज्ज	= मद्य
सासण	= शासन,	वसण	= व्यसन
पत्त	= कागज,	जूअ	= जुआ
सोक्ख	= सुख,	असण	= भोजन
रज्ज	= राज्य,	तिण	= घास
पोट्टल	= गठरी,	वण	= जंगल
णह	= आकाश,	वत्थ	= वस्त्र
सील	= सदाचार,	कट्ठ	= काठ
णयरजण	= नागरिक,	भोयण	= भोजन
खीर	= दूध,	घय	= घी
छिक्क	= छींक,	सिर	= मस्तक
लक्कुड	= लकड़ी,	सुत्त	= धागा
उदग	= जल,	सुह	= सुख
गाण	= गीत,	रिण	= कर्ज
भय	= भय,	बीअ	= बीज
वेरग्ग	= वैराग्य,	जीवण	= जीवन
सच्च	= सत्य,	रूप	= रूप
रत्त	= रक्त,	कम्म	= कर्म
मरण	= मरण,	जोव्वण	= यौवन
खेत्त	= खेत,	णाण	= ज्ञान
धन्न	= धान,	मण	= चित्त, मन
धण	= धन,		

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(2) अकर्मक क्रियाएँ

वड्ढ	= बढ़ना,	**चेट्ठ**	= प्रयत्न करना
विअस	= खिलना,	**गुंज**	= गूँजना
लोट्ट	= सोना, लोटना	**सिज्झ**	= सिद्ध होना
चुअ	= टपकना,	**जल**	= जलना
कुद्द	= कूदना,	**उच्छह**	= उत्साहित होना
जम्म	= जन्म लेना,	**चुक्क**	= भूल करना
जगड	= झगड़ा करना,	**लोभ**	= लालच करना
जागर	= जागना,	**कील**	= क्रीड़ा करना
विज्ज	= उपस्थित होना,	**कील**	= कीलना (मंत्रादि से)
खिज्ज	= अफसोस करना,	**घट**	= कम होना, घटना
चिट्ठ	= ठहरना, बैठना,	**चिराव**	= देर करना
छुट्ट	= छूटना,	**तव**	= तपना
हव	= होना,	**वस**	= बसना
रम	= रमना,	**फुर**	= प्रकट होना

---

1. उपुर्यक्त सभी संज्ञा शब्द अकारान्त नपुंसकलिंग हैं।
2. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 34

अकारान्त संज्ञा (नपुंसकलिंग)

प्रथमा एकवचन

कमल = कमल का फूल, **धण** = धन

अकर्मक क्रियाएँ

विअस = खिलना, **वड्ढ** = बढ़ना

प्रथमा (एकवचन) **वर्तमानकाल (एकवचन)**

कमलु, कमल, कमला } विअसइ/विअसेइ/विअसए = कमल खिलता है।

धणु, धण, धणा } वड्ढइ/वड्ढेइ/वड्ढए = धन बढ़ता है।

प्रथमा (एकवचन) **विधि एवं आज्ञा(एकवचन)**

कमलु, कमल, कमला } विअसउ/विअसेउ = कमल खिले।

धणु, धण, धणा } वड्ढउ/वड्ढेउ = धन बढ़े।

प्रथमा (एकवचन) **भविष्यत्काल (एकवचन)**

कमलु, कमल, कमला } विअसेसइ/विअसेसए, विअसिहिइ/विअसिहिए = कमल खिलेगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धणु, धण, धणा } वड्ढेसइ/वड्ढेसए, वड्ढिहिइ/वड्ढिहिए = धन बढ़ेगा।

---

1. कमलु/कमल/कमला = **प्रथमा एकवचन** (अकारान्त नपुंसकलिंग)।
2. अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द '**कमल**' के प्रथमा एकवचन में '**उ**', '**0**', '**0**'→**आ** प्रत्यय लगे हैं।
3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। कर्तृवाच्य में कर्ता में प्रथमा होती है।
4. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
5. उपर्युक्त क्रियाओं के साथ जो क्रिया-रूप काम में आया है, वह '**अन्य पुरुष एकवचन**' का है।
6. कर्तृवाच्य में प्रयुक्त संज्ञाओं के साथ '**अन्य पुरुष सर्वनाम**' की क्रिया काम में आती है। यहाँ संज्ञा एकवचन में है, अत: क्रिया भी एकवचन की ही लगी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 35

अकारान्त संज्ञा (नपुंसकलिंग)

प्रथमा बहुवचन

कमल = कमल का फूल, **धण** = धन

अकर्मक क्रियाएँ

विअस = खिलना, **वड्ढ** = बढ़ना

प्रथमा (बहुवचन)	**वर्तमानकाल (बहुवचन)**	
कमलइं कमलाइं कमल कमला	विअसहिं/विअसन्ति/विअसन्ते/विअसिरे	= कमल खिलते हैं।
धणइं धणाइं धण धणा	वड्ढहिं/वड्ढन्ति/वड्ढन्ते/वड्ढिरे	= धन बढ़ते हैं।

प्रथमा (बहुवचन)	**विधि एवं आज्ञा(बहुवचन)**	
कमलइं कमलाइं कमल कमला	विअसन्तु/विअसेन्तु	= कमल खिलें।
धणइं धणाइं धण धणा	वड्ढन्तु/वड्ढेन्तु	= धन बढ़ें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथमा (बहुवचन)		भविष्यत्काल (बहुवचन)
कमलइं कमलाइं कमल कमला	विअसेसहिं/विअसेसन्ति विअसिहिहिं/विअसिहिन्ति	= कमल खिलेंगे।
धणइं धणाइं धण धणा	वड्ढेसहिं/वड्ढेसन्ति वड्ढिहिहिं/वड्ढिहिन्ति	= धन बढ़ेंगे।

---

1. कमलइं/कमलाइं/कमल/कमला = **प्रथमा बहुवचन** (अकारान्त नपुंसकलिंग)।
2. अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द '**कमल**' में प्रथमा के बहुवचन में '**इं**', **इं → आइं**, '**0**', **0→आ** प्रत्यय लगे हैं।
3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। कर्तृवाच्य में कर्ता में प्रथमा होती है।
4. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
5. उपर्युक्त क्रियाओं के साथ जो क्रियारूप काम में आया है, वह '**अन्य पुरुष बहुवचन**' का है।
6. कर्तृवाच्य में प्रयुक्त संज्ञाओं के साथ '**अन्य पुरुष सर्वनाम**' की क्रिया काम में आती है। यहाँ संज्ञा बहुवचन में है, अत: क्रिया भी बहुवचन की ही लगी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 36

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिये -

(क) - (1) सुख बढ़ता है। (2) दूध टपकता है। (3) नागरिक प्रसन्न होते हैं। (4) गठरी लुढ़कती है। (5) यौवन खिलता है। (6) राज्य भूल करता है। (7) आकाश गूँजता है। (8) सदाचार प्रकट होता है। (9) घास जलता है। (10) कर्ज बढ़ता है।

(ख) - (1) वैराग्य बढ़े। (2) दु:ख घटे। (3) राज्य प्रयत्न करे। (4) ज्ञान सिद्ध हो। (5) शासन डरे। (6) सदाचार शोभे। (7) धन घटे। (8) पोटली लुढ़के। (9) सत्य खिले। (10) पानी टपके।

(ग) - (1) नागरिक सोयेंगे। (2) रूप खिलेगा। (3) शासन प्रयत्न करेगा। (4) बीज उगेंगे। (5) लकड़ी जलेगी। (6) राज्य उत्साहित होगा। (7) कर्म नष्ट होंगे। (8) दु:ख फैलेगा। (9) विमान उड़ेंगे। (10) सत्य शोभेगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 37

संज्ञाएँ एवं क्रियाएँ

(1) आकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्रीलिंग)

परिक्खा	= परीक्षा,	**कन्ना**	= कन्या
सीया	= सीता,	**कलसिया**	= छोटा घड़ा
सुया	= पुत्री,	**गुहा**	= गुफा
ससा	= बहिन,	**झुंपडा**	= झोंपड़ी
माया	= माता,	**णिद्दा**	= नींद
वाया	= वाणी,	**पइट्ठा**	= प्रतिष्ठा
आणा	= आज्ञा,	**पसंसा**	= प्रशंसा
कमला	= लक्ष्मी,	**सिक्खा**	= शिक्षा
करुणा	= दया,	**सोहा**	= शोभा
गंगा	= गंगा,	**मइरा**	= मदिरा
जरा	= बुढ़ापा,	**सरिआ**	= नदी
तणया	= पुत्री,	**अहिलासा**	= अभिलाषा
णम्मया	= नर्मदा,	**गड्डा**	= गड्ढा, खड्डा
कहा	= कथा,	**धूआ**	= बेटी
जउणा	= यमुना,	**नणन्दा**	= नणद
जाआ	=पत्नी,	**महिला**	= स्त्री
सद्धा	= श्रद्धा,	**पण्णा**	= प्रज्ञा
मेहा	= बुद्धि,	**तिसा**	= प्यास
संझा	= सायंकाल,	**तण्हा**	= तृष्णा
भुक्खा	= भूख,	**निसा**	= रात्रि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(2) अकर्मक क्रियाएँ

छिज्ज	= छीजना,	**लुंच**	= बाल उखाड़ना
खुम्भ	= भूख लगना,	**वम**	= वमन करना
खास	= खाँसना,	**उस्सस**	= साँस लेना
गडयड	= गिड़गिड़ाना,	**लग्ग**	=लगना
बिह	= डरना,	**उवविस**	= बैठना
उवसम	= शान्त होना,	**ऊतर**	= उतरना, नीचे आना
थंभ	= रुकना		

---

1. उपर्युक्त सभी संज्ञा शब्द आकारान्त स्त्रीलिंग हैं।
2. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 38

आकारान्त संज्ञा (स्त्रीलिंग)

प्रथमा एकवचन

ससा = बहिन, **माया** = माता

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना, **जग्ग** = जागना

प्रथमा (एकवचन) **वर्तमानकाल(एकवचन)**

ससा, सस } हसइ/हसेइ/हसए = बहिन हँसती है।

माया, माय } जग्गइ/जग्गेइ/जग्गए = माता जागती है।

प्रथमा (एकवचन) **विधि एवं आज्ञा(एकवचन)**

ससा, सस } हसउ/हसेउ = बहिन हँसे।

माया, माय } जग्गउ/जग्गेउ =माता जागे।

प्रथमा (एकवचन) **भविष्यत्काल (एकवचन)**

ससा, सस } हसेसइ/हसेसए, हसिहिइ/हसिहिए = बहिन हँसेगी।

माया, माय } जग्गेसइ/जग्गेसए, जग्गिहिइ/जग्गिहिए = माता जागेगी।

---

1. ससा/सस = **प्रथमा एकवचन** (आकारान्त स्त्रीलिंग)।
2. आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द 'ससा' के '**0**' और **0→ह्रस्व (आ→अ)** प्रत्यय प्रथमा के एकवचन में लगे हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। कर्तृवाच्य में कर्ता (व्यक्ति, वस्तु आदि) में **प्रथमा** होती है।

4. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।

5. उपर्युक्त संज्ञाओं के साथ जो क्रिया-रूप काम में आया है वह **'अन्य पुरुष एकवचन'** का है।

6. कर्तृवाच्य में प्रयुक्त संज्ञाओं के साथ **'अन्य पुरुष सर्वनाम'** की क्रिया काम में आती है। यहाँ संज्ञा एकवचन में है, अत: क्रिया भी एकवचन की ही लगी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 39

आकारान्त संज्ञा (स्त्रीलिंग)

प्रथमा बहुवचन

ससा = बहिन, माया = माता

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना, जग्ग = जागना

प्रथमा (बहुवचन)		**वर्तमानकाल (बहुवचन)**
ससा सस ससाउ ससउ ससाओ ससओ	हसहिं/हसन्ति/हसन्ते/हसिरे	= बहिनें हँसती हैं।
माया माय मायाउ मायउ मायाओ मायओ	जग्गहिं/जग्गन्ति/जग्गन्ते/जग्गिरे	= माताएँ जागती हैं।
प्रथमा (बहुवचन)		**विधि एवं आज्ञा(बहुवचन)**
ससा सस ससाउ ससउ ससाओ ससओ	हसन्तु/हसेन्तु	= बहिनें हँसें।
माया माय मायाउ मायउ मायाओ मायओ	जग्गन्तु/जग्गेन्तु	= माताएँ जागें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथमा (बहुवचन)		भविष्यत्काल (बहुवचन)
ससा सस ससाउ ससउ ससाओ ससओ	हसेसहिं/हसेसन्ति/हसेसन्ते/हसेसइरे हसिहिहिं/हसिहिन्ति/हसिहिन्ते/हसिहिइरे	= बहिनें हँसेगी।
माया माय मायाउ मायउ मायाओ मायओ	जग्गेसहिं/जग्गेसन्ति/जग्गेसन्ते/जग्गेसइरे जग्गिहिहिं/जग्गिहिन्ति/जग्गिहिन्ते/जग्गिहिइरे	= माताएँ जागेंगी।

---

1. ससा/सस/ससाउ/ससउ/ससाओ/ससओ = **प्रथमा बहुवचन** (आकारान्त स्त्रीलिंग)।
2. आकारान्त स्त्रीलिंग शब्द **'ससा'** में 0, उ, ओ प्रत्यय प्रथमा के बहुवचन में लगेंगे। इन प्रत्ययों के प्रभाव से मूलशब्द ह्रस्व (आ→अ) हो जाता है। अर्थात् **'0', 0→अ, 'उ', उ→अउ, 'ओ', ओ→अओ।**
3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। कर्तृवाच्य में कर्ता (व्यक्ति, वस्तु आदि) में **प्रथमा** होती है।
4. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
5. उपर्युक्त संज्ञाओं के साथ जो क्रियारूप काम में आया है वह **'अन्य पुरुष बहुवचन'** का है।
6. कर्तृवाच्य में प्रयुक्त संज्ञाओं के साथ **'अन्य पुरुष सर्वनाम'** की क्रिया काम में आती है। यहाँ संज्ञा बहुवचन में है अत: क्रिया भी बहुवचन की ही लगी है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 40

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए -

(क) -

(1) सीता शोभती है।
(2) बहिन छीजती है।
(3) माता प्रसन्न होती है।
(4) वाणी थकती है।
(5) आज्ञा प्रकट होती है।
(6) लक्ष्मी घटती है।
(7) दया छूटती है।
(8) गंगा फैलती है।
(9) बुढ़ापा बढ़ता है।
(10) सायंकाल होता है।
(11) कन्याएँ रुकती हैं।
(12) झोपड़ियाँ जलती हैं।
(13) छोटे घड़े टूटते हैं।
(14) पुत्रियाँ खाँसती हैं।
(15) अभिलाषाएँ बढ़ती हैं।
(16) परीक्षाएँ होती हैं।
(17) सायंकाल शोभता है।
(18) वाणियाँ सिद्ध होती हैं।
(19) नदियाँ सूखती हैं।
(20) महिलाएँ प्रयत्न करती हैं।

(ख) -

(1) श्रद्धा बढ़े।
(2) भूख शान्त होवे।
(3) मदिरा छूटे।
(4) बेटी प्रसन्न हो।
(5) स्त्रियाँ तप करें।
(6) प्रज्ञा सिद्ध हो।
(7) अभिलाषाएँ घटें।
(8) वाणियाँ प्रकट हों।
(9) महिलाएँ उत्साहित हों।
(10) झोपड़ियाँ घटें।

(ग) -

(1) शिक्षा फैलेगी।
(2) अभिलाषाएँ शान्त होंगी।
(3) नदियाँ सूखेंगी।
(4) प्यास लगेगी।
(5) लक्ष्मी कम होगी।
(6) परीक्षाएँ होंगी।
(7) दया फैलेगी।
(8) गुफाएँ नष्ट होंगी।
(9) कन्याएँ देर करेंगी।
(10) बहिनें ठहरेंगी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 41

भूतकालिक कृदन्त (कर्तृवाच्य में प्रयोग)

अपभ्रंश में भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। **क्रिया** में निम्नलिखित प्रत्यय लगाकर भूतकालिक कृदन्त बनाए जाते हैं। भूतकालिक कृदन्त शब्द **विशेषण** का कार्य करते हैं। जब अकर्मक क्रियाओं में इस कृदन्त के प्रत्ययों को लगाया जाता है तो इसका प्रयोग **कर्तृवाच्य** में किया जा सकता है। इन शब्दों के रूप कर्ता के अनुसार चलेंगे। कर्ता पुल्लिग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग में से जो भी होगा इनके रूप भी उसी के अनुसार बनेंगे। इन कृदन्तों के पुल्लिग में **'देव'** के समान, नपुंसकलिंग में **'कमल'** के समान तथा स्त्रीलिंग में **'कहा'** के अनुसार रूप चलेंगे। भूतकालिक कृदन्त अकारान्त होता है। स्त्रीलिंग बनाने के लिए कृदन्त में **'आ'** प्रत्यय जोड़ा जाता है, वह शब्द आकारान्त स्त्रीलिंग बन जाता है।

(क) क्रियाएँ

हस = हँसना, **णच्च** = नाचना, **जग्ग** = जागना, **हो** = होना

भूतकालिक कृदन्त के प्रत्यय	हस	णच्च	जग्ग	हो
अ	**हसिअ** = हँसा	**णच्चिअ** = नाचा	**जग्गिअ** = जागा	**होअ** = हुआ
य	**हसिय** = हँसा	**णच्चिय** = नाचा	**जग्गिय** = जागा	**होय** = हुआ

नोट - क्रिया के अन्त्य **'अ'** का **'इ'** हो जाता है। **'य'** प्रत्यय **'अ'** में बदला जा सकता है।

(1) **वाक्यों में प्रयोग** (कर्ता पुल्लिग) (एकवचन) (कर्तृवाच्य)

नरिंदु, नरिंदो, नरिंद, नरिंदा } **हसिआ/हसिअ/हसिओ/हसिउ** = राजा हँसा।

नरिंदु, नरिंदो, नरिंद, नरिंदा } **होआ/होउ/होओ/होअ** = राजा हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(2) वाक्यों में प्रयोग (कर्ता पुल्लिग) (बहुवचन) (कर्तृवाच्य)

नरिंद
नरिंदा } **हसिअ/हसिआ** = राजा हँसे।

नरिंद
नरिंदा } **होअ/होआ** = राजा हुए।

(ख) क्रियाएँ

वड्ढ = बढ़ना, विअस = खिलना, हो = होना

भूतकालिक कृदन्त के प्रत्यय	वड्ढ	विअस	हो
अ	**वड्ढिअ** = बढ़ा	**विअसिअ** = खिला	**होअ**= हुआ
य	**वड्ढिय** = बढ़ा	**विअसिय** = खिला	**होय** = हुआ

नोट - क्रिया के अन्त्य 'अ' का 'इ' हो जाता है। 'य' प्रत्यय 'अ' में बदला जा सकता है।

(1) **वाक्यों में प्रयोग** (कर्ता नपुंसकलिंग) (एकवचन) (कर्तृवाच्य)

कमलु
कमल
कमला } **विअसिउ/विअसिअ/विअसिआ** = कमल खिला।

कमलु
कमल
कमला } **होउ/होआ/होअ** = कमल हुआ।

(2) **वाक्यों में प्रयोग** (कर्ता नपुंसकलिंग) (बहुवचन) (कर्तृवाच्य)

कमल
कमला
कमलइं
कमलाइं } **विअसिअ/विअसिआ/विअसिअइं/विअसिआइं** = कमल खिले।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कमल
कमला
कमलइं
कमलाइं
} होअ/होआ/होअइं/होआइं = कमल हुए।

(ग) क्रियाएँ

उट्ठ = उठना, **सय** = सोना, **ठा** = ठहरना

भूतकालिक कृदन्त के प्रत्यय	उट्ठ	सय	ठा
अ	**उट्ठिअ** = उठा	**सयिअ** = सोया	**ठाअ** = ठहरा
य	**उट्ठिय** = उठा	**सयिय** = सोया	**ठाय** = ठहरा

नोट - क्रिया के अन्त्य 'अ' का 'इ' हो जाता है। 'य' प्रत्यय 'अ' में बदला जा सकता है।

(1) **वाक्यों में प्रयोग** (कर्ता स्त्रीलिंग) (एकवचन) (कर्तृवाच्य)

ससा
सस
} **उट्ठिअ/उट्ठिआ** = बहिन उठी।

ससा
सस
} **ठाअ/ठाआ** = बहिन ठहरी।

(2) **वाक्यों में प्रयोग** (कर्ता स्त्रीलिंग) (बहुवचन) (कर्तृवाच्य)

ससा
सस
ससाउ
ससउ
ससाओ
ससओ
} **उट्ठिआ/उट्ठिअ/उट्ठिआउ/उट्ठिअउ/ उट्ठिआओ/उट्ठिअओ** = बहिनें उठी।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ससा सस ससाउ ससउ ससाओ ससओ	**ठाआ/ठाअ/ठाआउ/ठाअउ/ठाआओ/ठाअओ**	= बहिनें ठहरीं।

नोट- स्त्रीलिंग में प्रयोग करने से पहिले भूतकालिक कृदन्त का स्त्रीलिंग बनाना जरूरी है। 'आ' प्रत्यय जोड़ने से भूतकालिक कृदन्त शब्द स्त्रीलिंग बन जाते हैं। जैसे - उट्ठिअ→**उट्ठिआ**, सयिअ→**सयिआ**, ठाअ→**ठाआ**

इनके रूप **'कहा'** की तरह चलेंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 42

वर्तमान कृदन्त

अपभ्रंश में 'हँसता हुआ', 'सोता हुआ', 'नाचता हुआ' आदि भावों को प्रकट करने के लिए वर्तमान कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। **क्रिया** में निम्नलिखित प्रत्यय लगाकर वर्तमान कृदन्त बनाए जाते हैं। वर्तमान कृदन्त **विशेषण** का कार्य करते हैं। अत: इनके **लिंग** (पुल्लिग, नपुंसक, स्त्री), **वचन** (एक, बहु) और **कारक** (कर्ता, कर्म आदि) विशेष्य के अनुसार होंगे। इनके रूप पुल्लिग में **'देव'** के समान, नपुंसकलिंग में **'कमल'** के समान तथा स्त्रीलिंग में **'कहा'** के समान चलेंगे। वर्तमान कृदन्त अकारान्त होता है। स्त्रीलिंग बनाने के लिए कृदन्त में **'आ'** प्रत्यय भी जोड़ा जाता है, तो वह शब्द आकारान्त स्त्रीलिंग बन जाता है।

(क) अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना, **णच्च** = नाचना, **जग्ग** = जागना

वर्तमान कृदन्त के प्रत्यय	हँस	णच्च	जग्ग
न्त	**हसन्त** = हँसता हुआ	**णच्चन्त** = नाचता हुआ	**जग्गन्त** = जागता हुआ
माण	**हसमाण** = हँसता हुआ	**णच्चमाण** = नाचता हुआ	**जग्गमाण** = जागता हुआ

(1) वाक्यों में प्रयोग - विशेष्य : पुल्लिग, एकवचन, प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक) (सभी कालों में)

नरिंदु / नरिंदो / नरिंद / नरिंदा } **हसन्तु/हसन्तो/ हसन्त/हसन्ता** / **हसमाणु/हसमाणो/ हसमाण/हसमाणा** }

(वर्तमानकाल)

उट्ठइ = राजा हँसता हुआ उठता है।

(विधि एवं आज्ञा)

उट्ठउ = राजा हँसता हुआ उठे।

(भूत कृदन्त-भूतकाल)

उट्ठिअ = राजा हँसता हुआ उठा।

(भविष्यत्काल)

उट्ठेसइ = राजा हँसता हुआ उठेगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

1. यहाँ वर्तमान कृदन्त के रूप विशेष्य **'नरिंद'** की तरह चले हैं। यहाँ **'नरिंद'** प्रथमा विभक्ति में है, तो कृदन्त भी प्रथमा विभक्ति में रहेगा। यदि **'नरिंद'** द्वितीया, तृतीया, चतुर्थी आदि विभक्तियों में हो, तो वर्तमान कृदन्त भी उन्हीं विभक्तियों में होगा- हँसते हुए राजा को, हँसते हुए राजा के द्वारा, हँसते हुए राजा के लिए आदि। इन विभक्तियों को आगे समझाया जायेगा।

2. स्त्रीलिंग बनाने के लिए **'ई'** प्रत्यय भी लगाया जाता है। **'हसन्ती, हसमाणी'** फिर इनके रूप **'लच्छी'** की तरह चलेंगे। **'ई'** कारान्त को आगे समझाया जायेगा।

(2) वाक्यों में प्रयोग-विशेष्य : पुल्लिग, बहुवचन, प्रथमा विभक्ति (कर्ता कारक)

(सभी कालों में)

				(वर्तमानकाल)
नरिंद	**हसन्त/हसन्ता**	उट्ठहिं/उट्ठन्ति/आदि	=	राजा हँसते हुए उठते हैं।
				(विधि एवं आज्ञा)
		उट्ठन्तु	=	राजा हँसते हुए उठें।
				(भूतकाल-भूत-कृदन्त)
नरिंदा	**हसमाण/हसमाणा**	उट्ठिअ/उट्ठिआ	=	राजा हँसते हुए उठे।
				(भविष्यत्काल)
		उट्ठेसहिं/उट्ठेसन्ति/आदि	=	राजा हँसते हुए उठेंगे।

(ख) अकर्मक क्रियाएँ

वड्ढ = बढ़ना, **विअस** = खिलना

वर्तमान कृदन्त के प्रत्यय	वड्ढ	विअस
न्त	**वड्ढन्त** = बढ़ता हुआ	**विअसन्त** = खिलता हुआ
माण	**वड्ढमाण** = बढ़ता हुआ	**विअसमाण** = खिलता हुआ

(1) वाक्यों में प्रयोग- **विशेष्य** : नपुंसकलिंग, एकवचन, प्रथमा विभक्ति (कर्ताकारक)

(सभी कालों में)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कमलु कमल कमला	विअसन्तु/विअसन्त विअसन्ता विअसमाणु/विअसमाण/ विअसमाणा	(वर्तमानकाल) सोहइ/आदि = कमल खिलता हुआ शोभता है। (विधि एवं आज्ञा) सोहउ = कमल खिलता हुआ शोभे। (भूतकाल-भूत कृदन्त) सोहिअ/आदि = कमल खिलता हुआ शोभा। (भविष्यत्काल) सोहेइसइ/आदि = कमल खिलता हुआ शोभेगा।

(2) वाक्यों में प्रयोग- विशेष्य : नपुंसकलिंग, बहुवचन, प्रथमा विभक्ति (कर्ताकारक) (सभी कालो में)

कमल कमला कमलइं कमलाइं	विअसन्त/विअसन्ता/ विअसन्तइं/विअसन्ताइं विअसमाण/विअसमाणा/ विअसमाणइं/विअसमाणाइं	(वर्तमानकाल) सोहहिं/सोहन्ति/ आदि = कमल खिलते हुए शोभते हैं। (विधि एवं आज्ञा) सोहन्तु = कमल खिलते हुए शोभें। (भूतकाल-भूत कृदन्त) सोहिअ/सोहिआ/ सोहिअइं/सोहिआइं = कमल खिलते हुए शोभे। (भविष्यत्काल) सोहेसन्ति/आदि = कमल खिलते हुए शोभेंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ग) अकर्मक क्रियाएँ

णच्च = नाचना, **सय** = सोना

वर्तमान कृदन्त के प्रत्यय	णच्च	सय
न्त	**णच्चन्त** = नाचता हुआ	**सयन्त** = सोता हुआ
माण	**णच्चमाण** = नाचता हुआ	**सयमाण** = सोता हुआ

(1) वाक्यों में प्रयोग- विशेष्य : स्त्रीलिंग, एकवचन, प्रथमा विभक्ति (कर्ताकारक) (सभी कालों में)

(**नोट** - सर्वप्रथम कृदन्त का स्त्रीलिंग बनाना चाहिए। '**आ**' प्रत्यय जोड़ें - (णच्चन्ता, सयन्ता, णच्चमाणा, सयमाणा) अब इसके रूप '**कहा**' की तरह चलेंगे।)

ससा / सस — **णच्चन्ता/णच्चन्त**, **णच्चमाणा/णच्चमाण**

(वर्तमानकाल)

थक्कइ/आदि = बहिन नाचती हुई थकती है।

(विधि एवं आज्ञा)

थक्कउ = बहिन नाचती हुई थके।

(भूतकाल-भूत कृदन्त)

थक्किआ/थक्किअ = बहिन नाचती हुई थकी।

(भविष्यत्काल)

थक्केसइ/आदि = बहिन नाचती हुई थकेगी।

(2) वाक्यों में प्रयोग - विशेष्य : स्त्रीलिंग, बहुवचन, प्रथमा विभक्ति (कर्ताकारक) (सभी कालों में)

(**नोट** - सर्वप्रथम वर्तमान कृदन्त का स्त्रीलिंग बनाना चाहिए। '**आ**' प्रत्यय जोड़ें- (णच्चन्ता, सयन्ता; णच्चमाणा, सयमाणा) अब इसके रूप '**कहा**' की तरह चलेंगे।)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

		(वर्तमानकाल)
		थक्कहिं/आदि = बहिनें नाचती हुई थकती हैं।
ससा		**(विधि एवं आज्ञा)**
सस	**णच्चन्ता/णच्चन्त/**	थक्कन्तु = बहिनें नाचती हुई थकें।
ससाउ	**णच्चन्ताउ/णच्चन्तउ/**	**(भूतकाल-भूतकृदन्त)**
ससउ	**णच्चन्ताओ/णच्चन्तओ**	
ससाआ		थक्किआ/आदि = बहिनें नाचती हुई थकीं।
ससओ		**(भविष्यत्काल)**
		थक्केसहिं/आदि = बहिनें नाचती हुई थकेंगी।

---

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं।
4. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 43

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए -

(क) -

(1) पुत्र शरमाता हुआ बैठता है। (2) कुत्ता भोंकता हुआ भागता है।
(3) दादा दु:खी होता हुआ सोया। (4) मित्र प्रयत्न करता हुआ प्रसन्न हुआ।
(5) बालक डरता हुआ रोता है। (6) अग्नि जलती हुई नष्ट होती है।
(7) राक्षस काँपते हुए बैठते हैं। (8) समुद्र फैलते हुए सूखेंगे।
(9) पोते लड़ते हुए काँपे। (10) ऊँट नाचते हुए थकते हैं।
(11) पुत्र गिड़गिड़ाता हुआ बैठा। (12) मनुष्य हँसता हुआ जीवे।
(13) पिता खुश होता हुआ प्रयास करे। (14) राक्षस छटपटाता हुआ मरा।
(15) पानी टपकता हुआ सूखा।

(ख) -

(1) लकड़ी जलती हुई नष्ट होती है। (2) नागरिक लोभ करता हुआ जिया।
(3) वैराग्य बढ़ता हुआ शोभता है। (4) विमान उड़ता हुआ गिरा।
(5) राज्य लड़ते हुए नष्ट होते हैं। (6) सदाचार बढ़ता हुआ खिलता है।
(7) शासन भूल करता हुआ डरता है। (8) सत्य सिद्ध होता हुआ शोभेगा।
(9) कर्म गलते हुए छूटते हैं। (10) गठरियाँ लुढ़कती हुई ठहरीं।

(ग) -

(1) पुत्री प्रसन्न होती हुई उठी। (2) श्रद्धा बढ़ती हुई शोभती है।
(3) पत्नी खुरटि भरती हुई सोती है। (4) माता उत्साहित होती हुई बैठती है।
(5) नर्मदा फैलती हुई सूखी। (6) झोपड़ियाँ जलती हुई नष्ट हुईं।
(7) प्रतिष्ठा बढ़ती हुई शोभती है। (8) महिलाएँ अफसोस करती हुई घूमती हैं।
(9) वाणी प्रकट होती हुई सिद्ध हुई। (10) घास जलता हुआ नष्ट हुआ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 44

भूतकालिक कृदन्त (भाववाच्य में प्रयोग)

संज्ञाएँ		सर्वनाम
अकारान्त पुल्लिग	**नरिंद**	हउं (पुरुषवाचक सर्वनाम- उत्तम पुरुष, प्रथमा एकवचन)
अकारान्त नपुंसकलिंग	**कमल**	तुहुं (पुरुषवाचक सर्वनाम- मध्यम पुरुष, प्रथमा एकवचन)
आकारान्त स्त्रीलिंग	**ससा**	सो (पुरुष), सा (स्त्री) (पुरुषवाचक सर्वनाम-अन्य पुरुष, प्रथमा एकवचन)

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना, **जग्ग** = जागना, **विअस** = खिलना, **वड्ढ** = बढ़ना

(1)	**नपुंसकलिंग एकवचन**	
नरिंदें/नरिंदेण/नरिंदेणं	**हसिअ/हसिआ/हसिउ**	= राजा के द्वारा हँसा गया।
कमलें/कमलेण/कमलेणं	**विअसिअ/विअसिआ/ विअसिउ**	= कमल द्वारा खिला गया।
ससाए/ससए	**जग्गिअ/जग्गिआ/जग्गिउ**	= बहिन के द्वारा जागा गया।
मइं	**हसिअ/हसिआ/हसिउ**	= मेरे द्वारा हँसा गया।
पइं/तइं	**हसिअ/हसिआ/हसिउ**	= तुम्हारे द्वारा हँसा गया।
तें/तेण/तेणं	**हसिअ/हसिआ/हसिउ**	= उसके द्वारा हँसा गया।
ताए/तए	**हसिअ/हसिआ/हसिउ**	= उस (स्त्री) के द्वारा हँसा गया।
(2)	**नपुंसकलिंग एकवचन**	
नरिंदहिं/नरिंदाहिं/ नरिंदेहिं	**हसिअ/हसिआ/हसिउ**	= राजाओं के द्वारा हँसा गया।
कमलहिं/कमलाहिं/ कमलेंहि	**विअसिअ/विअसिआ विअसिउ**	= कमलों द्वारा खिला गया।
ससाहिं/ससहिं	**हसिअ/हसिआ/हसिउ**	= बहिनों द्वारा हँसा गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

म्हेहिं	**हसिअ/हसिआ/हसिउ**	= हमारे द्वारा हँसा गया।
म्हेहिं	**हसिअ/हसिआ/हसिउ**	= तुम्हारे द्वारा हँसा गया।
हिं/ताहिं/तेहिं	**हसिअ/हसिआ/हसिउ**	= उनके द्वारा हँसा गया।
ाहिं/तहिं	**हसिअ/हसिआ/हसिउ**	= उन (स्त्रियों) के द्वारा हँसा गया।

(क) नरिंदें/नरिंदेण/नरिंदेणं (अकारान्त पुल्लिग-तृतीया एकवचन)

कमलें/कमलेण/कमलेणं (अकारान्त नपुंसकलिंग-तृतीया एकवचन)

ससाए/ससए (आकारान्त स्त्रीलिंग-तृतीया एकवचन)

मइं (उत्तम पुरुष सर्वनाम-तृतीया एकवचन (पुल्लिग-स्त्रीलिंग)।

पइं/तइं (मध्यम पुरुष सर्वनाम-तृतीया एकवचन (पुल्लिग-स्त्रीलिंग)।

तें/तेण/तेणं (अन्य पुरुष सर्वनाम-तृतीया एकवचन(पुल्लिग)।

ताए/तए (अन्य पुरुष सर्वनाम-तृतीया एकवचन (स्त्रीलिंग)।

तृतीया एकवचन बनाने के लिए अकारान्त पुल्लिग और नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों में **एं, ण,** और **णं** प्रत्यय जोड़े जाते हैं, **ण** और **णं** जोड़ने पर अन्त्य **'अ'** का **'ए'** हो जाता है (नरिंदें, नरिंदेण, नरिंदेणं), (कमलें, कमलेण, कमलेणं)। आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के एकवचन में **'ए'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। **'ए'** प्रत्यय जोड़ने पर अन्त्य **'आ' 'अ'** भी हो जाता है (ससाए, ससए)। अन्य पुरुष सर्वनाम के लिए यही नियम समझ लेना चाहिए। बाकी उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष सर्वनाम को इसी प्रकार याद कर लेना चाहिए।

(ख) तृतीया बहुवचन बनाने के लिए अकारान्त पुल्लिग और नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों में तथा आकारान्त स्त्रीलिंग शब्दों में **'हिं'** प्रत्यय जोड़ा जाता है, **'हिं'** जोड़ने पर अकारान्त शब्दों का अन्त्य **'अ', 'ए'** भी हो जाता है तथा **'आ'** भी हो जाता है (नरिंदहिं, नरिंदेहिं, नरिंदाहिं; कमलहिं, कमलेहिं, कमलाहिं)।

तृतीया बहुवचन बनाने के लिए उत्तम पुरुष, मध्यम पुरुष और अन्य पुरुष के सर्वनामों में भी **'हिं'** प्रत्यय जोड़ा जाता है। तीनों पुरुषों में 'हिं'

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जोड़ने पर अन्त्य **'अ'** का **'ए'** हो जाता है और केवल अन्य पुरुष में अ
'अ' का **'आ'** तथा **'आ'** का **'अ'** भी हो जाता है। (अम्ह→अम्हे
तुम्ह→तुम्हेहिं, त→तेहिं/तहिं/ताहिं, ता→ताहिं/तहिं)।

2. यदि क्रिया अकर्मक होती है तो भूतकालिक कृदन्त भाववाच्य में भी प्र
होता है। भूतकालिक कृदन्त से भाववाच्य बनाने के लिए कर्ता में तृती
(एकवचन अथवा बहुवचन) तथा कृदन्त में सदैव **नपुंसकलिंग प्रथ
एकवचन** ही रहेगा।

3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं तथा सभी वाक्य भाववाच्य के हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 45

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए -

(1) पानी द्वारा झरा गया। (2) बादलों द्वारा गरजा गया। (3) मित्र द्वारा प्रसन्न हुआ गया। (4) अपयश द्वारा फैला गया। (5) समुद्रों द्वारा सूखा गया। (6) अग्नि द्वारा जला गया। (7) मृत्यु द्वारा भागा गया। (8) हमारे द्वारा काँपा गया। (9) तुम्हारे द्वारा घूमा गया। (10) उसके द्वारा खेला गया। (11) विमान द्वारा उड़ा गया। (12) गठरी द्वारा लुढ़का गया। (13) लकड़ियों द्वारा जला गया। (14) बीजों द्वारा उगा गया। (15) मनुष्य द्वारा जन्म लिया गया। (16) कुत्तों द्वारा भोंका गया। (17) कुओं द्वारा सूखा गया। (18) राक्षस द्वारा मरा गया। (19) रत्नों द्वारा शोभा गया। (20) सिंहों द्वारा गरजा गया। (21) परीक्षा द्वारा हुआ गया। (22) कन्याओं द्वारा छिपा गया। (23) महिलाओं द्वारा शान्त हुआ गया। (24) बेटी द्वारा खांसा गया। (25) प्रतिष्ठा द्वारा कम हुआ गया। (26) बुढ़ापे द्वारा बढ़ा गया। (27) सुख द्वारा गला गया। (28) धान द्वारा पैदा हुआ गया। (29) भूख द्वारा लगा गया। (30) राज्यों द्वारा लड़ा गया। (31) उनके द्वारा थका गया। (32) तुम्हारे द्वारा डरा गया। (33) उन (स्त्रियों) द्वारा खेला गया। (34) तुम दोनों के द्वारा नहाया गया। (35) उस (स्त्री) के द्वारा खुश हुआ गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 46

अकर्मक क्रियाएँ (भाववाच्य में प्रयोग)

संज्ञाएँ		सर्वनाम
अकारान्त पुल्लिग	**नरिंद**	**हउं** (पुरुषवाचक सर्वनाम- उत्तम पुरुष, प्रथमा एकवच
अकारान्त नपुंसकलिंग	**कमल**	
आकारान्त स्त्रीलिंग	**ससा**	**तुहुं** (पुरुषवाचक सर्वनाम- मध्यम पुरुष, प्रथमा एकवच
		सो (पुरुष) (पुरुषवाचक सर्वनाम अन्य पुरुष, प्रथमा एकवच
		सा (स्त्री) (पुरुषवाचक सर्वनाम- अन्य पुरुष, प्रथमा एकवच

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना, **जग्ग** = जागना, **वड्ढ** = बढ़ना, **विअस** = खिल

उपर्युक्त क्रियाएँ अकर्मक हैं। अकर्मक क्रियाएँ कर्तृवाच्य और भाववाच्य में प्र होती हैं। अकर्मक क्रिया से भाववाच्य बनाने के लिए **'इज्ज'**, **'इय'** प्रत्यय जोड़े जाते भाववाच्य में कर्ता में तृतीया (एकवचन अथवा बहुवचन) हो जाता है और क्रिया में भाववा के प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् **'अन्य पुरुष एकवचन'** का प्रत्यय भी लगा दिया जाता भाववाच्य वर्तमानकाल तथा विधि एवं आज्ञा में बनाया जाता है। भविष्यत्काल में क्रि का भविष्यत्काल कर्तृवाच्य का रूप ही रहता है। भूतकाल के लिए भूतकालिक कृदन्त प्रयोग भाववाच्य में किया जाता है।

भाववाच्य के प्रत्यय	हस	जग्ग	वर्तमानकाल	विधि एवं आ
इज्ज	हसिज्ज	जग्गिज्ज	हसिज्जइ, हसियइ	हसिज्जउ, हसियउ
इअ (इय)	हसिअ(य)	जग्गिय(अ)	जग्गिज्जइ, जग्गियइ	जग्गिज्जउ, जग्गियउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

एकवचन	वर्तमानकाल	
नरिंदें/नरिंदेण/नरिंदेणं	**हसिज्जइ/हसियइ**	= राजा के द्वारा हँसा जाता है।
कमलें/कमलेण/कमलेणं	**विअसिज्जइ/विअसियइ**	= कमल द्वारा खिला जाता है।
ससाए/ससए	**जग्गिज्जइ/जग्गियइ**	= बहिन द्वारा जागा जाता है।
मइं	**हसिज्जइ/हसियइ**	= मेरे द्वारा हँसा जाता है।
पइं/तइं	**हसिज्जइ/हसियइ**	= तुम्हारे द्वारा हँसा जाता है।
तें/तेण/तेणं	**हसिज्जइ/हसियइ**	= उसके द्वारा हँसा जाता है।
ताए/तए	**हसिज्जइ/हसियइ**	= उस (स्त्री) के द्वारा हँसा जाता है।
	विधि एवं आज्ञा	
नरिंदें/नरिंदेण/नरिंदेणं	**हसिज्जउ/हसियउ**	= राजा के द्वारा हँसा जाए।
कमलें/कमलेण/कमलेणं	**विअसिज्जउ/विअसियउ**	= कमल द्वारा खिला जाए।
ससाए/ससए	**जग्गिज्जउ/जग्गियउ**	= बहिन के द्वारा जागा जाए।
मइं	**हसिज्जउ/हसियउ**	= मेरे द्वारा हँसा जाए।
पइं/तइं	**हसिज्जउ/हसियउ**	= तुम्हारे द्वारा हँसा जाए।
तें/तेण/तेणं	**हसिज्जउ/हसियउ**	= उसके द्वारा हँसा जाए।
ताए/तए	**हसिज्जउ/हसियउ**	= उस (स्त्री) के द्वारा हँसा जाए।
	भविष्यत्काल	
नरिंदें/नरिंदेण/नरिंदेणं	**हसेसइ/आदि**	= राजा के द्वारा हँसा जायेगा
कमलें/कमलेण/कमलेणं	**विअसेसइ/आदि**	= कमल द्वारा खिला जायेगा
ससाए/ससए	**जग्गेसइ/आदि**	= बहिन द्वारा जागा जायेगा।
मइं	**हसेसइ/आदि**	= मेरे द्वारा हँसा जायेगा।
पइं/तइं	**हसेसइ/आदि**	= तुम्हारे द्वारा हँसा जायेगा।
तें/तेण/तेणं	**हसेसइ/आदि**	= उसके द्वारा हँसा जायेगा।
ताए/तए	**हसेसइ/आदि**	= उस (स्त्री) के द्वारा हँसा जायेगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

बहुवचन	वर्तमानकाल	
नरिंदहिं/नरिंदाहिं/नरिंदेहिं	**हसिज्जइ/हसियइ**	= राजाओं के द्वारा हँसा जाता है।
कमलहिं/कमलाहिं/कमलेहिं	**विअसिज्जइ/विअसियइ**	= कमलों द्वारा खिला जाता है।
ससाहिं/ससहिं	**जग्गिज्जइ/जग्गियइ**	= बहिनों द्वारा जागा जाता है।
अम्हेहिं	**हसिज्जइ/हसियइ**	= हमारे द्वारा हँसा जाता है।
तुम्हेहिं	**हसिज्जइ/हसियइ**	= तुम्हारे द्वारा हँसा जाता है।
तहिं/ताहिं/तेहिं	**हसिज्जइ/हसियइ**	= उनके द्वारा हँसा जाता है।
ताहिं/तहिं	**हसिज्जइ/हसियइ**	= उन (स्त्रियों) के द्वारा हँसा जाता है।
	विधि एवं आज्ञा	
नरिंदहिं/नरिंदाहिं/नरिंदेहिं	**हसिज्जउ/हसियउ**	= राजाओं द्वारा हँसा जाए।
कमलहिं/कमलाहिं/कमलेहिं	**विअसिज्जउ/विअसियउ**	= कमलों द्वारा खिला जाए।
ससाहिं/ससहिं	**जग्गिज्जउ/जग्गियउ**	= बहिनों द्वारा जागा जाए।
अम्हेहिं	**हसिज्जउ/हसियउ**	= हमारे द्वारा हँसा जाए।
तुम्हेहिं	**हसिज्जउ/हसियउ**	= तुम्हारे द्वारा हँसा जाए।
तहिं/ताहिं/तेहिं	**हसिज्जउ/हसियउ**	= उनके द्वारा हँसा जाए।
ताहिं/तहिं	**हसिज्जउ/हसियउ**	= उन (स्त्रियों) के द्वारा हँसा जाए।
	भविष्यत्काल	
नरिंदहिं/नरिंदाहिं/नरिंदेहिं	**हसेसइ/आदि**	= राजाओं के द्वारा हँसा जायेगा।
कमलहिं/कमलाहिं/कमलेहिं	**विअसेसइ/आदि**	= कमलों द्वारा खिला जायेगा।
ससाहिं/ससहिं	**जग्गेसइ/आदि**	= बहिनों द्वारा जागा जायेगा।
अम्हेहिं	**हसेसइ/आदि**	= हमारे द्वारा हँसा जायेगा।
तुम्हेहिं	**हसेसइ/आदि**	= तुम्हारे द्वारा हँसा जायेगा।
तहिं/ताहिं/तेहिं	**हसेसइ/आदि**	= उनके द्वारा हँसा जायेगा।
ताहिं/तहिं	**हसेसइ/आदि**	= उन (स्त्रियों) के द्वारा हँसा जायेगा।

---

1. (क) पाठ 43 का 1 (क) देखें।
1. (ख) पाठ 43 का 1 (ख) देखें।
2. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ अकर्मक हैं तथा सभी वाक्य भाववाच्य के हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 47

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए -

(1) विमानों द्वारा उड़ा जाता है। (2) पानी द्वारा झरा जाता है। (3) मित्र द्वारा प्रसन्न हुआ जाता है। (4) समुद्रों द्वारा सूखा जाता है। (5) अग्नि द्वारा जला जाता है। (6) हमारे द्वारा काँपा जाता है। (7) उसके द्वारा खेला जाता है। (8) गठरी द्वारा लुढ़का जाता है। (9) सिंहों द्वारा गर्जा जाता है। (10) कन्याओं द्वारा छिपा जाता है। (11) उनके द्वारा खेला जाए। (12) मनुष्यों द्वारा जन्म लिया जाए। (13) महिलाओं द्वारा शान्त हुआ जाए। (14) राज्यों द्वारा लड़ा जाए। (15) पुत्रियों द्वारा थका जाए। (16) माता द्वारा खुश हुआ जाए। (17) शिक्षा द्वारा फैला जाए। (18) श्रद्धा द्वारा बढ़ा जाए। (19) परीक्षा द्वारा हुआ जाए। (20) उन (स्त्रियों) के द्वारा शरमाया जाए। (21) विमान द्वारा उड़ा जायेगा। (22) राज्यों के द्वारा लड़ा जायेगा। (23) उनके द्वारा उछला जायेगा। (24) कुत्तों के द्वारा भोंका जायेगा। (25) बीजों के द्वारा उगा जायेगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 48

विधि कृदन्त (भाववाच्य में प्रयोग)

अपभ्रंश में 'हँसा जाना चाहिए', 'जागा जाना चाहिए' आदि भावों को प्रकट करने के लिए विधि कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। **क्रिया** में निम्नलिखित प्रत्यय लगाकर विधि कृदन्त बनाए जाते हैं। अपभ्रंश में दो प्रकार के विधि कृदन्त के प्रत्यय पाए जाते हैं - (1) **अव्व (परिवर्तनीय रूप)** (2) **इएव्वउं, एव्वउं, एवा (अपरिवर्तनीय रूप)**। प्रथम प्रकार के विधि कृदन्त का भाववाच्य में प्रयोग करने के लिए कर्ता में तृतीया (एकवचन अथवा बहुवचन) तथा कृदन्त में सदैव **नपुंसकलिंग प्रथमा एकवचन** ही रहेगा। विधि कृदन्त का यह रूप **'कमल'** (नपुंसकलिंग) शब्द की तरह चलेगा। दूसरे प्रकार के विधि कृदन्त का भाववाच्य में प्रयोग करने के लिए भी कर्ता में तो तृतीया (एकवचन अथवा बहुवचन) होगा, किन्तु कृदन्त में कोई परिवर्तन नहीं होगा। विधि कृदन्त कर्तृवाच्य में प्रयुक्त नहीं होता है।

संज्ञाएँ		सर्वनाम
अकाग्रन्त पुल्लिग	**नरिंद**	**हउं** (पुरुषवाचक सर्वनाम- उत्तम पुरुष (प्रथमा एकवचन)।
अकारान्त नपुंसकलिंग	**कमल**	**तुहुं** (पुरुषवाचक सर्वनाम- मध्यम पुरुष (प्रथमा एकवचन)।
आकारान्त स्त्रीलिंग	**ससा**	**सो** (पुरुष), **सा** (स्त्री) (पुरुषवाचक सर्वनाम-अन्य पुरुष (प्रथमा एकवचन)

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना, **जग्ग** = जागना, **विअस** = खिलना

विधि कृदन्त के प्रत्यय	हस	जग्ग	विअस
(1) अव्व	हसिअव्व / हसेअव्व	जग्गिअव्व / जग्गेअव्व	विअसिअव्व / विअसेअव्व
(2) इएव्वउं	हसिएव्वउं	जग्गिएव्वउं	विअसिएव्वउं
एव्वउं	हसेव्वउं	जग्गेव्वउं	विअसेव्वउं
एवा	हसेवा	जग्गेवा	विअसेवा

नोट - **'अव्व'** प्रत्यय लगने के पश्चात् अन्त्य **'अ'** का **'इ'** और **'ए'** हो जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(1) विधि कृदन्त के परिवर्तनीय रूप

नपुंसकलिंग एकवचन

नरिंदें/नरिंदेण/नरिंदेणं	हसिअव्व/हसिअव्वा/हसिअव्वु हसेअव्व/हसेअव्वा/हसेअव्वु	= राजा के द्वारा हँसा जाना चाहिए।
कमलें/कमलेण/कमलेणं	विअसिअव्व/विअसिअव्वा/विअसिअव्वु विअसेअव्व/विअसेअव्वा/विअसेअव्वु	= कमल के द्वारा खिला जाना चाहिए।
ससाए/ससए	जग्गिअव्व/जग्गिअव्वा/जग्गिअव्वु जग्गेअव्व/जग्गेअव्वा/जग्गेअव्वु	= बहिन के द्वारा जागा जाना चाहिए।
मइं	हसिअव्व/हसिअव्वा/हसिअव्वु हसेअव्व/हसेअव्वा/हसेअव्वु	= मेरे द्वारा हँसा जाना चाहिए।
पइं/तइं	हसिअव्व/हसिअव्वा/हसिअव्वु हसेअव्व/हसेअव्वा/हसेअव्वु	= तुम्हारे द्वारा हँसा जाना चाहिए।
तें/तेण/तेणं	हसिअव्व/हसिअव्वा/हसिअव्वु हसेअव्व/हसेअव्वा/हसेअव्वु	= उसके द्वारा हँसा जाना चाहिए।
ताए/तए	हसिअव्व/हसिअव्वा/हसिअव्वु हसेअव्व/हसेअव्वा/हसेअव्वु	= उस (स्त्री) के द्वारा हँसा जाना चाहिए।

(2) विधि कृदन्त के अपरिवर्तनीय रूप

नरिंदें/नरिंदेण/नरिंदेणं	हसिएव्वउं/हसेव्वउं/हसेवा	= राजा के द्वारा हँसा जाना चाहिए।
कमलें/कमलेण/कमलेणं	विअसिएव्वउं/विअसेव्वउं/विअसेवा	= कमल के द्वारा खिला जाना चाहिए।
ससाए/ससए	जग्गिएव्वउं/जग्गेव्वउं/जग्गेवा	= बहिन के द्वारा जागा जाना चाहिए।
मइं	हसिएव्वउं/हसेव्वउं/हसेवा	= मेरे द्वारा हँसा जाना चाहिए।
पइं/तइं	हसिएव्वउं/हसेव्वउं/हसेवा	= तुम्हारे द्वारा हँसा जाना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तें/तेण/तेणं	**हसिएव्वउं/हसेव्वउं/हसेवा**	= उसके द्वारा हँसा जाना चाहिए।
ताए/तए	**हसिएव्वउं/हसेव्वउं/हसेवा**	= उस (स्त्री) के द्वारा हँसा जाना चाहिए।

(1) विधि कृदन्त के परिवर्तनीय रूप
नपुंसकलिंग एकवचन

नरिंदहिं/नरिंदाहिं/नरिंदेहिं	**हसिअव्व/हसिअव्वा/हसिअव्वु** **हसेअव्व/हसेअव्वा/हसेअव्वु**	= राजाओं के द्वारा हँसा जाना चाहिए।
कमलहिं/कमलाहिं/कमलेहिं	**विअसिअव्व/विअसिअव्वा/विअसिअव्वु** **विअसेअव्व/विअसेअव्वा/विअसेअव्वु**	= कमलों के द्वारा खिला जाना चाहिए।
ससाहिं/ससहिं	**जग्गिअव्व/जग्गिअव्वा/जग्गिअव्वु** **जग्गेअव्व/जग्गेअव्वा/जग्गेअव्वु**	= बहिनों के द्वारा जागा जाना चाहिए।
अम्हेहिं	**हसिअव्व/हसिअव्वा/हसिअव्वु** **हसेअव्व/हसेअव्वा/हसेअव्वु**	= हमारे द्वारा हँसा जाना चाहिए।
तुम्हेहिं	**हसिअव्व/हसिअव्वा/हसिअव्वु** **हसेअव्व/हसेअव्वा/हसेअव्वु**	= तुम्हारे द्वारा हँसा जाना चाहिए।
तहिं/ताहिं/तेहिं	**हसिअव्व/हसिअव्वा/हसिअव्वु** **हसेअव्व/हसेअव्वा/हसेअव्वु**	= उनके द्वारा हँसा जाना चाहिए।
ताहिं/तहिं	**हसिअव्व/हसिअव्वा/हसिअव्वु** **हसेअव्व/हसेअव्वा/हसेअव्वु**	= उन (स्त्रियों) के द्वारा हँसा जाना चाहिए।

(2) विधि कृदन्त के अपरिवर्तनीय रूप

नरिंदहिं/नरिंदाहिं/नरिंदेहिं	**हसिएव्वउं/हसेव्वउं/हसेवा**	= राजाओं के द्वारा हँसा जाना चाहिए।
कमलहिं/कमलाहिं/कमलेहिं	**विअसिएव्वउं/विअसेव्वउं/विअसेवा**	= कमलों द्वारा खिला जाना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ससाहिं/ससहिं	**जग्गिएव्वउं/जग्गेव्वउं/जग्गेवा**	= बहिनों द्वारा जागा जाना चाहिए।
अम्हेहिं	**हसिएव्वउं/हसेव्वउं/हसेवा**	= हमारे द्वारा हँसा जाना चाहिए।
तुम्हेहिं	**हसिएव्वउं/हसेव्वउं/हसेवा**	= तुम्हारे द्वारा हँसा जाना चाहिए।
तहिं/ताहिं/तेहिं	**हसिएव्वउं/हसेव्वउं/हसेवा**	= उनके द्वारा हँसा जाना चाहिए।
ताहिं/तहिं	**हसिएव्वउं/हसेव्वउं/हसेवा**	= उन (स्त्रियों) के द्वारा हँसा जाना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 49

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए -

(1) राज्य द्वारा लड़ा जाना चाहिए। (2) श्रद्धा द्वारा बढ़ा जाना चाहिए। (3) उनके द्वारा खेला जाना चाहिए। (4) माता द्वारा खुश हुआ जाना चाहिए। (5) मनुष्यों द्वारा जन्म लिया जाना चाहिए। (6) उन (स्त्रियों) द्वारा शरमाया जाना चाहिए। (7) कुत्ते द्वारा भोंका जाना चाहिए। (8) स्त्रियों द्वारा नाचा जाना चाहिए। (9) कन्याओं द्वारा छिपा जाना चाहिए। (10) मित्रों द्वारा प्रसन्न हुआ जाना चाहिए। (11) अग्नि द्वारा जला जाना चाहिए। (12) सूर्य द्वारा उगा जाना चाहिए। (13) सिंह द्वारा गरजा जाना चाहिए। (14) उसके द्वारा खेला जाना चाहिए। (15) मेरे द्वारा कूदा जाना चाहिए। (16) तुम दोनों के द्वारा उत्साहित हुआ जाना चाहिए। (17) हमारे द्वारा डरा जाना चाहिए। (18) राक्षस द्वारा मरा जाना चाहिए। (19) बीजों द्वारा उगा जाना चाहिए। (20) विमान द्वारा उड़ा जाना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 50

संज्ञा - सर्वनाम द्वितीया-एकवचन

(सकर्मक क्रियाएँ)

	संज्ञाएँ	द्वितीया एकवचन
अकारान्त पुल्लिग	**नरिंद** = राजा,	नरिंद/नरिंदा/नरिंदु
	करह = ऊँट,	करह/करहा/करहु
	परमेसर = परमेश्वर,	परमेसर/परमेसरा/परसेसरु
अकारान्त नपुंसकलिंग	**भोयण** = भोजन,	भोयण/भोयणा/भोयणु
	तिण = घास,	तिण/तिणा/तिणु
	रज्ज = राज्य,	रज्ज/रज्जा/रज्जु
आकारान्त स्त्रीलिंग	**माया** = माता,	माया/माय
	कहा = कथा,	कहा/कह
	सिक्खा = शिक्षा	सिक्खा/सिक्ख

सकर्मक क्रियाएँ

रक्ख = रक्षा करना, **पाल** = पालना, **सुण** = सुनना,
चर = चरना, **पणम** = प्रणाम करना,
जाण = जानना, समझना **खा** = खाना

(1) **अकारान्त पुल्लिग** **वर्तमानकाल**
(द्वितीया एकवचन)

नरिंदु
नरिंदो
नरिंद
नरिंदा
} **परमेसर/परमेसरा/परमेसरु** पणमइ = राजा पमरेश्वर को प्रणाम करता है।

रज्ज
रज्जा
रज्जु
} **नरिंद/नरिंदा/नरिंदु** रक्खइ = राज्य राजा की रक्षा करता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माया } नरिंद/नरिंदा/नरिंदु पणमइ = माता राजा को प्रणाम करती है।
माय

(2) अकारान्त नपुंसकलिंग (द्वितीया एकवचन) **वर्तमानकाल**

करहु / करहो / करह / करहा } **तिण/तिणा/तिणु** चरइ = ऊँट घास चरता है।

नरिंदु / नरिंदो / नरिंद / नरिंदा } **रज्ज/रज्जा/रज्जु** रक्खइ = राजा राज्य की रक्षा करता है।

माया / माय } **भोयण/भोयणा/भोयणु** खाइ = माता भोजन खाती है।

(3) आकारान्त स्त्रीलिंग (द्वितीया एकवचन) **वर्तमानकाल**

नरिंदु / नरिंदो / नरिंद / नरिंदा } **माया/माय** पणमइ = राजा माता को प्रणाम करता है।

रज्ज / रज्जा / रज्जु } **सिक्खा/सिक्ख** जाणइ = राज्य शिक्षा को समझता है।

माया / माय } **कहा/कह** सुणइ = माता कथा सुनती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सर्वनाम शब्द द्वितीया एकवचन

(4)	हउं	**पइं/तइं**	पणमउं/आदि	= मैं तुमको प्रणाम करता हूँ।
	तुहुं	**मइं**	पालहि/आदि	= तुम मुझको पालते हो।
	सो	**तं**	जाणइ/आदि	= वह उस(पुरुष) को जानता है।
	सा	**तं**	जाणइ/आदि	= वह उस (स्त्री) को जानती है।
	सो	**तं**	रक्खइ/आदि	= वह उस (राज्य) की रक्षा करता है।

---

1. (1) अकारान्त पुल्लिग संज्ञा शब्दों से **द्वितीया एकवचन** बनाने के लिए **'0'**, **0→आ, उ** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे - **नरिंद, नरिंदा, नरिंदु**।

   (2) अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों से द्वितीया एकवचन बनाने के लिए **'0'**, **0→आ, उ** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे - **रज्ज, रज्जा, रज्जु**।

   (3) आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों से द्वितीया एकवचन बनाने के लिए **'0'**, **0→अ** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे - **माया, माय**।

   (4) उत्तम पुरुष सर्वनाम का द्वितीया एकवचन होगा - **मइं**। देखें पृ. स. 184
   मध्यम पुरुष सर्वनाम का द्वितीया एकवचन होगा - **पइं/तइं**। पृ. सं. 184
   अन्य पुरुष (पुल्लिग, स्त्री, नपुं.) सर्वनाम का द्वितीया एकवचन होगा - **तं**।
   पृष्ठ संख्या 172

2. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ सकर्मक हैं। सकर्मक क्रिया वह होती है, जिसमें कर्ता की क्रिया का प्रभाव कर्म पर पड़ता है। जैसे - 'माता कथा सुनती है', इसमें कर्ता 'माता' की क्रिया 'सुनना' है। इसका प्रभाव 'कथा' पर पड़ता है, क्योंकि 'कथा' सुनी जाती है। अत: 'सुनना' क्रिया का कर्म 'कथा' है।

3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं। इनमें कर्ता के अनुसार क्रियाओं के पुरुष और वचन होते हैं। संज्ञा-वाक्यों में कर्ता अन्य पुरुष एकवचन में है, अत: क्रियाएँ भी अन्य पुरुष एकवचन की ही लगी हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 51

संज्ञा - सर्वनाम द्वितीया बहुवचन

सकर्मक क्रियाएँ

(1) संज्ञा

	संज्ञाएँ	द्वितीया बहुवचन
अकारान्त पुल्लिग	**नरिंद** = राजा,	नरिंद/नरिंदा
	करह = ऊँट,	करह/करहा
	परमेसर = परमेश्वर,	परमेसर/परमेसरा
अकारान्त नपुंसकलिंग	**भोयण** = भोजन,	भोयण/भोयणा/भोयणइं/भोयणाइं
	तिण = घास,	तिण/तिणा/तिणइं/तिणाइं
	रज्ज = राज्य,	रज्ज/रज्जा/रज्जइं/रज्जाइं
आकारान्त स्त्रीलिंग	**माया** = माता,	माया/माय/मायाउ/ मायउ/मायाओ/मायओ
	कहा = कथा,	कहा/कह/कहाउ/कहउ/ कहाओ/कहओ
	सिक्खा = शिक्षा	सिक्खा/सिक्ख/सिक्खाउ/ सिक्खउ/सिक्खाओ/सिक्खओ

सकर्मक क्रियाएँ

रक्ख = रक्षा करना, **पाल** = पालना, **सुण** = सुनना,
चर = चरना, **पणम** = प्रणाम करना, **जाण** = जानना, समझना
खा = खाना

(1) अकारान्त पुल्लिग (द्वितीया बहुवचन) **वर्तमानकाल**

नरिंदु, नरिंदो, नरिंद, नरिंदा } **परमेसर/परमेसरा** पणमइ/आदि = राजा पमरेश्वरों (सिद्धों) को प्रणाम करता है।

रज्ज, रज्जा, रज्जु } **नरिंद/नरिंदा** रक्खइ/आदि = राज्य राजाओं की रक्षा करता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

माया, माय } **नरिंद/नरिंदा** पणमइ/आदि = माता राजाओं को प्रणाम करती है।

(2) अकारान्त नपुंसकलिंग (द्वितीया बहुवचन) **वर्तमानकाल**

करहु, करहो, करह, करहा } **तिण/तिणा/तिणइं/तिणाइं** चरइ = ऊँट (विभिन्न प्रकार के) घास चरता है।

नरिंदु, नरिंदो, नरिंद, नरिंदा } **रज्ज/रज्जा/रज्जइं/रज्जाइं** रक्खइ = राजा राज्यों की रक्षा करता है।

माया, माय } **भोयण/भोयणा/भोयणइं/भोयणाइं** खाइ = माता (विभिन्न प्रकार के) भोजन खाती है।

(3) आकारान्त स्त्रीलिंग (द्वितीया बहुवचन) **वर्तमानकाल**

नरिंदु, नरिंदो, नरिंद, नरिंदा } **माया/माय/मायाउ/मायउ/ मायाओ/मायओ** पणमइ = राजा माताओं को प्रणाम करता है।

रज्ज, रज्जा, रज्जु } **सिक्खा/सिक्ख/सिक्खाउ/ सिक्खउ/सिक्खाओ/सिक्खओ** जाणइ = राज्य शिक्षाओं को समझता है।

माया, माय } **कहा/कह/कहाउ/कहउ/ कहाओ/कहओ** सुणइ = माता कथाओं को सुनती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(2) सर्वनाम द्वितीया बहुवचन

(4)	हउं	**तुम्हे/तुम्हइं**	पणमउं/आदि	= मैं तुम (सब) को प्रणाम करता हूँ।
	तुहुं	**अम्हे/अम्हइं**	पालहि/आदि	= तुम हम (सब) को पालते हो।
	सो	**त/ता**	जाणइ	= वह उन(पुरुषों) को जानता है।
	सा	**ता/त/ताउ/तउ/ताओ/तओ**	जाणइ	= वह उन (स्त्रियों) को जानती है।
	सो	**त/ता/तइं/ताइं**	रक्खइ	= वह उन (राज्यों) की रक्षा करता है।

---

1. (1) अकारान्त पुल्लिग संज्ञा शब्दों से **द्वितीया बहुवचन** बनाने के लिए **'0', 0→आ** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे - परमेसर, परमेसरा।

   (2) अकारान्त नपुंसकलिंग संज्ञा शब्दों से **द्वितीया बहुवचन** बनाने के लिए **'0', 0→आ, 'इ', 'इं'→आइं** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे - रज्ज, रज्जा, रज्जइं, रज्जाइं।

   (3) आकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों से **द्वितीया बहुवचन** बनाने के लिए **'0', 0→अ, 'उ', उ→अउ, 'ओ', ओ→अओ** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे - माया, माय, मायाउ, मायउ, मायाओ, मायओ।

   (4) उत्तम पुरुष सर्वनाम का **द्वितीया बहुवचन** होगा - अम्हे/अम्हइं।
   मध्यम पुरुष सर्वनाम का **द्वितीया बहुवचन** होगा - तुम्हे/तुम्हइं।
   अन्य पुरुष सर्वनाम का **द्वितीया बहुवचन** होगा - (पुल्लिग) त/ता।
   (नपुंसकलिंग) त/ता/तइं/ताइं।
   (स्त्रीलिंग) ता/त/ताउ/तउ/ताओ/तओ।

2. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ सकर्मक हैं।

3. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्तृवाच्य में हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 52

सकर्मक क्रियाएँ

अभ्यास

1. निम्नलिखित सकर्मक क्रियाओं को कर्तृवाच्य में प्रयोग कीजिए। यह प्रयोग वर्तमानकाल, भविष्यत्काल तथा विधि एवं आज्ञा में हो। कर्ता के स्थान पर पुरुषवाचक सर्वनाम का प्रयोग कीजिए।

अच्च = पूजा करना,
रोक्क = रोकना,
उग्घाड = खोलना, प्रकट करना,
उपकर = उपकार करना,
उप्पाड = उपाड़ना, उन्मूलन करना,
कट्ट = काटना,
कलंक = कलंकित करना,
कुट्ट = कूटना,
कोक = बुलाना,
खण = खोदना,
छोड = छोड़ना,
छोल्ल = छीलना,
जिम = जीमना,
ढक्क = ढकना,
तोड = तोड़ना,
गरह = निन्दा करना
गवेस = खोज करना
घाल = डालना
चक्ख = चखना
चप्प = चबाना
चिण = चुनना
चोप्पड = स्निग्ध करना
छंड = छोड़ना
छल = ठगना
छुअ = स्पर्श करना
देख = देखना
धो = धोना
पीस = पीसना
पुक्कर = पुकारना
फाड = फाड़ना

2. निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए -

(क) -

(1) पिता पुत्र की निन्दा करता है।
(2) दादा पोते को बुलाता है।
(3) परमेश्वर संसार को देखता है।
(4) देवर वस्त्र धोता है।
(5) राजा गर्व को छोड़े।
(6) मित्र उसको पुकारे।
(7) राम परमेश्वर की पूजा करे।
(8) कुत्ता राक्षस को रोकता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(9) राजा रत्नों की खोज करता है।
(10) मनुष्य व्रतों को छोड़ते हैं।
(11) वह बालक को ठगता है।
(12) तुम सिंह को देखते हो।
(13) मैं उसको स्पर्श करता हूँ।
(14) वे उनको कलंकित करते हैं।
(15) वह वस्त्रों को फाड़ता है।
(16) दु:ख सुख को रोकता है।
(17) मित्र सिंहों को देखता है।
(18) मामा शास्त्रों को स्पर्श करता है।
(19) हनुमान उसका उपकार करता है।
(20) हम सूर्य को ढकते हैं।

(ख) -

(1) वह खेत खोदेगा।
(2) तुम भोजन जीमोगे।
(3) वह लकड़ी छीले।
(4) मैं घी डालूँगा।
(5) वह भोजन चबाए।
(6) तुम दूध चखो।
(7) वे गठरी काटेंगे।
(8) हम धान कूटेंगे।
(9) वे जंगल काटते हैं।
(10) वह बीजों को पीसता है।

(ग) -

(1) राम सीता को बुलाता है।
(2) मैं कन्या को पुकारता हूँ।
(3) महिला गड्ढा खोदती है।
(4) बहिन पुत्रियों को देखती है।
(5) कन्या छोटे घड़े को उघाड़ती है।
(6) पत्नी गड्ढे को ढकती है।
(7) हम गंगा की पूजा करते हैं।
(8) भूख प्यास को रोकती है।
(9) तृष्णा निद्रा को काटती है।
(10) वह मदिरा छोड़े।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 53

सकर्मक क्रियाएँ (कर्मवाच्य में प्रयोग)

सकर्मक क्रियाएँ

कोक = बुलाना,	**सुण** = सुनना,	**देख** = देखना
पणम = प्रणाम करना,	**रक्ख** = रक्षा करना,	**पाल** = पालना

उपर्युक्त क्रियाएँ सकर्मक हैं। सकर्मक क्रियाएँ कर्तृवाच्य और कर्मवाच्य में प्रयुक्त होती हैं। सकर्मक क्रिया से कर्मवाच्य बनाने के लिए वे ही प्रत्यय जोड़े जाते हैं जो भाववाच्य बनाने के लिए जोड़े गए थे (पाठ 45- इज्ज, इअ (इय))। कर्ता में तृतीया (एकवचन अथवा बहुवचन) हो जाता है, कर्म में द्वितीया (एकवचन अथवा बहुवचन) के स्थान पर प्रथमा (एकवचन अथवा बहुवचन) तथा क्रिया में कर्मवाच्य के प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् (प्रथमा में परिवर्तित) कर्म के अनुसार **क्रिया** में पुरुष और वचन के प्रत्यय काल के अनुरूप जोड़ दिए जाते हैं। कर्मवाच्य सकर्मक क्रिया से वर्तमानकाल तथा विधि एवं आज्ञा में बनाया जाता है। भविष्यत्काल में क्रिया का भविष्यत्काल कर्तृवाच्य का रूप ही रहता है उसमें **इज्ज** और **इय** प्रत्यय नहीं लगाए जाते हैं। भूतकाल के लिए भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग कर्मवाच्य में किया जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्तृवाच्य

वर्तमानकाल एकवचन

कर्ता-प्रथमा	कर्म-द्वितीया	क्रिया-कर्ता के अनुसार
नरिंदु नरिंदो नरिंद नरिंदा	**मइं**	कोकइ/आदि = राजा मुझको बुलाता है।
नरिंदु नरिंदा नरिंद नरिंदो	**पइं/तइं**	कोकइ/आदि = राजा तुमको बुलाता है।
नरिंदु नरिंदो नरिंद नरिंदा	**तं**	कोकइ/आदि = राजा उसको (पु.) बुलाता है।
नरिंदु नरिंदो नरिंद नरिंदा	**तं**	कोकइ/आदि = राजा उसको (स्त्री.) बुलाता है
नरिंदु नरिंदो नरिंद नरिंदा	**तं**	रक्खइ/आदि = राजा उस (राज्य) की रक्षा करता है
नरिंदु नरिंदो नरिंद नरिंदा	**कहा/कह**	सुणइ/आदि = राजा कथा सुनता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्मवाच्य

वर्तमानकाल एकवचन

कर्ता-तृतीया	कर्म-प्रथमा	क्रिया-परिवर्तित कर्म के अनुसार
नरिंदें नरिंदेण नरिंदेणं	हउं	**कोकिज्जउं/कोकियउं/** = राजा के द्वारा मैं बुलाया जाता हूँ। आदि
नरिंदें नरिंदेण नरिंदेणं	तुहुं	**कोकिज्जहि/कोकियहि/** = राजा के द्वारा तुम बुलाये जाते हो। आदि
नरिंदें नरिंदेण नरिंदेणं	सो	**कोकिज्जइ/कोकियइ/** = राजा के द्वारा वह बुलाया जाता है। आदि
नरिंदें नरिंदेण नरिंदेणं	सा	**कोकिज्जइ/कोकियइ/** = राजा के द्वारा वह बुलायी जाती है। आदि
नरिंदें नरिंदेण नरिंदेणं	तं	**रक्खिज्जइ/रक्खियइ/** = राजा के द्वारा वह (राज्य) रक्षा किया जाता है। आदि
नरिंदें नरिंदेण नरिंदेणं	कहा/कह	**सुणिज्जइ/सुणियइ/** = राजा के द्वारा कथा सुनी जाती है। आदि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्तृवाच्य
वर्तमानकाल एकवचन

कर्ता-प्रथमा	कर्म-द्वितीया	क्रिया-कर्ता के अनुसार	
हउं	**पइं/तइं**	देखउं/आदि	= मैं तुमको देखता हूँ।
तुहुं	**तं**	देखहि/आदि	= तुम उसको देखते हो।
सो	**मइं**	देखइ/आदि	= वह मुझको देखता है।
सा	**मइं**	देखइ/आदि	= वह मुझको देखती है।
माया/माय	**मइं**	पालइ/आदि	= माता मुझे पालती है।
माया/माय	**पइं/तइं**	पालइ/आदि	= माता तुमको पालती है।
माया/माय	**तं**	पालइ/आदि	= माता उसको पालती है।
हरि/हरी	**मइं**	पणमइ/आदि	= हरि मुझको प्रणाम करता है।
हरि/हरी	**पइं/तइं**	पणमइ/आदि	= हरि तुमको प्रणाम करता है।
हरि/हरी	**तं**	पणमइ/आदि	= हरि उसको प्रणाम करता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्मवाच्य

वर्तमानकाल एकवचन

कर्ता-तृतीया	कर्म-प्रथमा	क्रिया-परिवर्तित कर्म के अनुसार	
मइं	तुहुं	**देखिज्जहि/देखियहि/** आदि	= मेरे द्वारा तुम देखे जाते हो।
पइं/तइं	सो/सा	**देखिज्जइ/देखियइ/** आदि	= तुम्हारे द्वारा वह देखा जाता है/देखी जाती है।
तें/तेण/तेणं	हउं	**देखिज्जउं/देखियउं/** आदि	= उसके (पुरुष) द्वारा मैं देखा जाता हूँ।
ताए/तए	हउं	**देखिज्जउं/देखियउं/** आदि	= उसके (स्त्री) द्वारा मैं देखा जाता हूँ।
मायाए/मायए	हउं	**पालिज्जउं/पालियउं/** आदि	= माता के द्वारा मैं पाला जाता हूँ।
मायाए/मायए	तुहुं	**पालिज्जहि/पालियहि/** आदि	= माता के द्वारा तुम पाले जाते हो।
मायाए/मायए	सो/सा	**पालिज्जइ/पालियइ/** आदि	= माता के द्वारा वह पाला जाता है/पाली जाती है।

हरिं हरीं हरिएं हरीएं हरिणं हरीणं हरिण हरीण	हउं	**पणमिज्जउं/पणमियउं/** आदि	= हरि के द्वारा मैं प्रणाम किया जाता हूँ।
	तुहुं	**पणमिज्जहि/पणमियहि/** आदि	= हरि के द्वारा तुम प्रणाम किये जाते हो।
	सो/सा	**पणमिज्जइ/ पणमियइ/** आदि	= हरि के द्वारा वह प्रणाम किया जाता है/की जाती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्तृवाच्य

वर्तमानकाल एकवचन

कर्ता-प्रथमा	कर्म-द्वितीया	क्रिया-कर्ता के अनुसार	
साहु साहू	**मइं**	कोकइ/आदि	= साधु मुझको बुलाता है।
	पइं/तइं	कोकइ/आदि	= साधु तुमको बुलाता है।
	तं	कोकइ/आदि	= साधु उसको बुलाता है।
	कहा/कह	सुणइ/आदि	= साधु कथा सुनता है।
नरिंदु नरिंदो नरिंद नरिंदा	**अम्हे/अम्हइं**	कोकइ/आदि	= राजा हमको बुलाता है।
	तुम्हे/तुम्हइं	कोकइ/आदि	= राजा तुम (सब) को बुलाता है।
	त/ता	कोकइ/आदि	= राजा उनको बुलाता है।
	त/ता/ताउ/तउ/ ताओ/तओ	कोकइ/आदि	= राजा उन (स्त्रियों) को बुलाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

कर्मवाच्य

वर्तमानकाल एकवचन

कर्ता-तृतीया	कर्म-प्रथमा	क्रिया-परिवर्तित कर्म के अनुसार
साहुं साहूं साहुएं साहूएं साहुण साहूण साहुणं साहूणं	हउं	**कोकिज्जउं/कोकियउं/** आदि = साधु के द्वारा मैं बुलाया जाता हूँ।
	तुहुं	**कोकिज्जहि/कोकियहि/** आदि = साधु के द्वारा तुम बुलाए जाते हो।
	सो/सा	**कोकिज्जइ/कोकियइ/** आदि = साधु के द्वारा वह बुलाया जाता है/ बुलाई जाती है।
	कहा/कह	**सुणिज्जइ/सुणियइ/** आदि = साधु के द्वारा कथा सुनी जाती है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

वर्तमानकाल बहुवचन

नरिंदें नरिंदेण नरिंदेणं	अम्हे/अम्हइं	**कोकिज्जहुं**/आदि	= राजा के द्वारा हम बुलाये जाते हैं।
	तुम्हे/तुम्हइं	**कोकिज्जहु**/आदि	= राजा के द्वारा तुम (सब) बुलाए जाते हो।
	त/ता	**कोकिज्जन्ति**/ **कोकिज्जहिं**/आदि	= राजा के द्वारा वे बुलाये जाते हैं।
	ता/त/ताओ/ तओ/ताउ/तउ	**कोकिज्जन्ति**/ **कोकिज्जहिं**/आदि	= राजा के द्वारा वे बुलाई जाती हैं।

नोट - (1) इसी प्रकार कर्तृवाच्य में कर्म में द्वितीया बहुवचन को दूसरे वाक्यों में प्रयोग कर लेना चाहिए।

(2) विधि एवं आज्ञा में विधि एवं आज्ञा के प्रत्यय लगा देने चाहिए (तीनों पुरुषों एवं दोनों वचनों में)।

1. उपर्युक्त वाक्यों में इकारान्त और उकारान्त पुल्लिग शब्दों का प्रथमा एकवचन और तृतीया एकवचन में प्रयोग किया गया है।

(1) इकारान्त पुल्लिग शब्दों से प्रथमा एकवचन बनाने के लिए **'0', 0→दीर्घ (इ→ई)** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे - हरि, हरी तथा तृतीया एकवचन बनाने के लिए अनुस्वार (-), (-)→**ईं**, **'एं'**, **'एं'→ईएं**, **'ण'**, **ण→ईण**, **'णं'**, **णं→ईणं** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे - हरिं, हरीं, हरिएं, हरीएं, हरिण, हरीण, हरिणं, हरीणं।

2. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ सकर्मक हैं।

3. इकारान्त और उकारान्त पुल्लिग शब्दों से तृतीया बहुवचन बनाने के लिए **'हिं'**, **हिं→ईहिं**, **'हिं'**, **हिं→ऊहिं** प्रत्यय जोड़े जाते हैं। जैसे- हरिहिं, हरीहिं, साहुहिं, साहूहिं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 54

संज्ञा

(सकर्मक क्रियाएँ)

(1) इकारान्त संज्ञा शब्द (पुल्लिग)

सामि = मालिक,
रहुवइ = रघुपति,
कइ = कवि,
करि = हाथी,
मुणि = मुनि,
जोगि = योगी,
पइ = पति,
ससि = चन्द्रमा,
हत्थि = हाथी,
पाणि = प्राणी,
भाइ = भाई,
केसरि = सिंह,
गिरि = पर्वत,
रिसि = मुनि,
जइ = यति,
तवस्सि = तपस्वी,
नरवइ = राजा,
सेणावइ = सेनापति,
अरि = शत्रु,
मंति = मन्त्री,
विहि = विधि,

(2) उकारान्त संज्ञा शब्द (पुल्लिग)

जंतु = प्राणी
बिन्दु = बूँद
मच्चु = मृत्यु
सत्तु = शत्रु
रिउ = दुश्मन
सूणु = पुत्र
गुरु = गुरु
धणु = धनुष
तरु = पेड़
करेणु = हाथी
तेउ = तेज
पहु = प्रभु
पिउ = पिता
फरसु = कुल्हाड़ा
मेरु = पर्वत विशेष
विज्जु = बिजली
साहु = साधु
वाउ = वायु
जामाउ = दामाद
जंबु = जामुन
रहु = रघु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(3) सकर्मक क्रियाएँ

बोल्ल = बोलना,
पढ = पढ़ना,
भण = कहना,
कह = कहना,
मुण = जानना,
नम = नमस्कार करना,
जेम = जीमना,
खाद = खाना,
पिब = पीना,
इच्छ = इच्छा करना,
धार = धारण करना,
पेच्छ = देखना,
पेस = भेजना,
लिह = लिखना,
हण = मारना,
पीड = पीड़ा देना,
कर = करना,
चव = बोलना,
णिसुण = सुनना,
चुअ = त्याग करना,
लड्ड = लाड़-प्यार करना,
वण्ण = वर्णन करना,
सेव = सेवा करना
डंक = डसना,

बखाण = व्याख्यान करना
भुल = भूलना
सुमर = स्मरण करना
रंग = रंगना
ठेल्ल = ठेलना
ढोय = ढोना
चोर = चुराना
ओढ = ओढ़ना
ले = लेना
वह = धारण करना
विण्णव = कहना
मइल = मैला करना
दा = देना
सिंच = सींचना
बंध = बाँधना
थुण = स्तुति करना
चिंत = चिंता करना
मग्ग = माँगना
जण = उत्पन्न करना
हिंस = हिंसा करना
अस = खाना
मार = मारना
गा = गाना
वद्धाव = बधाई देना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 55

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए -

(क) -

(1) स्वामी के द्वारा भोजन खाया जाता है। (2) कवि के द्वारा व्रत पाला जाता है। (3) हाथी के द्वारा जल पिया जाता है। (4) दुश्मन के द्वारा तुम ठगे जाते हो। (5) प्रभु के द्वारा हम देखे जाते हैं। (6) मुनि के द्वारा तुम (सब) भेजे जाते हो। (7) माता के द्वारा वह स्तुति किया जाता है। (8) गुरु के द्वारा मैं स्मरण किया जाता हूँ। (9) मित्र के द्वारा हम बधाई दिए जाते हैं। (10) उसके द्वारा धन माँगा जाता है।

(ख) -

(1) भाई के द्वारा मैं पुकारा जाऊँ। (2) उसके द्वारा लकड़ी रंगी जाए। (3) कवि के द्वारा गीत गाया जाए। (4) मेरे द्वारा पत्र लिखा जाए। (5) पिता के द्वारा हम भेजे जाएँ। (6) बहिन के द्वारा तुम लाड़ किए जावो। (7) साधु तुम सब की सेवा करे। (8) मेरे द्वारा वे देखे जाएँ। (9) तुम्हारे द्वारा वह स्तुति की जाए। (10) तुम्हारे द्वारा मैं बाँधा जाऊँ।

(ग) -

(1) शत्रुओं के द्वारा मैं मारा जाता हूँ। (2) हमारे द्वारा दुःख भूला जाए। (3) महिलाओं द्वारा परमेश्वर की स्तुति की जाए। (4) दामाद द्वारा भोजन खाया जायेगा। (5) कवियों द्वारा गीत गाया जाए। (6) योगी द्वारा शास्त्र सुना जायेगा। (7) पिता द्वारा तुम बुलाए जाओगे। (8) तपस्वी द्वारा हम स्मरण किए जाऐंगे। (9) नदी के द्वारा वे धारे जाऐंगे। (10) मन्त्री उसको नमस्कार करेगा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 56

भूतकालिक कृदन्त (कर्मवाच्य में प्रयोग)

अपभ्रंश में भूतकाल का भाव प्रकट करने के लिए भूतकालिक कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। **क्रिया** में भूतकालिक कृदन्त के प्रत्यय लगाकर भूतकालिक कृदन्त बना लिया जाता है (देखें - पाठ 41)। भूतकालिक कृदन्तशब्द **विशेषण** का कार्य करते हैं। जब सकर्मक क्रियाओं में इस कृदन्त के प्रत्यय लगाए जाते हैं, तो इसका प्रयोग **कर्मवाच्य** में ही किया जाता है। कर्मवाच्य बनाने के लिए कर्ता तृतीया (एकवचन अथवा बहुवचन) में रखा जाता है। कर्म जो द्वितीया (एकवचन अथवा बहुवचन) में होता है, उसको प्रथमा (एकवचन अथवा बहुवचन) में परिवर्तित किया जाता है तथा भूतकालिक कृदन्त के रूप (प्रथमा में परिवर्तित) कर्म के अनुसार चलते हैं। पुल्लिग में **'देव'** के समान, नपुंसकलिंग में **'कमल'** के समान, तथा स्त्रीलिंग में **'कहा'** के अनुसार इसके रूप चलेंगे। भूतकालिक कृदन्त अकारान्त होता है। स्त्रीलिंग बनाने के लिए कृदन्त में 'आ' प्रत्यय जोड़ा जाता है, तो शब्द आकारान्त स्त्रीलिंग बन जाता है।

सकर्मक क्रियाएँ

कोक = बुलाना,	**सुण** = सुनना,	**देख** = देखना
पणम = प्रणाम करना,	**रक्ख** = रक्षा करना,	**पाल** = पालना
अच्च = पूजा करना,	**इच्छ** = इच्छा करना	

(1) **पुल्लिंग**

नरिंदें/आदि	कइ/कई	कोकिअ/कोकिआ/ कोकिओ/कोकिउ	=	राजा के द्वारा कवि बुलाया गया।
नरिंदें/आदि	कइ/कई	कोकिअ/कोकिआ	=	राजा के द्वारा कवि बुलाए गए।
नरिंदेहिं/आदि	कइ/कई	कोकिअ/कोकिआ	=	राजाओं के द्वारा कवि बुलाए गए।
हरिं/हरीं/ हरिएं/हरीएं	दिवायर/दिवायरु/ दिवायरा/दिवायरो	अच्चिअ/अच्चिआ/ अच्चिओ/अच्चिउ	=	हरि के द्वारा सूर्य पूजा गया।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मायाए/मायए	*साहु/साहू*	*देखिअ/देखिआ/ देखिउ/देखिओ*	=	*माता के द्वारा साधु देखा गया।*
साहुहिं/साहूहिं	वयो/वयु/वय/वया	पालिअ/पालिआ/ पालिउ/पालिओ	=	साधुओं के द्वारा व्रत पाला गया।

(2) नपुंसकलिंग

नरिंदें/आदि	धण/धणु/धणा	इच्छिअ/इच्छिआ/ इच्छिउ	=	राजा के द्वारा धन चाहा गया।
जोगिहिं/जोगीहिं	णाण/णाणु/णाणा	पणमिअ/पणमिआ/ पणमिउ	=	योगियों के द्वारा ज्ञान प्रणाम किया गया।
रज्जें/रज्जेण/ रज्जेणं	सासण/सासणु/ सासणा	रक्खिअ/रक्खिआ/ रक्खिउ	=	राज्य के द्वारा शासन रक्षा किया गया।
सूणुहिं/सूणूहिं	सोक्ख/सोक्खा/ सोक्खु	इच्छिअ/इच्छिआ/ इच्छिउ	=	पुत्रों द्वारा सुख चाहा गया।

(3) स्त्रीलिंग

नरिंदें/आदि	पसंसा/पसंस	सुणिआ/सुणिअ	=	राजा के द्वारा प्रशंसा सुनी गई।
सेणावइं/सेणावईं/ सेणावइएं/सेणावईएं/ सेणावइण/सेणावईण/ सेणावइणं/सेणावईणं	सरिआ/सरिअ	देखिआ/देखिअ	=	सेनापति के द्वारा नदी देखी गई।
पिउं/पिऊं/ पिउएं/पिऊएं/ पिउण/पिऊण/ पिउणं/पिऊणं	गंगा/गंग	पणमिआ/पणमिअ	=	पिता के द्वारा गंगा प्रणाम की गई।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मायाए/मायए	कहा/कह/ कहाउ/कहउ/ कहाओ/कहओ	सुणिआ/सुणिअ सुणिआउ/सुणिअउ/ सुणिआओ/सुणिअओ	= माता के द्वारा कथाएँ सुनी गई।

---

1. उपर्युक्त सभी वाक्य कर्मवाच्य के हैं। इनमें कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा और क्रिया कर्म के लिंग और वचन के अनुसार होती है।
2. भूतकालिक कृदन्त को स्त्रीलिंग में प्रयोग करने से पहिले उसका स्त्रीलिंग बनाना चाहिए। **'आ'** प्रत्यय जोड़ने से भूतकालिक कृदन्त शब्द स्त्रीलिंग बन जाते हैं। जैसे - सुणिअ→**सुणिआ**, देखिअ→**देखिआ**, पणमिअ→**पणमिआ** आदि।
3. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ सकर्मक हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 57

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए -

(क) -

(1) मेरे द्वारा ग्रन्थ पढ़ा गया। (2) उसके द्वारा मित्र बुलाया गया। (3) दादा के द्वारा पुत्र लाड़-प्यार किया गया। (4) राजा के द्वारा गर्व धारण किया गया। (5) हमारे द्वारा पानी पिया गया। (6) उनके द्वारा कुए खोदे गए। (7) राम के द्वारा राक्षस मारे गए। (8) बालक के द्वारा वस्त्र फाड़े गए। (9) शत्रु द्वारा सेनापति मारा गया। (10) गुरु द्वारा मुनि की स्तुति की गई।

(ख) -

(1) नागरिक द्वारा भोजन खाया गया। (2) भाईयों द्वारा दूध पिया गया। (3) प्राणियों द्वारा कर्म बांधे गए। (4) कवि द्वारा गाने गाए गए। (5) मेरे द्वारा विमान देखे गए। (6) उसके द्वारा वैराग्य चाहा गया। (7) मेरे द्वारा लकड़ियाँ ढोई गई। (8) तुम्हारे द्वारा व्यसनों का वर्णन किया गया। (9) व्यापारी द्वारा कागज लिखे गए। (10) स्वामी द्वारा धागा काटा गया।

(ग) -

(1) उसके द्वारा आज्ञा पाली गई। (2) राम के द्वारा कथा सुनी गई। (3) यति के द्वारा शिक्षा धारी गई। (4) पुत्री के द्वारा लक्ष्मी चाही गई। (5) उसके द्वारा दया उत्पन्न की गई। (6) स्वामी द्वारा प्रतिष्ठा सुनी गई। (7) योगी द्वारा श्रद्धा की गई। (8) दामाद द्वारा झोंपड़ी देखी गई। (9) ऋषियों द्वारा प्रज्ञा जानी गई। (10) व्यापारियों द्वारा दया की गई।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 58

इकारान्त, उकारान्त संज्ञा शब्द
पुल्लिंग, नपुंसकलिंग, स्त्रीलिंग

1. **इकारान्त संज्ञा शब्द (नपुंसकलिंग)**

दहि = दही,
अच्छि = आँख
अट्ठि = हड्डी,
वारि = जल
रवि = सूर्य

2. **उकारान्त संज्ञा शब्द (नपुंसकलिंग)**

महु = मधु,
जाणु = घुटना
अंसु = आँसू,
आउ = आयु
वत्थु = पदार्थ

3. **इकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्रीलिंग)**

भत्ति = भक्ति,
उप्पत्ति = जन्म
मणि = रत्न,
पिहिमि = धरती
तत्ति = तृप्ति,
रिद्धि = वैभव
रत्ति = रात,
जुवइ = युवती
धिइ = धैर्य,
सत्ति = बल
थुइ = स्तुति,
अप्पलद्धि = आत्मलाभ
अवहि = समय की सीमा,
आगि = आग
आंखि = आँख,
मइ = मति

4. **ईकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्रीलिंग)**

परमेसरी = ऐश्वर्य-सम्पन्न स्त्री,
जणेरी = माता
सामिणी = स्वामिनी,
डाइणी = चुड़ैल
णागरी = नगर में रहनेवाली स्त्री,
बहिणी = बहिन

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुत्ती = पुत्री,
माउसी = मौसी,
णारी = नारी,
इत्थी = स्त्री,
लच्छी = लक्ष्मी

पिआमही = दादी
महेली = महिला
समणी = श्रमणी
साडी = साड़ी

5. उकारान्त, ऊकारान्त संज्ञा शब्द (स्त्रीलिंग)

धेणु = गाय,
चंचु = चोंच,
सस्सु = सासू,
हणु = ठोढ़ी,
कडच्छु = कर्छी, चमची,
तणु = शरीर,
रज्जु = रस्सी

कण्डू = खाज
खज्जू = खुजली
जंबू = जामुन का पेड़
सासू = सासू
बहू = बहू
चमू = सैन्य

6. ईकारान्त एवं ऊकारान्त संज्ञा शब्द (पुल्लिग)

गामणी = गाँव का मुखिया,
सयंभू = स्वयंभू

खलपू = खलियान को साफ करनेवाला

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 59

सकर्मक क्रियाएँ

गच्छ = जाना,
वज्ज = जाना,
या = जाना,
आगच्छ = आना,
धाव = दौड़ना,
चुस्स = चूसना,
लिह = चाटना,
झाअ = ध्यान करना,
गाअ = गाना,
खम = क्षमा करना,
गण = गिनना,
धिक्कार = धिक्कारना,
खिव = फैंकना,
रच = बनाना,
खंड = टुकड़ा करना,
गुंथ = गूंथना,
आवड = अच्छा लगना
दह = जलाना
लभ = प्राप्त करना
सीख = सीखना
वंद = प्रणाम करना
वंछ = चाहना
बुज्झ = समझना
खिंस = निन्दा करना
जिंघ = सूँघना
जिण = जीतना
जोअ = प्रकाशित करना
माण = सम्मान करना
पाव = पाना
रक्ख = रखना
णिरक्ख = देखना
भुंज = खाना
कीण = खरीदना,

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 60

इकारान्त, उकारान्त संज्ञाएँ

ईकारान्त स्त्रीलिंग — **लच्छी = लक्ष्मी**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	लच्छी/लच्छि	लच्छी/लच्छि/लच्छीउ/ लच्छिउ/लच्छीओ/लच्छिओ
तृतीया	लच्छीए/लच्छिए	लच्छीहिं / लच्छिहिं

उकारान्त स्त्रीलिंग — **तणु = शरीर**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	तणु/तणू	तणु/तणू/तणुउ/तणूउ/ तणुओ/तणूओ
तृतीया	तणुए/तणूए	तणुहिं / तणूहिं

ऊकारान्त स्त्रीलिंग — **चमू = सेना**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	चमू/चमु	चमू/चमु/चमूउ/चमुउ/ चमूओ/चमुओ
तृतीया	चमूए/चमुए	चमूहिं/चमुहिं

इकारान्त पुल्लिंग — **सामि = स्वामी**

	एकवचन	**बहुवचन**
प्रथमा	सामि/सामी	सामि/सामी
तृतीया	सामिं/सामीं/सामिएं/सामीएं/ सामिण/सामीण/सामिणं/सामीणं	सामिहिं/सामीहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उकारान्त पुल्लिग — **पहु = प्रभू**

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	पहु/पहू	पहु/पहू
तृतीया	पहुं/पहूं/पहुएं/पहूएं/ पहुण/पहूण/पहुणं/पहूणं	पहुहिं/पहूहिं

ईकारान्त पुल्लिग — **गामणी = गाँव का मुखिया**

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	गामणी/गामणि	गामणी/गामणि
तृतीया	गामणीं/गामणिं/गामणीएं/गामणिएं/ गामणीण/गामणिण/गामणीणं/गामणिणं	गामणीहिं/गामणिहिं

ऊकारान्त पुल्लिग — **सयंभू = स्वयंभू**

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सयंभू/सयंभु	सयंभू/सयंभु
तृतीया	सयंभूं/सयंभुं/सयंभूएं/सयंभुएं/ सयंभूण/सयंभुण/सयंभूणं/सयंभुणं	सयंभूहिं/सयंभुहिं

इकारान्त नपुंसकलिंग — **वारि = जल**

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि/वारी	वारि/वारी/वारिइं/वारीइं
तृतीया	वारिं/वारीं/वारिएं/वारीएं/ वारिण/वारीण/वारिणं/वारीणं	वारिहिं/वारीहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊकारान्त नपुंसकलिंग **वत्थु = पदार्थ**

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	वत्थु/वत्थू	वत्थु/वत्थू/वत्थुइं/वत्थूइं
तृतीया	वत्थुं/वत्थूं/वत्थुएं/वत्थूएं/ वत्थुण/वत्थूण/वत्थुणं/वत्थूणं	वत्थुहिं/वत्थूहिं

इकारान्त स्त्रीलिंग **जुवइ = युवती**

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	जुवइ/जुवई	जुवइ/जुवई/जुवइउ/ जुवईउ/जुवइओ/जुवईओ
तृतीया	जुवइए/जुवईए	जुवइहिं/जुवईहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 61

विधि कृदन्त (कर्मवाच्य में प्रयोग)

अपभ्रंश में 'प्राप्त किया जाना चाहिए', 'रक्षा किया जाना चाहिए' आदि भावों को प्रकट करने के लिए विधि कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। **क्रिया** में प्रत्यय लगाकर विधि कृदन्त बनाए जाते हैं। अपभ्रंश में दो प्रकार के विधि कृदन्त के प्रत्यय पाये जाते हैं (1) **अव्व** (2) **इएव्वउं, एव्वउं, एवा**। प्रथम प्रकार के विधि कृदन्त का कर्मवाच्य में प्रयोग करने के लिए कर्ता में तृतीया (एकवचन अथवा बहुवचन), कर्म में प्रथमा (एकवचन अथवा बहुवचन) तथा कृदन्त के रूप (प्रथमा में परिवर्तित) कर्म के लिंग और वचन के अनुसार चलेंगे। पुल्लिग में **'देव'** के अनुसार, नपुंसकलिंग में **'कमल'** के अनुसार तथा स्त्रीलिंग में **'कहा'** के अनुसार रूप चलेंगे। दूसरे प्रकार के विधि कृदन्त का कर्मवाच्य में प्रयोग करने के लिए भी कर्ता में तृतीया, कर्म में प्रथमा, किन्तु कृदन्त के रूप में कोई परिवर्तन नहीं होता। सकर्मक क्रियाओं से निर्मित विधि कृदन्त ही कर्मवाच्य में प्रयुक्त किए जाते हैं।

(1) **पुल्लिग**

सामिं/सामीं/ सामिएं/सामीएं/ सामिण/सामीण/ सामिणं/सामीणं	हत्थि/ हत्थी	कीणिअव्वु/कीणिअव्वो/ कीणिअव्वा/कीणिअव्व/ कीणेअव्वु/कीणेअव्वो/ कीणेअव्व/कीणेअव्वा/ **अथवा** कीणिएव्वउं/कीणेव्वउं/ कीणेवा	=	स्वामी द्वारा हाथी खरीदा जाना चाहिए।
मुणिहिं/मुणीहिं	पाणि/पाणी	रक्खिअव्व/रक्खिअव्वा/ रक्खेअव्व/रक्खेअव्वा/ **अथवा** रक्खिएव्वउं/रक्खेव्वउं/ रक्खेवा	=	मुनियों द्वारा प्राणी रक्षा किए जाने चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

रिसिं/रिसीं/
रिसिएं/रिसीएं/ } पहु/पहू } झाइअव्व/झाइअव्वु/
झाइअव्वो/झाइअव्वा/
झाएअव्वु/झाएअव्व/
झाएअव्वो/झाएअव्वा
अथवा
झाइएव्वउं/झाएव्वउं/
झाएवा } = ऋषि द्वारा प्रभु ध्याया जाना चाहिए।

मइं } सत्तु/सत्तू } खमिअव्व/खमिअव्वा/
खमेअव्व/खमेअव्वा/
अथवा
खमिएव्वउं/खमेव्वउं/
खमेवा } = मेरे द्वारा शत्रु क्षमा किए जाने चाहिए।

(2) **नपुंसकलिंग**

सामिं/सामीं/
सामिएं/सामीएं/
सामिण/सामीण/
सामिणं/सामीणं } वारि/वारी } पिबिअव्व/पिबिअव्वा/
पिबिअव्वु/पिबेअव्व/
पिबेअव्वा/पिबेअव्वु
अथवा
पिबिएव्वउं/पिबेव्वउं/पिबेवा } = स्वामी द्वारा जल पिया जाना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मइं	अच्छि/ अच्छी/ अच्छिइं/ अच्छीइं	गणिअव्व/गणिअव्वा/ गणिअव्वइं/गणिअव्वाइं/ गणेअव्व/गणेअव्वा/ गणेअव्वइं/गणेअव्वाइं/ **अथवा** गणिएव्वउं/गणेव्वउं/ गणेवा	= मेरे द्वारा आँखें गिनी जानी चाहिए।
साहुहिं/साहूहिं	वत्थु/वत्थू	पेच्छिअव्व/पेच्छिअव्वा/ पेच्छिअव्वु/ पेच्छेअव्व/पेच्छेअव्वा/ पेच्छेअव्वु **अथवा** पेच्छिएव्वउं/पेच्छेव्वउं/ पेच्छेवा	= साधुओं द्वारा वस्तु देखी जानी चाहिए।
साहुं/साहूं/ साहुएं/साहूएं/ साहुण/साहूण/ साहुणं/साहूणं	वत्थु/वत्थू/ वत्थुइं/वत्थूइं	पेच्छिअव्व/पेच्छिअव्वा/ पेच्छिअव्वइं/पेच्छिअव्वाइं/ पेच्छेअव्व/पेच्छेअव्वा/ पेच्छेअव्वइं/पेच्छेअव्वाइं **अथवा** पेच्छिएव्वउं/पेच्छेव्वउं/ पेच्छेवा	= साधु द्वारा वस्तुएं देखी जानी चाहिए।

(3) स्त्रीलिंग

जुवइए/जुवईए	धिइ/धिई	धारिअव्वा/धारिअव्व/ धारेअव्वा/धारेअव्व **अथवा** धारिएव्वउं/धारेव्वउं/ धारेवा	= युवती द्वारा धैर्य धारण किया जाना चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुवइहिं/जुवईहिं	मणि/ मणी/ मणिउ/ मणीउ/ मणिओ/ मणीओ	पेसिअव्वा/पेसिअव्व/ पेसिअव्वाउ/पेसिअव्वउ/ पेसिअव्वाओ/पेसिअव्वओ/ पेसेअव्व/आदि **अथवा** पेसिएव्वउं/पेसेव्वउं/पेसेवा	= युवतियों द्वारा रत्न भेजे जाने चाहिए।
चमूए/चमुए	तणु/तणू	बंधिअव्वा/बंधिअव्व/ बंधेअव्वा/बंधेअव्व **अथवा** बंधिएव्वउं/बंधेव्वउं/ बंधेवा	= सेना द्वारा शरीर बांधा जाना चाहिए।
चमूहिं/चमुहिं	तणु/ तणू/ तणुउ/ तणूउ/ तणुओ/ तणूओ	बंधिअव्वा/बंधिअव्व/ बंधिअव्वाउ/बंधिअव्वउ/ बंधिअव्वाओ/बंधिअव्वओ/ बंधेअव्वा/आदि **अथवा** बंधिएव्वउं/बंधेव्वउं/बंधेवा	= सेनाओं द्वारा शरीर बांधे जाने चाहिए।

---

1. उपर्युक्त सभी क्रियाएँ सकर्मक हैं।
2. विधि कृदन्त का प्रयोग भाववाच्य और कर्मवाच्य में होता है इसका कर्तृवाच्य में प्रयोग नहीं होता है।
3. अकर्मक क्रियाओं से भाववाच्य बनाये जाते हैं (पाठ 48) और सकर्मक क्रियाओं से कर्मवाच्य बनाये जाते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

4. **अन्य प्रयुक्त संज्ञाएँ**

पुल्लिग

मुणि = मुनि, **रिसि** = ऋषि
हत्थि = हाथी, **साहु** = साधु
सत्तु = शत्रु , **पाणि** = प्राणी

नपुंसकलिंग

अच्छि = आँख, **वत्थु** = पदार्थ

स्त्रीलिंग

धिइ = धैर्य, **मणि** = रत्न,
संति = शान्ति **पुत्ती** = पुत्री

5. **सकर्मक क्रियाएँ**

कीण = खरीदना, **रक्ख** = रक्षा करना, **लभ** = प्राप्त करना,
झाअ = ध्यान करना, **खम** = क्षमा करना, **पिब** = पीना,
गण = गिनना, **पेच्छ** = देखना, **धार** = धारण करना,
पेस = भेजना, **बंध** = बांधना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 62

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए -

(क) -

(1) भाई के द्वारा पेड़ सींचा जाना चाहिए। (2) रघुपति के द्वारा साधु बुलाए जाने चाहिए। (3) कवियों के द्वारा गीत गाए जाने चाहिए। (4) हाथी द्वारा सिंह मारा जाना चाहिए। (5) ऋषि द्वारा सूर्य की वन्दना की जानी चाहिए।

(ख) -

(1) मेरे द्वारा दही खाया जाना चाहिए। (2) हमारे द्वारा जल पिया जाना चाहिए। (3) उनके द्वारा पदार्थ वर्णन किए जाने चाहिए। (4) तुम्हारे द्वारा पदार्थ विचार किए जाने चाहिए। (5) उसके द्वारा आयु देखी जानी चाहिए।

(ग) -

(1) तुम्हारे द्वारा वैभव प्राप्त किया जाना चाहिए। (2) उसके द्वारा तृप्ति माँगी जानी चाहिए। (3) पृथ्वी द्वारा रत्न धारण किए जाने चाहिए। (4) युवती द्वारा भक्ति की जानी चाहिए। (5) मौसी द्वारा साड़ियाँ खरीदी जानी चाहिए। (6) तुम्हारे द्वारा रस्सी गूंथी जानी चाहिए। (7) उसके द्वारा गाएँ पाली जानी चाहिए। (8) हमारे द्वारा जामुन का पेड़ सींचा जाना चाहिए। (9) सासुओं द्वारा बहुएँ लाड़-प्यार की जानी चाहिए। (10) तुम्हारे द्वारा घास जलाई जानी चाहिये।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 63

विविध कृदन्त

(द्वितीया सहित)

वर्तमान कृदन्त

हेत्वर्थक कृदन्त

संबंधक भूत कृदन्त

(पूर्वकालिक क्रिया)

अपभ्रंश में (1) 'भोजन खाता हुआ', 'गाँव जाता हुआ' आदि भावों को प्रकट करने के लिए द्वितीया सहित वर्तमान कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। (2) 'भोजन खाने के लिए', 'गाँव जाने के लिए' आदि भावों को प्रकट करने के लिए द्वितीया सहित हेत्वर्थक कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। (3) 'भोजन करके', 'गाँव जाकर' आदि भावों को प्रकट करने के लिए द्वितीया सहित संबंधक भूत कृदन्त का प्रयोग किया जाता है। ये तीनों कृदन्त क्रियाओं से बनाए जाते हैं। वर्तमान कृदन्त शब्द विशेषण का कार्य करते हैं तथा अन्तिम दोनों (हे.कृ.) और (सं.कृ.) अव्यय का कार्य करते हैं। इतना होने पर भी अपने मूल स्वरूप '**क्रिया**' को नहीं छोड़ते हैं। अत: सकर्मक क्रियाओं से बनने पर कर्म का साथ लिये रहते हैं। कर्म में द्वितीया विभक्ति होती है, अत: इनके साथ कर्म में द्वितीया विभक्ति का प्रयोग किया जाता है। इनके प्रत्ययों के लिए देखें पाठ 27, 28 और 42।

सो	भोयण/ भोयणा/ भोयणु	जेमन्तु/जेमन्तो/जेमन्त/ जेमन्ता/जेममाणु/जेममाणो/ जेममाण/जेममाणा	उट्ठइ/आदि	= वह भोजन जीमता हुआ उठता है।
हउं	गामु/ गाम/ गामा	गच्छन्तु/गच्छन्तो/गच्छन्त/ गच्छन्ता/गच्छमाणु/गच्छमाणो/ गच्छमाण/गच्छमाणा	हसउं/आदि	= मैं गाँव जाता हुआ हँसता हूँ।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सो	तरु/तरू	सिंचन्तु/सिंचन्तो/ सिंचन्त/सिंचन्ता	थक्कइ/आदि	=	वह पेड़ को/पेड़ों को सींचता हुआ थकता है।
हउं	जइ/जई	कोकन्त/कोकन्ता/ कोकन्तु/कोकन्तो	हरिसउं/आदि	=	मैं यति/यतियों को बुलाता हुआ प्रसन्न होता हूँ।
सो	तरु/तरू	सिंचेवं/आदि	उट्ठइ/आदि	=	वह पेड़ को/पेड़ों को सींचने के लिए उठता है।
हउं	जइ/जई	कोकेवं/आदि	जग्गउं/आदि	=	मैं यति/यतियों को बुलाने के लिए जागता हूँ।
सो	तरु/तरू	सिंचि/आदि	हरिसइ/आदि	=	वह पेड़/पेड़ों को सींचकर प्रसन्न होता है।
हउं	जइ/जई	कोकि/आदि	हरिसउं/आदि	=	मैं यति/यतियों को बुलाकर प्रसन्न होता हूँ।

---

1. अपभ्रंश में इकारान्त, ईकारान्त पुल्लिग, उकारान्त, ऊकारान्त पुल्लिग, इकारान्त व उकारान्त नपुंसकलिंग, इकारान्त, ईकारान्त स्त्रीलिंग, उकारान्त, ऊकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञा शब्दों के **द्वितीया विभक्ति** के प्रत्यय प्रथमा विभक्ति के समान होते हैं (देखें पाठ-61)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 64

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए -

(क) -

(1) स्वामी रघुपति को नमन करते हुए उठता है। (2) कवि गुरु का सम्मान करते हुए बैठता है। (3) भाई उसको पुकारते हुए शरमाता है। (4) सिंह हाथी को मारते हुए डरता है। (5) व्यापारी मुनियों को सुनते हुए शोभता है। (6) वह दही खाते हुए सोता है। (7) तुम जल पीते हुए नाचते हो। (8) हम आग देखते हुए मुड़ते हैं। (9) वह गाँव के मुखिया की सेवा करता हुआ थकता है। (10) वह मधु को चखता हुआ लालच करता है।

(ख) -

(1) वह भक्ति करने के लिए उठता है। (2) तुम तृप्ति प्राप्त करने के लिए प्रयास करते हो। (3) वह पुत्री को कहने के लिए उत्साहित होता है। (4) हम रस्सी बाँधने के लिए प्रयत्न करते हैं। (5) वे गायों को देखने के लिए उठते हैं।

(ग) -

(1) स्वामी रघुपति को नमन करके प्रसन्न होता है। (2) कवि गुरु को प्रणाम करके बैठता है। (3) वह भक्ति करके जीता है। (4) तुम तृप्ति प्राप्त करके खुश होते हो। (5) वे गायों को देखकर उठते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 65

संज्ञा-सर्वनाम

संज्ञा शब्द चतुर्थी व षष्ठी एकवचन

	संज्ञाएँ	चतुर्थी व षष्ठी एकवचन
अकारान्त पुल्लिंग	**नरिंद** = राजा,	नरिंद/नरिंदा नरिंदसु/नरिंदासु नरिंदहो/नरिंदाहो/नरिंदस्सु
अकारान्त नपुंसकलिंग	**रज्ज** = राज्य,	रज्ज/रज्जा रज्जसु/रज्जासु रज्जहो/रज्जाहो/रज्जस्सु
आकारान्त स्त्रीलिंग	**माया** = माता,	माया/माय मायाहे/मायहे
इकारान्त स्त्रीलिंग	**जुवइ** = युवती,	जुवइ/जुवई जुवइहे/जुवईहे
ईकारान्त स्त्रीलिंग	**पुत्ती** = पुत्री	पुत्ती/पुत्ति पुत्तीहे/पुत्तिहे
उकारान्त स्त्रीलिंग	**धेणु** = गाय,	धेणु/धेणू धेणुहे/धेणूहे
ऊकारान्त स्त्रीलिंग	**जंबू** = जामुन का पेड़,	जंबू/जंबु जंबूहे/जंबुहे

सर्वनाम चतुर्थी व षष्ठी एकवचन

महु/मज्झु	= मेरा/मेरे लिए
तउ/तुज्झ/तुध्र	= तेरा/तेरे लिए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त/ता/तसु/तासु
तहो/ताहो/तस्सु = उसका/उसके लिए (पु. व. नपुं.)

ता/त/ताहे/तहे = उसका/उसके लिए (स्त्री)

अकर्मक क्रियाएँ

हस = हँसना,
जग्ग = जागना,
वड्ढ = बढ़ना,
णिज्झर = झरना,

सकर्मक क्रियाएँ

रक्ख = रक्षा करना,
इच्छ = चाहना,
गच्छ = जाना,
कोक = बुलाना

षष्ठी एकवचन

नरिंद
नरिंदा
नरिंदसु
नरिंदासु } पुत/पुत्ता/पुत्तु/पुत्तो — हसइ/आदि — = राजा का पुत्र हँसता है।
नरिंदहो
नरिंदाहो
नरिंदस्सु

रज्ज
रज्जा
रज्जसु
रज्जासु } सासण/सासणु/सासणा — तं — रक्खइ/आदि — = राज्य का शासन उसकी रक्षा करता है।
रज्जहो
रज्जाहो
रज्जस्सु

माया
माय
मायाहे } ससा/सस — जग्गइ/आदि — = माता की बहिन जागती है।
मायहे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

जुवइ जवई जुवइहे जुवईहे	माया/माय	जग्गइ/आदि	= युवती की माता जागती है।
पुत्ती पुत्ति पुत्तीहे पुत्तिहे	धणु/धण/धणा	वड्ढइ/आदि	= पुत्री का धन बढ़ता है।
धेणु धेणू धेणुहे धेणूहे	खीर/खीरु/खीरा	णिज्झरइ/आदि	= गाय का दूध झरता है।
जंबू जंबु जंबूहे जंबुहे	आउ/आऊ	वड्ढइ/आदि	= जामुन के पेड़ की आयु बढ़ती है।
महु मज्झु	पुत्तु/पुत्तो/पुत्त/पुत्ता सोक्ख/सोक्खु/सोक्खा	इच्छइ/आदि	= मेरा पुत्र सुख चाता है।
तउ तुज्झ तुध्र	पोत्त/पोत्ता/पोत्तु/पोत्तो घरु/घर/घरा	गच्छइ/आदि	= तुम्हारा पोता घर जाता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

त ता तसु तासु तहो ताहो तस्सु	पुत्त/पुत्तु/ पुत्ता/पुत्तो	मइं	कोकइ/ आदि	= उस (पुरुष) का पुत्र हो मुझको बुलाता है।
ता त ताहे तहे	पुत्त/पुत्तो/ पुत्तु/पुत्ता	पइं/तइं	कोकइ/आदि	= उस (स्त्री) का पुत्र तुमको बुलाता है।

चतुर्थी एकवचन

सो	नरिंद/नरिंदा/नरिंदसु/ नरिंदासु/नरिंदहो/ नरिंदाहो/नरिंदस्सु	गंथ/गंथा/गंथु	कीणइ/आदि	= वह राजा के लिए ग्रन्थ खरीदता है।
तुहुं	परिक्खा/परिक्ख/ परिक्खाहे/परिक्खहे	गंथ/गंथा/गंथु	पढहि/आदि	= तुम परीक्षा के लिए पुस्तक पढ़ते हो।

नोट - इसी प्रकार चतुर्थी के अन्य वाक्य बना लेने चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 66

संज्ञा

संज्ञा शब्द चतुर्थी व षष्ठी एकवचन

	संज्ञाएँ	चतुर्थी व षष्ठी एकवचन
इकारान्त पुल्लिग	**सामि** = स्वामी	सामि/सामी
ईकारान्त पुल्लिग	**गामणी** = गाँव का मुखिया	गामणी/गामणि
उकारान्त पुल्लिग	**साहु** = साधु	साहु/साहू
ऊकारान्त पुल्लिग	**सयंभू** = स्वयंभू	सयंभू/सयंभु
इकारान्त नपुंसकलिंग	**वारि** = जल	वारि/वारी
उकारान्त नपुंसकलिंग	**वत्थु** = पदार्थ	वत्थु/वत्थू

अकर्मक क्रियाएँ		**सकर्मक क्रियाएँ**
गल = गलना,	**फुर** = प्रकट होना	**कर** = करना
चुअ = टपकना,	**जग्ग** = जागना	**पढ** = पढ़ना

षष्ठी एकवचन

सामि/सामी	गव्व/गव्वु/ गव्वो/गव्वा		गलइ/आदि = स्वामी का गर्व गलता है।
गामणी/गामणि	पुत्त/पुत्तु/ पुत्तो/पुत्ता	गंथ/गंथा गंथु	पढइ/आदि = गाँव के मुखिया का पुत्र ग्रन्थ पढ़ता है।
साहु/साहू	तेउ/तेऊ		फुरइ/आदि = साधु का तेज प्रकट होता है।
वारि/वारी	बिन्दु/बिन्दू		चुअइ/आदि = जल की बूँद टपकती है।
सयंभू/सयंभु	पुत्त/पुत्तु/पुत्तो/ पुत्ता		जग्गइ/आदि = स्वयंभू का पुत्र जागता है।
सो	वत्थु/वत्थू	णाण/णाणा/ णाणु	करइ = वह पदार्थ का ज्ञान करता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्थी एकवचन

हउं	सामि/सामी		जागरउं/आदि	= मैं स्वामी के लिए जागता हूँ।
तुहुं	साहु/साहू	भोयण/भोयणा	इच्छहि/आदि	= तुम साधु के लिए भोजन चाहते हो।
सो	गामणी/गामणि	गाम/गामु/गामा	गच्छइ/आदि	= वह गाँव के मुखिया के लिए गाँव जाता है।

नोट - इसी प्रकार दूसरे वाक्य बना लेने चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 67

संज्ञा-सर्वनाम

संज्ञा शब्द चतुर्थी व षष्ठी बहुवचन

	संज्ञाएँ	चतुर्थी व षष्ठी बहुवचन
अकारान्त पुल्लिग	**नरिंद** = राजा,	नरिंद/नरिंदा
		नरिंदहं/नरिंदाहं
अकारान्त नपुंसकलिंग	**रज्ज** = राज्य,	रज्ज/रज्जा
		रज्जहं/रज्जाहं
आकारान्त स्त्रीलिंग	**माया** = माता,	माया/माय
		मायाहु/मायहु
इकारान्त स्त्रीलिंग	**जुवइ** = युवती,	जुवइ/जुवई
		जुवइहु/जुवईहु
ईकारान्त स्त्रीलिंग	**पुत्ती** = पुत्री,	पुत्ती/पुत्ति
		पुत्तीहु/पुत्तिहु
उकारान्त स्त्रीलिंग	**धेणु** = गाय,	धेणु/धेणू
		धेणुहु/धेणूहु
ऊकारान्त स्त्रीलिंग	**जंबू** = जामुन का पेड़,	जंबू/जंबु
		जंबूहु/जंबुहु

सर्वनाम चतुर्थी व षष्ठी बहुवचन

अम्हहं	= हमारे लिए/हमारा
तुम्हहं	= तुम सब के लिए/तुम सब का
त/ता/तहं/ताहं	= उनके लिए (पुल्लिग)/उनका
ता/त/ताहु/तहु	= उन (स्त्रियों) के लिए/उन (स्त्रियों) का

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अकर्मक क्रियाएँ	सकर्मक क्रियाएँ
हस = हँसना,	**रक्ख** = रक्षा करना,
जग्ग = जागना,	**इच्छ** = चाहना,
वड्ढ = बढ़ना,	**गच्छ** = जाना,
णिज्झर = झरना,	**कोक** = बुलाना

षष्ठी बहुवचन

नरिंद नरिंदा नरिंदहं नरिंदाहं	पुत्त/पुत्ता	हसहिं/आदि = राजाओं के पुत्र हँसते हैं।
रज्ज रज्जा रज्जहं रज्जाहं	सासण/सासणु/सासणा तं	रक्खइ/आदि = राज्यों का शासन उसकी रक्षा करता है।
माया माय मायाहु मायहु	ससा/सस	जग्गइ/आदि = माताओं की बहिन जागती है।
जुवइ जुवई जुवइहु जुवईहु	माया/माय	जग्गइ/आदि = युवतियों की माता जागती है।
पुत्ती पुत्ति पुत्तीहु पुत्तिहु	धणु/धण/धणा	वड्ढइ/आदि = पुत्रियों का धन बढ़ता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

धेणु धेणू धेणुहु धेणूहु	खीर/खीरा/खीरु		णिज्झरइ/आदि	= गायों का दूध झरता है।
जंबू जंबु जंबूहु जंबुहु	आउ/आऊ		वड्ढइ/आदि	= जामुनों के पेड़ की आयु बढ़ती है।
अम्हहं	पुत्तु/पुत्तो/ पुत्त/पुत्ता	सोक्ख/सोक्खु/ सोक्खा	इच्छइ/आदि	= हमारा पुत्र सुख चाहता है।
तुम्हहं	पोत्त/पोत्ता/पोत्तु/ पोत्तो	घरु/घर/घरा	गच्छइ/आदि	= तुम दोनों का पोता घर जाता है।
त ता तहं ताहं	पुत्त/पुत्ता	मइं	कोकहिं/आदि	= उन (पुरुषों) के पुत्र मुझे बुलाते हैं।
ता त ताहु तहु	पुत्त/पुत्ता	पइं/तइं	कोकहिं/आदि	= उन (स्त्रियों) के पुत्र तुमको बुलाते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्थी बहुवचन

सो	नरिंद/नरिंदा नरिंदहं/नरिंदाहं	गंथ/गंथा/गंथु	कीणइ/आदि	=	वह राजाओं के लिए ग्रन्थ खरीदता है।
तुहुं	परिक्खा/परिक्ख/ परिक्खाहु/परिक्खहु	गंथ/गंथा/गंथु	पढहि/आदि	=	तुम परीक्षाओं के लिए पुस्तक पढ़ते हो।
तुहुं	अम्हहं		णच्चहि/आदि	=	तुम हमारे लिए नाचते हो।

नोट - इसी प्रकार चतुर्थी के अन्य वाक्य बना लेने चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 68

संज्ञा

संज्ञा शब्द चतुर्थी व षष्ठी बहुवचन

	संज्ञाएँ	चतुर्थी व षष्ठी बहुवचन
इकारान्त पुल्लिग	**सामि** = स्वामी	सामि/सामी सामिहं/सामीहं सामिहुं/सामीहुं
ईकारान्त पुल्लिग	**गामणी** = गाँव का मुखिया	गामणी/गामणि गामणीहं/गामणिहं गामणीहुं/गामणिहुं
उकारान्त पुल्लिग	साहु = साधु	साहु/साहू साहुहं/साहूहं साहुहुं/साहूहुं
ऊकारान्त पुल्लिग	**सयंभू** = स्वयंभू	सयंभू/सयंभु सयंभूहं/सयंभुहं सयंभूहुं/सयंभुहुं
इकारान्त नपुंसकलिंग	**वारि** = जल	वारि/वारी वारिहं/वारीहं वारिहुं/वारीहुं
उकारान्त नपुंसकलिंग	**वत्थु** = पदार्थ	वत्थु/वत्थू वत्थुहं/वत्थूहं वत्थुहुं/वत्थूहुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अकर्मक क्रियाएँ

गल = गलना, **फुर** = प्रकट होना

चुअ = टपकना **जग्ग** = जागना

इच्छ = इच्छ करना

सकर्मक क्रियाएँ

कर = करना

पढ = पढ़ना

षष्ठी बहुवचन

	सामि/सामी/ सामिहं/सामीहं/ सामिहुं/सामीहुं	गव्व/गव्वु/ गव्वो/गव्वा	गलइ/आदि	=	स्वामियों का गर्व गलता है।
	साहु/साहू/ साहुहं/साहूहं/ साहुहुं/साहूहुं	तेउ/तेऊ	फुरइ/आदि	=	साधुओं का तेज प्रकट होता है।
सो	वत्थु/वत्थू/ वत्थुहं/वत्थूहं/ वत्थुहुं/वत्थूहुं	णाण/णाणा/ णाणु	करइ/आदि	=	वह पदार्थों का ज्ञान करता है।
हउं	सामि/सामी/आदि		जागरउं/आदि	=	मैं स्वामियों के लिए जागता हूँ।
तुहुं	साहु/साहू/आदि	भोयणा/ भोयणा	इच्छहि/आदि	=	तुम साधुओं के लिए भोजन चाहते हो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 69

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए -

(क) -

(1) राजा का पुत्र राम को प्रणाम करता है/करे/करेगा।

(2) मामा की बहिन गर्व करती है/करे/करेगी।

(3) राज्य का शासन उसकी रक्षा करता है/करे/करेगा।

(4) राम का सुख मेरा सुख है/हो/होगा।

(5) सीता की माता कथा सुनती है/सुने/सुनेगी।

(6) मैं गंगा की कथा सुनता हूँ/सुनूँ/सुनूँगा।

(7) मेरा पुत्र सुख चाहता है/चाहे/चाहेगा।

(8) उसका पुत्र घर जाता है/जावे/जायेगा।

(9) वह नर्मदा का पानी पीता है/पीए/पीयेगा।

(10) उसकी माता तुमको पालती है/पाले/पालेगी।

(ख) -

(1) राजा का पुत्र राम के लिए गठरी माँगता है/माँगे/माँगेगा।

(2) वह उसकी पुस्तक परीक्षा के लिए पढ़ता है/पढ़े/पढ़ेगा।

(3) मेरा पुत्र सुख के लिए हँसता है/हँसे/हँसेगा।

(4) वह शरीर के लिए नर्मदा का पानी पीता है/पीए/पीयेगा।

(5) राम का सुख सबके लिए सुख है/हो/होगा।

(ग) -

(1) स्वामियों के भाई उसको नमस्कार करते हैं।

(2) कवियों के गुरु हमको देखते हैं।

(3) राजाओं के दुश्मन लड़ने के लिए विचार करते हैं।

(4) हमारे गुरु भोजन जीमते हैं।

(5) मेरी मौसियाँ साड़ी खरीदती हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 70

संज्ञा-सर्वनाम

संज्ञा शब्द पंचमी एकवचन

	संज्ञाएँ	पंचमी एकवचन
अकारान्त पुल्लिंग	**नरिंद** = राजा	नरिंदहे/नरिंदाहे
		नरिंदहु/नरिंदाहु
अकारान्त नपुंसकलिंग	**रज्ज** = राज्य	रज्जहे/रज्जाहे
		रज्जहु/रज्जाहु
आकारान्त स्त्रीलिंग	**माया** = माता	मायाहे/मायहे
इकारान्त स्त्रीलिंग	**जुवइ** = युवती	जुवइहे/जुवईहे
ईकारान्त स्त्रीलिंग	**पुत्ती** = पुत्री	पुत्तीहे/पुत्तिहे
उकारान्त स्त्रीलिंग	**धेणु** = गाय	धेणुहे/धेणूहे
ऊकारान्त स्त्रीलिंग	**जंबू** = जामुन का पेड़	जंबूहे/जंबुहे

सर्वनाम पंचमी एकवचन

महु/मज्झु	= मेरे से
तउ/तुज्झ/तुध्र	= तेरे से
तहां/ताहां	= उससे (पुरुष)
ताहे/तहे	= उससे (स्त्री)

अकर्मक क्रियाएँ		**सकर्मक क्रियाएँ**
डर = डरना,	**पड** = गिरना	**धाव** = दौड़ना
उप्पज्ज = उत्पन्न होना,	**णीसर** = निकलना	**आगच्छ** = आना

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

	पंचमी एकवचन		
सो	नरिंदहे/नरिंदाहे/ नरिंदहु/नरिंदाहु	डरइ/आदि	= वह राजा से डरता है।
पुत्त/पुत्ता/पुत्तो/ पुत्तु	मायाहे/मायहे	डरइ/आदि	= पुत्र माता से डरता है।
माया/माय	पुत्तीहे/पुत्तिहे	गंथ/गंथु/गंथा पढइ/आदि	= माता पुत्री से ग्रन्थ पढ़ती है।

अभ्यास

(1) बालक सर्प से डरता है। (2) खेत से अन्न उत्पन्न होता है। (3) वह गाय से डरता है। (4) जामुन के पेड़ से जामुन गिरता है। (5) खेत से कुत्ता दौड़ता है। (6) मनुष्य हिंसा से डरे। (7) मकान की छत से बालक गिरता है। (8) पर्वत से गंगा निकलती है। (9) वह मुझसे डरता है। (10) वह तुझसे पुस्तक पढ़ता है। (11) बीज से वृक्ष उत्पन्न होता है। (12) पुत्र पिता से छिपता है।

---

1. निम्नलिखित में पंचमी विभक्ति होती है -

(1) जिस वस्तु से किसी को हटाया जाय उसमें, जैसे - **पेड़** से जामुन गिरता है।

(2) जिससे छिपना चाहता है उसमें, जैसे - **पिता** से छिपता है।

(3) भय के कारण में पंचमी होती है, जैसे - **सर्प** से डरता है।

(4) जिससे नियमपूर्वक विद्या पढ़ी जाए उसमें, जैसे - मैं **तुझसे** पुस्तक पढ़ता हूँ।

(5) उत्पन्न होना अर्थ में पंचमी होती है, जैसे - बीज से वृक्ष उत्पन्न होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 71

संज्ञा

संज्ञा शब्द पंचमी एकवचन

	संज्ञाएँ	पंचमी एकवचन
इकारान्त पुल्लिग	**सामि** = स्वामी	सामिहे/सामीहे
उकारान्त पुल्लिग	**साहु** = साधु	साहुहे/साहूहे
इकारान्त नपुंसकलिंग	**वारि** = जल	वारिहे/वारीहे
उकारान्त नपुंसकलिंग	**वत्थु** = पदार्थ	वत्थुहे/वत्थूहे

	पंचमी एकवचन			
सो	सामिहे/सामीहे	डरइ/आदि	=	वह स्वामी से डरता है।
सो	साहुहे/साहूहे	पढइ/आदि	=	वह साधु से पढ़ता है।
	वारिहे/वारीहे	कमल/कमला/कमलु उप्पज्जइ/आदि	=	जल से कमल उत्पन्न होता है।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 72

संज्ञा

संज्ञा शब्द पंचमी बहुवचन

	संज्ञाएँ	पंचमी बहुवचन
अकारान्त पुल्लिग	**नरिंद** = राजा	नरिंदहुं/नरिंदाहुं
इकारान्त पुल्लिग	**सामि** = स्वामी	सामिहुं/सामीहुं
उकारान्त पुल्लिग	**साहु** = साधु	साहुहुं/साहूहुं
अकारान्त नपुंसकलिंग	**रज्ज** = राज्य	रज्जहुं/रज्जाहुं
इकारान्त नपुंसकलिंग	**वारि** = जल	वारिहुं/वारीहुं
उकारान्त नपुंसकलिंग	**वत्थु** = पदार्थ	वत्थुहुं/वत्थूहुं

	पंचमी बहुवचन	
सो	नरिंदहुं/नरिंदाहुं	डरइ/आदि = वह राजाओं से डरता है।
तुहुं	सामिहुं/सामीहुं	डरि/आदि = तुम स्वामियों से डरो।
हउं	साहुहुं/साहूहुं	पढ़उं/आदि = मैं साधुओं से पढ़ता हूँ।

नोट - इसी प्रकार अन्य वाक्य बना लेने चाहिए।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 73

संज्ञा-सर्वनाम

संज्ञा शब्द पंचमी बहुवचन

	संज्ञाएँ	पंचमी बहुवचन
आकारान्त स्त्रीलिंग	**माया** = माता	मायाहु/मायहु
इकारान्त स्त्रीलिंग	**जुवइ** = युवती	जुवइहु/जुवईहु
ईकारान्त स्त्रीलिंग	**पुत्ती** = पुत्री	पुत्तीहु/पुत्तिहु
उकारान्त स्त्रीलिंग	**धेणु** = गाय	धेणुहु/धेणूहु
ऊकारान्त स्त्रीलिंग	**जंबू** = जामुन का पेड़	जंबूहु/जंबुहु

सर्वनाम पंचमी बहुवचन

अम्हहं = हम (सब) से
तुम्हहं = तुम (सब) से
तहुं/ताहुं = उनसे (पुल्लिग, नपुंसकलिंग)
ताहु/तहु = उनसे (स्त्रीलिंग)

	पंचमी बहुवचन	
अम्हे/अम्हइं	मायाहु/मायुह	डरहुं/आदि = हम सब माताओं से डरते हैं।
ते	जुवइहु/जुवईहु	लुक्कन्ति/आदि = वे सब युवतियों से छिपते हैं।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 74

संज्ञा-सर्वनाम

संज्ञा शब्द सप्तमी एकवचन

	संज्ञाएँ	सप्तमी एकवचन
अकारान्त पुल्लिग	**नरिंद** = राजा	नरिंदि/नरिंदे
अकारान्त नपुंसकलिंग	**रज्ज** = राज्य	रज्जि/रज्जे
इकारान्त पुल्लिग	**सामि** = स्वामी	सामिहि/सामीहि
ईकारान्त पुल्लिग	**गामणी** = गाँव का मुखिया	गामणीहि/गामणिहि
उकारान्त पुल्लिग	**साहु** = साधु	साहुहि/साहूहि
ऊकारान्त पुल्लिग	**सयंभू** = स्वयंभू	सयंभूहि/सयंभुहि
इकारान्त नपुंसकलिंग	**वारि** = जल	वारिहि/वारीहि
उकारान्त नपुंसकलिंग	**वत्थु** = पदार्थ	वत्थुहि/वत्थूहि
आकारान्त स्त्रीलिंग	**माया** = माता	मायाहिं/मायहिं
इकारान्त स्त्रीलिंग	**जुवइ** = युवती	जुवइहिं/जुवईहिं
ईकारान्त स्त्रीलिंग	**पुत्ती** = पुत्री	पुत्तीहिं/पुत्तिहिं
उकारान्त स्त्रीलिंग	**धेणु** = गाय	धेणुहिं/धेणूहिं
ऊकारान्त स्त्रीलिंग	**जंबू** = जामुन का पेड़	जंबूहिं/जंबुहिं

सर्वनाम सप्तमी एकवचन

मइं	= मुझ में, मुझ पर
पइं, तइं	= तुम में, तुम पर
तहिं, ताहिं	= उन पर (पुल्लिग, नपुंसकलिंग)
ताहिं/तहिं	= उन पर (स्त्रीलिंग)

अभ्यास

(1) वह घर में नाचता है। (2) आकाश में बादल गरजते हैं।

(3) वह परीक्षा में मूर्च्छित होती है। (4) नर्मदा में पानी सूखता है।

(5) सीता घर में कथा सुनती है। (6) वह पोटली पर बैठता है।

(7) बुढ़ापे में वाणी थकती है। (8) राम के राज्य में लक्ष्मी बढ़ती है।

(9) उसकी माता घर में पुत्र को पालती है। (10) तुम हँसकर घर में नाचते हो।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 75

संज्ञा-सर्वनाम

संज्ञा शब्द सप्तमी बहुवचन

	संज्ञाएँ	सप्तमी बहुवचन
अकारान्त पुल्लिग	**नरिंद** = राजा	नरिंदहिं/नरिंदाहिं
अकारान्त नपुंसकलिंग	**रज्ज** = राज्य	रज्जहिं/रज्जाहिं
इकारान्त पुल्लिग	**सामि** = स्वामी	सामिहिं/सामीहिं
		सामिहुं/सामीहुं
ईकारान्त पुल्लिग	**गामणी** = गाँव का मुखिया	गामणीहिं/गामणिहिं
		गामणीहुं/गामणिहुं
उकारान्त पुल्लिग	**साहु** = साधु	साहुहिं/साहूहिं
		साहुहुं/साहूहुं
ऊकारान्त पुल्लिग	**सयंभू** = स्वयंभू	सयंभूहिं/सयंभुहिं
		सयंभूहुं/सयंभुहुं
इकारान्त नपुंसकलिंग	**वारि** = जल	वारिहिं/वारीहिं
उकारान्त नपुंसकलिंग	**वत्थु** = पदार्थ	वत्थुहिं/वत्थूहिं
आकारान्त स्त्रीलिंग	**माया** = माता	मायाहिं/मायहिं
इकारान्त स्त्रीलिंग	**जुवइ** = युवती	जुवइहिं/जुवईहिं
ईकारान्त स्त्रीलिंग	**पुत्ती** = पुत्री	पुत्तीहिं/पुत्तिहिं
उकारान्त स्त्रीलिंग	**धेणु** = गाय	धेणुहिं/धेणूहिं
ऊकारान्त स्त्रीलिंग	**जंबू** = जामुन का पेड़	जंबूहिं/जंबुहिं

सर्वनाम सप्तमी बहुवचन

अम्हासु	= हमारे में
तुम्हासु	= तुम्हारे में
तहिं/ताहिं	= उनमें (पुल्लिग, नपुंसकलिंग)
ताहिं/तहिं	= उनमें (स्त्रीलिंग)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 76

संज्ञा

संज्ञा शब्द सम्बोधन एकवचन व बहुवचन

1. संबोधन के एकवचन में प्रथमा एकवचन के ही प्रत्यय लगाये जाते हैं।

2. संबोधन के बहुवचन में प्रथमा बहुवचन के प्रत्ययों के अतिरिक्त 'हो' प्रत्यय भी लगाया जाता है।

नरिंदु/नरिंदो	= हे राजा
नरिंद/नरिंदा	
पुत्ती/पुत्ति	= हे पुत्री
साहुहो/साहूहो	= हे साधुओ आदि

3. सर्वनाम शब्दों का संबोधन नहीं होता है।

अभ्यास

(1) हे स्वामी ! आप हमारी रक्षा करें।
(2) हे राजा ! आपके राज्य में सुख नहीं है।
(3) हे मित्र ! तुम मेरे घर पर आओ।
(4) हे माता ! तुम बालकों को पालो।
(5) हे सीता ! जंगल में बहुत दु:ख है।
(6) हे पुत्र ! सत्य बोलो
(7) हे युवती ! तुम हँसो।
(8) बालको ! तुम सब पुस्तकें पढ़ो।
(9) मित्रो ! आप सब राज्य से डरो।
(10) साधुओ ! संयम पालो।

1. संबोधन में किसी को पुकारना या बुलाना प्रकट होता है। इसके चिह्न हैं - हे !, अरे !, ओ ! आदि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 77

प्रेरणार्थक प्रत्यय

(क) सामान्य क्रियाओं के प्रेरणार्थक प्रत्यय **अ आव**

क्रियाएँ	प्रत्यय	
	अ	आव
हस = हँसना	हस+अ = हास (हँसाना) (उपान्त्य 'अ' का 'आ' हो जाता है)	हस+आव = हसाव (हँसाना)
भिड = भिड़ना	भिड+अ = भेड (भिड़ाना) (उपान्त्य, 'इ' का 'ए' हो जाता है)	भिड+आव = भिडाव (भिड़ाना)
लुक्क = छिपना	लुक्क+अ = लोक्क (उपान्त्य 'उ' का 'ओ' हो जाता है)	लुक्क+आव = लुक्काव (छिपाना)
रूस = रूसना	रूस+अ = रूस (दीर्घ 'ऊ' में कोई परिवर्तन नहीं होता है)	रूस+आव = रूसाव (रुसाना)
जीव = जीना	जीव+अ = जीव (दीर्घ 'ई' में कोई परिवर्तन नहीं होता है)	जीव+आव = जीवाव (जिलाना)
ठा = ठहरना	ठा+अ = ठाअ (ठहराना)	ठा+आव = ठाव (ठहराना)
णच्च = नाचना	णच्च+अ = णाच्च→णच्च (उपान्त्य 'अ' का 'आ' होता है, पर संयुक्ताक्षर आगे होने पर 'अ' ही रहता है)	णच्च+आव = णच्चाव (नचाना)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नोट - क्रियाओं में प्रेरणार्थक के प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् कालों के प्रत्यय जोड़ने से विभिन्न कालों के प्रेरणार्थक रूप बन जाते हैं। जैसे - हासइ = हँसाता है, हसावइ = हँसाता है (वर्तमानकाल अन्य पुरुष एकवचन)

(ख) कर्मवाच्य और भाववाच्य के प्रेरणार्थक प्रत्यय आवि, 0

क्रियाएँ		**प्रत्यय**
	आवि	**0**
हस = हँसना	हस+आवि = हसावि	हस+0 = हास (उपान्त्य 'अ' का 'आ' हो जाता है)
कर = करना	कर+आवि = करावि	कर+0 = कार (उपान्त्य 'अ' का 'आ' हो जाता है)
लुक्क = छिपना	लुक्क+आवि = लुक्कावि	लुक्क+0 = लुक्क
भिड = भिड़ना	भिड+आवि = भिडावि	भिड+0 = भिड
रूस = रूसना	रूस+आवि = रूसावि	रूस+0 = रूस
ठा = ठहरना	ठा+आवि = ठाआवि	ठा+0 = ठा

नोट - क्रियाओं में प्रेरणार्थक के प्रत्यय जोड़ने के पश्चात् कर्मवाच्य-भाववाच्य के प्रत्यय जोड़े जाते हैं।

करावि	+इज्ज/इय = करावेज्ज/करावेय	= करवाया जाना
रूसावि	+इज्ज/इय = रूसावेज्ज/रूसावेय	= रुसाया जाना
कार	+ इज्ज/इय = कारेज्ज/कारेय	= करवाया जाना
रूस	+ इज्ज/इय = रूसेज्ज/रूसेय	= रुसाया जाना
ठा	+ इज्ज/इय = ठाइज्ज/ठाइय	= ठहराया जाना

इसके पश्चात् काल-बोधक प्रत्यय लगाये जाते हैं। जैसे - करावेज्जइ, करावेयइ, करावेज्जइ, करावेयहि, करावेज्जउं, करावेयउं आदि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ग) कृदन्तों के प्रेरणार्थक प्रत्यय — आवि, 0

क्रियाएँ	प्रत्यय	
	आवि	0
हस = हँसना	हस+आवि = हसावि	हस+0 = हास
कर = करना	कर+आवि = करावि	कर+0 = कार

प्रेरणार्थक भूतकालिक कृदन्त

हसावि+अ/य	= हसाविअ/हसाविय
कार+अ/य	= कारिअ/कारिय

प्रेरणार्थक वर्तमान कृदन्त

हसावि+न्त/माण	= हसाविन्त/हसाविमाण
हास +न्त/माण	= हासन्त/हासमाण
करावि+न्त/माण	= करावेन्त/करावेमाण
कार + न्त/माण	= कारन्त/कारमाण

प्रेरणार्थक विधि कृदन्त

हसावि+अव्व	= हसाविअव्व
हसावि+इएव्वउं	= हसाविएव्वउं
हसावि+एव्वउं	= हसावेव्वउं
हसावि+एवा	= हसावेवा
हास +अव्व	= हासेअव्व, हासिअव्व
हास +इएव्वउं	= हासिएव्वउं
हास +एव्वउं	= हासेव्वउं
हास +एवा	= हासेवा

प्रेरणार्थक सम्बन्धक भूतकृदन्त

हसावि+इ	= हसाविइ
हसावि+इउ	= हसाविउ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हसावि+इवि = हसाविवि
हसावि+अवि = हसावविं
हसावि+एवि = हसावेवि
हसावि+एविणु = हसावेविणु
हसावि+एप्पि = हसावेप्पि
हसावि+एप्पिणु = हसावेप्पिणु

हास +इ = हासि
हास +इउ = हासिउ
हास +इवि = हासिवि
हास +अवि = हासवि
हास +एवि = हासेवि
हास +एविणु = हासेविणु
हास +एप्पि = हासेप्पि
हास +एप्पिणु = हासेप्पिणु

प्रेरणार्थक हेत्वर्थक कृदन्त

हसावि+एवं = हसावेवं
हसावि+अण = हसावण
हसावि+अणहं = हसावणहं
हसावि+अणहिं = हसावणहिं

हास +एवं = हासेवं
हास +अण = हासण
हास +अणहं = हासणहं
हास +अणहिं = हासणहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 78

स्वार्थिक प्रत्यय

संज्ञाओं में स्वार्थिक प्रत्यय जोड़ने पर मूल अर्थ में कोई परिवर्तन नहीं होता है।

स्वार्थिक प्रत्यय - अ, अड, उल्ल

इनमें से कोई भी दो अथवा कभी-कभी तीनों एक साथ संज्ञाओं में जोड़ दिए जाते हैं। इस प्रकार कुल स्वार्थिक प्रत्यय सात हो जाते हैं - (1) अ (2) अड (3) उल्ल (4) अडअ (5) उल्लअ (6) उल्लअड (7) उल्लअडअ। स्वार्थिक प्रत्यय लगाने के पश्चात् विभक्तियाँ जोड़ी जाती हैं।

जीव+अड = जीवड = जीव

भाव+अडअ = भावडअ = भाव

अप्प+अ = अप्पअ = आत्मा

बाहुबल+उल्ल+अड+अ = बाहुबलुल्लडअ = भुजा का बल

स्त्री

वेल्ल+अड = वेल्लड→वेल्लडी = बेलडी (स्त्रीलिंग में 'ई' प्रत्यय जोड़ा जाता है)

स्त्री

कुडी+उल्ल = कुडुल्ल→कुडुल्ली = झोपड़ी (स्त्रीलिंग में 'ई' प्रत्यय जोड़ा जाता है)

नोट - उपर्युक्त स्वार्थिक प्रत्ययों के अतिरिक्त **'इय'**, **'क्क'**, **'एं'**, **'उ'** **'इल्ल'** आदि प्रत्यय भी स्वार्थिक कहे जाते हैं। पुण→पुणु, विण→विणु, पढम+इल्ल = पढमिल्ल, गुरु+क्क = गुरुक्क, आदि।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 79

विविध सर्वनाम

ज (पु. नपुं.) = जो,	एत (पु. नपुं.) = यह
जा (स्त्री) = जो,	एता (स्त्री) = यह
क (पु. नपुं.) = कौन,	इम (पु. नपुं.) = यह
का (स्त्री) = कौन,	इमा (स्त्री) = यह
आय (पु. नपुं.) = यह,	कवण (पु. नपुं.) = कौन, क्या, कौनसा
आया (स्त्री) = यह,	कवणा (स्त्री) = कौन, क्या, कौनसा
	काँइ (पु. नपुं. स्त्री) = कौन, क्या, कौनसा

उपर्युक्त सर्वनामों के रूप शब्द-रूपों में देखकर निम्नलिखित वाक्यों की अपभ्रंश में रचना कीजिए -

अभ्यास

(क) -

(1) जो मनुष्य थकता है, वह सोता है। (2) जो गुस्सा करता है, वह छिपता है। (3) जिसके द्वारा सोया जाता है, उसके द्वारा हँसा जाता है। (4) जिसका शरीर थका हुआ है, उसका बुढ़ापा बढ़ा हुआ है। (5) मैं जिसको बुलाता हूँ, वह तुम हो। (6) जिस लकड़ी पर तुम बैठे हो, वह मेरी है। (7) तुम जिससे डरते हो, उससे मैं डरता हूँ।

(ख) -

(1) यह मनुष्य हँसता है। (2) ये मनुष्य हँसते हैं। (3) वह यह ग्रन्थ पढ़ता है। (4) वे ये ग्रन्थ पढ़ते हैं। (5) इस मनुष्य के द्वारा हँसा जाता है। (6) इन मनुष्यों के द्वारा ग्रन्थ पढ़े जाते हैं। (7) मैं इसके लिए जीता हूँ। (8) वह इसके लिए जीती है। (9) मैं यह व्रत पालता हूँ। (10) इस मनुष्य में ज्ञान है।

(ग) -

(1) तुम क्या करते हो ? (2) तुम किन कार्यों को करते हो ? (3) वह किससे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पानी पीता है ? (4) वह किसका पुत्र है ? (5) वह किससे डरता है ? (6) तुम किसके लिए जीते हो ? (7) किसमें तुम्हारी भक्ति है ?

(घ) -

(1) कौन नाचता है ? (2) वह कौनसा व्रत पालता है ? (3) किसके द्वारा पानी पिया गया ? (4) किसके लिए तुम उठते हो ? (5) वह किसका पुत्र है ? (6) यह किसकी पुस्तक है ? (7) किस राज्य की तुम रक्षा करते हो ? (8) किस घर में वह रहता है ?

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 80

अव्यय

जाम	= जब तक,	**जइ**	= यदि
ताम	= तब तक,	**तो**	= तो
जेत्थु	= जहाँ,	**जहा**	= जिस प्रकार
तेत्थु	= वहाँ,	**तहा**	= उस प्रकार
जेम	= जिस प्रकार,	**जह**	= जैसे
तेम	= उस प्रकार,	**तह**	= वैसे
केत्थु	= कहाँ,	**इय**	= इस प्रकार
एत्थु	= यहाँ,	**मा**	= नहीं
अज्जु	= आज,	**तम्हा**	= इसलिए
म	= मत,	**जम्हा**	= चूँकि
ण	= नहीं,	**विणा**	= बिना
णवि	= नहीं,	**वि**	= भी

अभ्यास

(1) जब तक तुम जागते हो, तब तक मैं चित्र देखता हूँ। (2) जहाँ तुम्हारा गाँव है, वहाँ मेरा घर है। (3) जिस प्रकार वह सुख चाहता है, उसी प्रकार मैं सुख चाहता हूँ। (4) तुम कहाँ रहतें हो ? (5) मैं यहाँ रहता हूँ। (6) तुम मत हँसो। (7) राम नहीं उठता है। (8) यदि तुम कहते हो, तो मैं यह काम करता हूँ।

---

1. "ऐसे शब्द जिनके रूप में कोई विकार-परिवर्तन उत्पन्न न हो और जो सदा एक से- सभी विभक्ति, सभी वचन और सभी लिंगों में एक समान रहें, अव्यय कहलाते हैं।" (लिंग, विभक्ति और वचन के अनुसार जिनके रूपों में घटती-बढ़ती न हो, वह अव्यय है।) (अभिनव प्राकृत व्याकरण, 213)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 81

क्रिया-रूप व प्रत्यय

(1) वर्तमानकाल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	उं. मि	हुं, मो, मु , म
मध्यम पुरुष	हि, सि, से	हु, ह, इत्था
अन्य पुरुष	इ, ए	हिं, न्ति, न्ते, इरे

हस = हँसना

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हसउं, हसमि, हसामि, हसेमि	हसहुं , हसमो, हसमु हसम (अन्य रूप देखें पाठ 5)
मध्यम पुरुष	हसहि, हससि, हससे	हसहु, हसह, हसित्था
अन्य पुरुष	हसइ, हसए	हसहिं, हसन्ति, हसन्ते, हसिरे

नोट - वर्तमानकाल के लिए पाठ 1 से 8 तक देखें। आकारान्त क्रियाओं के रूप पाठ 4 व 8 में देखें।

(2) आज्ञा एवं विधि के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	मु	मो
मध्यम पुरुष	इ, ए, उ, 0, हि, सु	ह
अन्य पुरुष	उ	न्तु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

हस = हँसना

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हसमु, हसेमु	हसमो, हसामो, हसेमो
मध्यम पुरुष	हसि, हसु, हसे, हस	हसह
	हसहि, हससु	
अन्य पुरुष	हसउ	हसन्तु

नोट - आज्ञा एवं विधि के लिए पाठ 9 से 17 तक देखें। आकारान्त क्रियाओं के रूप पाठ 12 एवं 17 में देखें।

(3) भविष्यत्काल के प्रत्यय

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	सउं, हिउं	सहुं, हिहुं
	समि, हिमि	समो, हिमो
		समु, हिमु
		सम, हिम
मध्यम पुरुष	सहि, हिहि	सहु, हिहु
	ससि, हिसि	सह, हिह
	ससे, हिसे	सइत्था, हित्था (हि+इत्था)
अन्य पुरुष	सइ, हिइ	सहिं, हिहिं
	सए, हिए	सन्ति, हिन्ति
		सन्ते, हिन्ते
		सइरे, हिइरे

हस = हँसना

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	हसेसउं, हसिहिउं	हसेसहुं, हसेसमो, हसेसमु, हसेसम
	हसेसमि, हसिहिमि	हसिहिहुं, हसिहिमो, हसिहिमु, हसिहिम

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

मध्यम पुरुष	हसेसहि, हसेससि, हसेससे	हसेसहु, हसेसह, हसेसइत्था
	हसिहिहि, हसिहिसि, हिसिहिसे	हसिहिहु, हसिहिह, हसिहित्था
अन्य पुरुष	हसेसइ, हसेसए	हसेसहिं, हसेसन्ति
	हसिहिइ, हसिहिए	हसिहिहिं, हसिहिन्ति

नोट- भविष्यत्काल के लिए पाठ 18 से 25 तक देखें। आकारान्त क्रियाओं के रूप पाठ 21 और 25 में देखें।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 82

क्रिया-रूप व प्रत्यय

अस = होना

वर्तमानकाल

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	अत्थि, म्हि	अत्थि, म्हो, म्ह
मध्यम पुरुष	अत्थि, सि	अत्थि
अन्य पुरुष	अत्थि	अत्थि

भूतकाल

	एकवचन	बहुवचन
उत्तम पुरुष	आसि	आसि
मध्यम पुरुष	आसि	आसि
अन्य पुरुष	आसि	आसि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 83

(क) संज्ञा रूप

अकारान्त पुल्लिग (देव)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	देव, देवा, देवु, देवो	देव, देवा
द्वितीया	देव, देवा, देवु	देव, देवा
तृतीया	देवेण, देवेणं, देवें	देवहिं, देवाहिं, देवेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	देव, देवा	देव, देवा
	देवसु, देवासु	देवहं, देवाहं
	देवहो, देवाहो, देवस्सु	
पंचमी	देवहे, देवाहे, देवहु, देवाहु	देवहुं, देवाहुं
सप्तमी	देवि, देवे	देवहिं, देवाहिं
सम्बोधन	देव, देवा, देवु, देवो	देव, देवा, देवहो, देवाहो

इकारान्त पुल्लिग (हरि)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	हरि, हरी	हरि, हरी
द्वितीया	हरि, हरी	हरि, हरी
तृतीया	हरिएं, हरीएं, हरिं, हरीं	हरिहिं, हरीहिं
	हरिण, हरीण, हरिणं, हरीणं	
चतुर्थी	हरि, हरी	हरि, हरी
व		हरिहुं, हरीहुं
षष्ठी		हरिहं, हरीहं
पंचमी	हरिहे, हरीहे	हरिहुं, हरीहुं
सप्तमी	हरिहि, हरीहि	हरिहिं, हरीहिं, हरिहुं, हरीहुं
सम्बोधन	हरि, हरी	हरि, हरी, हरिहो, हरीहो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ईकारान्त पुल्लिग (गामणी)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	गामणी, गामणि	गामणी, गामणि
द्वितीया	गामणी, गामणि	गामणी, गामणि
तृतीया	गामणीएं, गामणिएं गामणीं, गामणिं गामणीण, गामणिण गामणीणं, गामणिणं	गामणीहिं, गामणिहिं
चतुर्थी व षष्ठी	गामणी, गामणि	गामणी, गामणि गामणीहुं, गामणिहुं गामणीहं, गामणिहं
पंचमी	गामणीहे, गामणिहे	गामणीहुं, गामणिहुं
सप्तमी	गामणीहि, गामणिहि	गामणीहिं, गामणिहिं गामणीहुं, गामणिहुं
सम्बोधन	गामणी, गामणि	गामणी, गामणि गामणीहो, गामणिहो

उकारान्त पुल्लिग (साहु)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	साहु, साहू	साहु, साहू
द्वितीया	साहु, साहू	साहु, साहू
तृतीया	साहुएं, साहूएं, साहुं, साहूं साहुण, साहूण, साहुणं, साहूणं	साहुहिं, साहूहिं
चतुर्थी व षष्ठी	साहु, साहू	साहु, साहू साहुहुं, साहूहुं साहुहं, साहूहं
पंचमी	साहुहे, साहूहे	साहुहुं, साहूहुं
सप्तमी	साहुहि, साहूहि	साहुहिं, साहूहिं, साहुहुं, साहूहुं
सम्बोधन	साहु, साहू	साहु, साहू , साहुहो, साहूहो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊकारान्त पुल्लिंग (सयंभू)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सयंभू, सयंभु	सयंभू, सयंभु
द्वितीया	सयंभू, सयंभु	सयंभू, सयंभु
तृतीया	सयंभूएं, सयंभुएं	सयंभूहिं, सयंभुहिं
	सयंभूं, सयंभुं	
	सयंभूण, सयंभुण	
	सयंभूणं, सयंभुणं	
चतुर्थी व षष्ठी	सयंभू, सयंभु	सयंभू, सयंभु
		सयंभूहुं, सयंभुहुं
		सयंभूहं, सयंभुहं
पंचमी	सयंभूहे, सयंभुहे	सयंभूहुं, सयंभुहुं
सप्तमी	सयंभूहि, सयंभुहि	सयंभूहिं, सयंभुहिं, सयंभूहुं, सयंभुहुं
सम्बोधन	सयंभू, सयंभु	सयंभू, सयंभु, सयंभूहो, सयंभुहो

अकारान्त नपुंसकलिंग (कमल)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कमल, कमला, कमलु[1]	कमल, कमला, कमलइं, कमलाइं
द्वितीया	कमल, कमला, कमलु	कमल, कमला, कमलइं, कमलाइं
तृतीया	कमलें, कमलेण, कमलेणं	कमलहिं, कमलाहिं, कमलेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	कमल, कमला	कमल, कमला
	कमलहो, कमलाहो	कमलहं, कमलाहं
	कमलसु, कमलासु, कमलस्सु	
पंचमी	कमलहे, कमलाहे	कमलहुं, कमलाहुं
	कमलहु, कमलाहु	
सप्तमी	कमलि, कमले	कमलहिं, कमलाहिं
सम्बोधन	कमल, कमला	कमल, कमला
	कमलु	कमलहो, कमलाहो

---

1. अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द में जब अन्त्य-अक्षर 'अ' होता है तब उसके प्रथमा व द्वितीया एकवचन में 'उ' प्रत्यय में अनुस्वार भी लगता है। जैसे - अच्छिअ = अच्छिउं (नपुं. प्रथमा व द्वितीया एकवचन)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

इकारान्त नपुंसकलिंग-वारि

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	वारि, वारी	वारि, वारी, वारिइं, वारीइं
द्वितीया	वारि, वारी	वारि, वारी वारिइं, वारीइं
तृतीया	वारिं, वारीं, वारिएं, वारीएं वारिण, वारीण, वारिणं, वारीणं	वारिहिं, वारीहिं
चतुर्थी व षष्ठी	वारि, वारी	वारि, वारी वारिहुं, वारीहुं वारिहं, वारीहं
पंचमी	वारिहे, वारीहे	वारिहुं, वारीहुं
सप्तमी	वारिहि, वारीहि	वारिहिं, वारीहिं, वारिहुं, वारीहुं
सम्बोधन	वारि, वारी	वारि, वारी, वारिइं, वारीइं वारिहो, वारीहो

उकारान्त नपुंसकलिंग-महु

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	महु, महू	महु, महू , महुइं, महूइं
द्वितीया	महु, महू	महु, महू , महुइं, महूइं
तृतीया	महुं, महूं, महुएं, महूएं महुण, महूण, महुणं, महूणं	महुहिं, महूहिं
चतुर्थी व षष्ठी	महु, महू	महु, महू महुहुं, महूहुं महुहं, महूहं
पंचमी	महुहे, महूहे	महुहुं, महूहुं
सप्तमी	महुहि, महूहि	महुहिं, महूहिं, महुहुं, महूहुं
सम्बोधन	महु, महू	महु, महू , महुहो, महूहो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

आकारान्त स्त्रीलिंग - कहा

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कहा, कह	कहा, कह, कहाउ, कहउ कहाओ, कहओ
द्वितीया	कहा, कह	कहा, कह, कहाउ, कहउ कहाओ, कहओ
तृतीया	कहाए, कहए	कहाहिं, कहहिं
चतुर्थी व षष्ठी	कहा, कह कहाहे, कहहे	कहा, कह कहाहु, कहहु
पंचमी	कहाहे, कहहे	कहाहु, कहहु
सप्तमी	कहाहिं, कहहिं	कहाहिं, कहहिं
सम्बोधन	कहा, कह	कहा, कह, कहाउ, कहउ कहाओ, कहओ, कहाहो, कहहो

इकारान्त स्त्रीलिंग - मइ

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	मइ, मई	मइ, मई, मइउ, मईउ मइओ, मईओ
द्वितीया	मइ, मई	मइ, मई, मइउ, मईउ मइओ, मईओ
तृतीया	मइए, मईए	मइहिं, मईहिं
चतुर्थी व षष्ठी	मइ, मई मइहे, मईहे	मइ, मई मइहु, मईहु
पंचमी	मइहे, मईहे	मइहु, मईहु
सप्तमी	मइहिं, मईहिं	मइहिं, मईहिं
सम्बोधन	मइ, मई	मइ, मई, मइउ, मईउ मइओ, मईओ, मइहो, मईहो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ईकारान्त स्त्रीलिंग-लच्छी

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	लच्छी, लच्छि	लच्छी, लच्छि, लच्छीउ, लच्छिउ लच्छीओ, लच्छिओ
द्वितीया	लच्छी, लच्छि	लच्छी, लच्छि, लच्छीउ, लच्छिउ लच्छीओ, लच्छिओ
तृतीया	लच्छीए, लच्छिए	लच्छीहिं, लच्छिहिं
चतुर्थी व षष्ठी	लच्छी, लच्छि लच्छीहे, लच्छिहे	लच्छी, लच्छि लच्छीहु, लच्छिहु
पंचमी	लच्छीहे, लच्छिहे	लच्छीहु, लच्छिहु
सप्तमी	लच्छीहिं, लच्छिहिं	लच्छीहिं, लच्छिहिं
सम्बोधन	लच्छी, लच्छि	लच्छी, लच्छि, लच्छीउ, लच्छिउ लच्छीओ, लच्छिओ लच्छीहो, लच्छिहो

उकारान्त स्त्रीलिंग-धेणु

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	धेणु, धेणू	धेणु, धेणू , धेणुउ, धेणूउ धेणुओ, धेणूओ
द्वितीया	धेणु, धेणू	धेणु, धेणू , धेणुउ, धेणूउ धेणुओ, धेणूओ
तृतीया	धेणुए, धेणूए	धेणुहिं, धेणूहिं
चतुर्थी व षष्ठी	धेणु, धेणू धेणुहे, धेणूहे	धेणु, धेणू धेणुहु, धेणूहु
पंचमी	धेणुहे, धेणूहे	धेणुहु, धेणूहु
सप्तमी	धेणुहिं, धेणूहिं	धेणुहिं, धेणूहिं
सम्बोधन	धेणु, धेणू	धेणु, धेणू , धेणुउ, धेणूउ धेणुओ, धेणूओ, धेणुहो, धेणूहो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

ऊकारान्त स्त्रीलिंग-बहू

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	बहू, बहु	बहू, बहु, बहूउ, बहुउ बहूओ, बहुओ
द्वितीया	बहू, बहु	बहू, बहु, बहूउ, बहुउ बहूओ, बहुओ
तृतीया	बहूए, बहुए	बहूहिं, बहुहिं
चतुर्थी व षष्ठी	बहू, बहु बहूहे, बहुहे	बहू, बहु बहूहु, बहुहु
पंचमी	बहूहे, बहुहे	बहूहु, बहुहु
सप्तमी	बहूहिं, बहुहिं	बहूहिं, बहुहिं
सम्बोधन	बहू, बहु	बहू, बहु, बहूउ, बहुउ बहूओ, बहुओ, बहूहो, बहुहो

(ख) सर्वनाम रूप

पुल्लिंग - सव्व

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्व, सव्वा, सव्वु, सव्वो	सव्व, सव्वा
द्वितीया	सव्व, सव्वा, सव्वु	सव्व, सव्वा
तृतीया	सव्वें, सव्वेण, सव्वेणं	सव्वहिं, सव्वाहिं, सव्वेहिं
चतुर्थी	सव्व, सव्वा	सव्व, सव्वा
व	सव्वसु, सव्वासु	सव्वहं, सव्वाहं
षष्ठी	सव्वहो, सव्वाहो, सव्वस्सु	
पंचमी	सव्वहां, सव्वाहां	सव्वहुं, सव्वाहुं
सप्तमी	सव्वहिं, सव्वाहिं	सव्वहिं, सव्वाहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग - सव्व

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्व, सव्वा, सव्वु	सव्व, सव्वा, सव्वइं, सव्वाइं
द्वितीया	सव्व, सव्वा, सव्वु	सव्व, सव्वा, सव्वइं, सव्वाइं
तृतीया	सव्वें, सव्वेण, सव्वेणं	सव्वहिं, सव्वाहिं, सव्वेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	सव्व, सव्वा	सव्व, सव्वा
	सव्वसु, सव्वासु	सव्वहं, सव्वाहं
	सव्वहो, सव्वाहो, सव्वस्सु	
पंचमी	सव्वहां, सव्वाहां	सव्वहुं, सव्वाहुं
सप्तमी	सव्वहिं, सव्वाहिं	सव्वहिं, सव्वाहिं

स्त्रीलिंग - सव्वा

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	सव्वा, सव्व	सव्वा, सव्व, सव्वाउ, सव्वउ
		सव्वाओ, सव्वओ
द्वितीया	सव्वा, सव्व	सव्वा, सव्व, सव्वाउ, सव्वउ
		सव्वाओ, सव्वओ
तृतीया	सव्वाए, सव्वए	सव्वाहिं, सव्वहिं
चतुर्थी व षष्ठी	सव्वा, सव्व	सव्वा, सव्व
	सव्वाहे, सव्वहे	सव्वाहु, सव्वहु
पंचमी	सव्वाहे, सव्वहे	सव्वाहु, सव्वहु
सप्तमी	सव्वाहिं, सव्वहिं	सव्वाहिं, सव्वहिं

---

1. सव्व (पुल्लिग व नपुंसकलिंग) के रूप पंचमी एकवचन (4/355) और सप्तमी एकवचन (4/357) के अतिरिक्त पुल्लिग 'देव' तथा नपुंसकलिंग 'कमल' के समान चलेंगे। सव्वा (स्त्रीलिंग) के रूप स्त्रीलिंग 'कहा' के समान चलेंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिग - त (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	स, सा, सु, सो, त्रं, तं	त, ता
द्वितीया	त्रं, तं	त, ता
तृतीया	तें, तेण, तेणं	तहिं, ताहिं, तेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	त, ता	त, ता
	तसु, तासु	तहं, ताहं
	तहो, ताहो, तस्सु	
पंचमी	तहां, ताहां	तहुं, ताहुं
सप्तमी	तहिं, ताहिं	तहिं, ताहिं

---

1. त (पु.) के रूप प्रथमा एकवचन, द्वितीया एकवचन, (4/360) षष्ठी एकवचन (4/358) के अतिरिक्त सव्व (पु.) के अनुसार चलेंगे।

नपुंसकलिंग - त (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्रं, तं	त, ता, तइं, ताइं
द्वितीया	त्रं, तं	त, ता, तइं, ताइं
तृतीया	तें, तेण, तेणं	तहिं, ताहिं, तेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	त, ता	त, ता
	तसु, तासु	तहं, ताहं
	तहो, ताहो, तस्सु	
पंचमी	तहां, ताहां	तहुं, ताहुं
सप्तमी	तहिं, ताहिं	तहिं, ताहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग - ता (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	त्रं, तं, सा, स	ता, त, ताउ, तउ, ताओ, तओ
द्वितीया	त्रं, तं	ता, त, ताउ, तउ, ताओ, तओ
तृतीया	ताए, तए	ताहिं, तहिं
चतुर्थी व षष्ठी	ता, त	ता, त
	ताहे, तहे	ताहु, तहु
पंचमी	ताहे, तहे	ताहु, तहु
सप्तमी	ताहिं, तहिं	ताहिं, तहिं

पुल्लिग - ज (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	ध्रुं, जु, ज, जा, जो	ज, जा
द्वितीया	ध्रुं, जु, ज, जा	ज, जा
तृतीया	जें, जेण, जेणं	जहिं, जाहिं, जेहिं
चतुर्थी	ज, जा	ज, जा
व	जसु, जासु, जहो, जाहो	जहं, जाहं
षष्ठी	जस्सु	
पंचमी	जहां, जाहां	जहुं, जाहुं
सप्तमी	जहिं, जाहिं	जहिं, जाहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग - ज (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	धुं, जु	ज, जा, जइं, जाइं
द्वितीया	धुं, जु	ज, जा, जइं, जाइं
तृतीया	जें, जेण, जेणं	जहिं, जाहिं, जेहिं
चतुर्थी	ज, जा	ज, जा
व	जसु, जासु, जहो, जाहो	जहं, जाहं
षष्ठी	जस्सु	
पंचमी	जहां, जाहां	जहुं, जाहुं
सप्तमी	जहिं, जाहिं	जहिं, जाहिं

स्त्रीलिंग - जा (जो)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	धुं, जु	जा, ज, जाउ, जउ, जाओ, जओ
द्वितीया	धुं, जु	जा, ज, जाउ, जउ, जाओ, जओ
तृतीया	जाए, जए	जाहिं जहिं
चतुर्थी	जा, ज	जा, ज
व	जाहे, जहे	जाहु, जहु
षष्ठी		
पंचमी	जाहे, जहे	जाहु, जहु
सप्तमी	जाहिं, जहिं	जाहिं, जहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिग - क (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	क, का, कु, को	क, का
द्वितीया	क, का, कु	क, का
तृतीया	कें, केण, केणं	कहिं, काहिं, केहिं
चतुर्थी व षष्ठी	क, का कसु, कासु, कहो, काहो कस्सु	क, का कहं, काहं
पंचमी	कहां, काहां, किहे	कहुं, काहुं
सप्तमी	कहिं, काहिं	कहिं, काहिं

नपुंसकलिंग - क (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	क, का, कु	क, का, कइं, काइं
द्वितीया	क, का, कु	क, का, कइं, काइं
तृतीया	कें, केण, केणं	कहिं, काहिं, केहिं
चतुर्थी व षष्ठी	क, का कसु, कासु कहो, काहो, कस्सु	क, का कहं, काहं
पंचमी	कहां, काहां, किहे	कहुं, काहुं
सप्तमी	कहिं, काहिं	कहिं, काहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग - का (कौन)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	का, क	का, क, काउ, कउ काओ, कओ
द्वितीया	का, क	का, क, काउ, कउ काओ, कओ
तृतीया	काए, कए	काहिं, कहिं
चतुर्थी व षष्ठी	का, क	का, क
	काहे, कहे	काहु, कहु
पंचमी	काहे, कहे	काहु, कहु
सप्तमी	काहिं, कहिं	काहिं, कहिं

पुल्लिंग - एत (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एहो	एइ
द्वितीया	एहो	एइ
तृतीया	एतें, एतेण, एतेणं	एतहिं, एताहिं, एतेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	एत, एता	एत, एता
	एतसु, एतासु	एतहं, एताहं
	एतहो, एताहो, एतस्सु	
पंचमी	एतहां, एताहां	एतहुं, एताहुं
सप्तमी	एतहिं, एताहिं	एतहिं, एताहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग - एत (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एहु	एइ
द्वितीया	एहु	एइ
तृतीया	एतें, एतेण, एतेणं	एतहिं, एताहिं, एतेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	एत, एता	एत, एता
	एतसु, एतासु	एतहं, एताहं
	एतहो, एताहो, एतस्सु	
पंचमी	एतहां, एताहां	एतहुं, एताहुं
सप्तमी	एतहिं, एताहिं	एतहिं, एताहिं

स्त्रीलिंग - एता (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एह	एइ
द्वितीया	एह	एइ
तृतीया	एताए, एतए	एताहिं, एतहिं
चतुर्थी व षष्ठी	एता, एत	एता, एत
	एताहे, एतहे	एताहु, एतहु
पंचमी	एताहे, एतहे	एताहु, एतहु
सप्तमी	एताहिं, एतहिं	एताहिं, एतहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिग - इम (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इम, इमा, इमु, इमो	इम, इमा
द्वितीया	इम, इमा, इमु	इम, इमा
तृतीया	इमें, इमेण, इमेणं	इमहिं, इमाहिं, इमेहिं
चतुर्थी	इम, इमा	इम, इमा
व	इमसु, इमासु	इमहं, इमाहं
षष्ठी	इमहो, इमाहो, इमस्सु	
पंचमी	इमहां, इमाहां	इमहुं, इमाहुं
सप्तमी	इमहिं, इमाहिं	इमहिं, इमाहिं

नपुसंकलिंग - इम (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इमु	इम, इमा, इमइं, इमाइं
द्वितीया	इमु	इम, इमा, इमइं, इमाइं
तृतीया	इमें, इमेण, इमेणं	इमहिं, इमाहिं, इमेहिं
चतुर्थी	इम, इमा	इम, इमा
व	इमसु, इमासु	इमहं, इमाहं
षष्ठी	इमहो, इमाहो, इमस्सु	
पंचमी	इमहां, इमाहां	इमहुं, इमाहुं
सप्तमी	इमहिं, इमाहिं	इमहिं, इमाहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग - इमा (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	इमा, इम	इमा, इम, इमाउ, इमउ इमाओ, इमओ
द्वितीया	इमा, इम	इमा, इम, इमाउ, इमउ इमाओ, इमओ
तृतीया	इमाए, इमए	इमाहिं, इमहिं
चतुर्थी व षष्ठी	इमा, इम इमाहे, इमहे	इमा, इम इमाहु, इमहु
पंचमी	इमाहे, इमहे	इमाहु, इमहु
सप्तमी	इमाहिं, इमहिं	इमाहिं, इमहिं

पुल्लिंग - आय (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	आय, आया, आयु, आयो	आय, आया
द्वितीया	आय, आया, आयु	आय, आया
तृतीया	आयें, आयेण आयेणं	आयहिं, आयाहिं आयेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	आय, आया आयसु, आयासु आयहो, आयाहो आयस्सु	आय, आया आयहं, आयाहं
पंचमी	आयहां, आयाहां	आयहुं, आयाहुं
सप्तमी	आयहिं, आयाहिं	आयहिं, आयाहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग - आय (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	आय, आया	आय, आया
	आयु	आयइं, आयाइं
द्वितीया	आय, आया	आय, आया
	आयु	आयइं, आयाइं
तृतीया	आयें	आयहिं, आयाहिं
	आयेण, आयेणं	आयेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	आय, आया	आय, आया
	आयसु, आयासु	आयहं, आयाहं
	आयहो, आयाहो	
	आयस्सु	
पंचमी	आयहां, आयाहां	आयहुं, आयाहुं
सप्तमी	आयहिं, आयाहिं	आयहिं, आयाहिं

स्त्रीलिंग - आया (यह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	आया, आय	आया, आय
		आयाउ, आयउ
		आयाओ, आयओ
द्वितीया	आया, आय	आया, आय
		आयाउ, आयउ
		आयाओ, आयओ
तृतीया	आयाए, आयए	आयाहिं, आयहिं
चतुर्थी व षष्ठी	आया, आय	आया, आय
	आयाहे, आयहे	आयाहु, आयहु
पंचमी	आयाहे, आयहे	आयाहु, आयहु
सप्तमी	आयाहिं, आयहिं	आयाहिं, आयहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पुल्लिग - अदस्→अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमु, अमू	ओइ
द्वितीया	अमु, अमू	ओइ
तृतीया	अमुएं, अमूएं, अमुं, अमूं अमुण, अमूण, अमुणं, अमूणं	अमुहिं, अमूहिं
चतुर्थी व षष्ठी	अमु, अमू	अमु, अमू अमुहुं, अमूहुं अमुहं, अमूहं
पंचमी	अमुहे, अमूहे	अमुहुं, अमूहुं
सप्तमी	अमुहिं, अमूहिं	अमुहिं, अमूहिं अमुहुं, अमूहुं

नपुंसकलिंग - अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमु, अमू	ओइ
द्वितीया	अमु, अमू	ओइ
तृतीया	अमुएं, अमूएं, अमुं, अमूं अमुण, अमूण, अमुणं, अमूणं	अमुहिं, अमूहिं
चतुर्थी व षष्ठी	अमु, अमू	अमु, अमू अमुहुं, अमूहुं अमुहं, अमूहं
पंचमी	अमुहे, अमूहे	अमुहुं, अमूहुं
सप्तमी	अमुहिं, अमूहिं	अमुहिं, अमूहिं अमुहुं, अमूहुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग - अमु (वह)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	अमु, अमू	ओइ
द्वितीया	अमु, अमू	ओइ
तृतीया	अमुए, अमूए	अमुहिं, अमूहिं
चतुर्थी	अमु, अमू	अमु, अमू
व	अमुहे, अमूहे	अमुहु, अमूहु
षष्ठी		
पंचमी	अमुहे, अमूहे	अमुहु, अमूहु
सप्तमी	अमुहिं, अमूहिं	अमुहिं, अमूहिं

पुल्लिंग - कवण (कौन, क्या, कौनसा)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कवण, कवणा, कवणु, कवणो	कवण, कवणा
द्वितीया	कवण, कवणा, कवणु	कवण, कवणा
तृतीया	कवणें, कवणेण, कवणेणं	कवणहिं, कवणाहिं, कवणेहिं
चतुर्थी	कवण, कवणा	कवण, कवणा
व	कवणसु, कवणासु	कवणहं, कवणाहं
षष्ठी	कवणहो, कवणाहो, कवणस्सु	
पंचमी	कवणहां, कवणाहां	कवणहुं, कवणाहुं
सप्तमी	कवणहिं, कवणाहिं	कवणहिं, कवणाहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग - कवण (कौन, क्या, कौनसा)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कवण, कवणा, कवणु	कवण, कवणा, कवणइं, कवणाइं
द्वितीया	कवण, कवणा, कवणु	कवण, कवणा, कवणइं, कवणाइं
तृतीया	कवणें, कवणेण, कवणेणं	कवणहिं, कवणाहिं, कवणेहिं
चतुर्थी	कवण, कवणा	कवण, कवणा
व	कवणसु, कवणासु	कवणहं, कवणाहं
षष्ठी	कवणहो, कवणाहो, कवणस्सु	
पंचमी	कवणहां, कवणाहां	कवणहुं, कवणाहुं
सप्तमी	कवणहिं, कवणाहिं	कवणहिं, कवणाहिं

स्त्रीलिंग - कवणा (कौन, क्या, कौनसा)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	कवणा, कवण	कवणा, कवण, कवणाउ, कवणउ कवणाओ, कवणओ
द्वितीया	कवणा, कवण	कवणा, कवण, कवणाउ, कवणउ कवणाओ, कवणओ
तृतीया	कवणाए, कवणए	कवणाहिं, कवणहिं
चतुर्थी	कवणा, कवण	कवणा, कवण
व	कवणाहे, कवणहे	कवणाहु, कवणहु
षष्ठी		
पंचमी	कवणाहे, कवणहे	कवणाहु, कवणहु
सप्तमी	कवणाहिं, कवणहिं	कवणाहिं, कवणहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तीनों लिंगों में - अम्ह (मैं)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	हउं	अम्हे, अम्हइं
द्वितीया	मइं	अम्हे, अम्हइं
तृतीया	मइं	अम्हेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	महु, मज्झु	अम्हहं
पंचमी	महु, मज्झु	अम्हहं
सप्तमी	मइं	अम्हासु

तीनों लिंगों में - तुम्ह (तुम)

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	तुहुं	तुम्हे, तुम्हइं
द्वितीया	पइं, तइं	तुम्हे, तुम्हइं
तृतीया	पइं, तइं	तुम्हेहिं
चतुर्थी व षष्ठी	तउ, तुज्झ, तुध्र	तुम्हहं
पंचमी	तउ, तुज्झ, तुध्र	तुम्हहं
सप्तमी	पइं, तइं	तुम्हासु

तीनों लिंगों में - काइं (कौन, क्या, कौनसा)

सभी वचनों, विभक्तियों एवं लिंगों में 'काइं' सदैव काइं ही रहता है।[2]

---

1. हेमचन्द्र की अपभ्रंश व्याकरण के अनुसार ऊपर संज्ञा व सर्वनामों के रूप (जो सूत्रों से फलित हैं) दिए गए हैं।
2. अपभ्रंश भाषा का अध्ययन, द्वारा वीरेन्द्र श्रीवास्तव, पृष्ठ, 180।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

(ग) संख्यावाची रूप

पुल्लिग - एग, एअ, एक्क

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एग, एअ, एक्क	एग, एअ, एक्क
	एगा, एआ, एक्का	एगा, एआ, एक्का
	एगु, एउ, एक्कु	
	एगो, एओ, एक्को	
द्वितीया	एग, एअ, एक्क	एग, एअ, एक्क
	एगा, एआ, एक्का	एगा, एआ, एक्का
	एगु, एउ, एक्कु	
तृतीया	एगें, एएं, एक्कें	एगहिं, एअहिं, एक्कहिं
	एगेण, एएण, एक्केण	एगाहिं, एआहिं, एक्काहिं
	एगेणं, एएणं, एक्केणं	एगेहिं, एएहिं, एक्केहिं
चतुर्थी व षष्ठी	एग, एअ, एक्क	एग, एअ, एक्क
	एगा, एआ, एक्का	एगा, एआ, एक्का
	एगसु, एअसु, एक्कसु	एगहं, एअहं, एक्कहं
	एगासु, एआसु, एक्कासु	एगाहं, एआहं, एक्काहं
	एगहो, एअहो, एक्कहो	
	एगाहो, एआहो, एक्काहो	
	एगस्सु, एअस्सु, एक्कस्सु	
पंचमी	एगहां, एअहां, एक्कहां	एगहुं, एअहुं, एक्कहुं
	एगाहां, एआहां, एक्काहां	एगाहुं, एआहुं, एक्काहुं
सप्तमी	एगहिं, एअहिं, एक्कहिं	एगहिं, एअहिं, एक्कहिं
	एगाहिं, एआहिं, एक्काहिं	एगाहिं, एआहिं, एक्काहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

नपुंसकलिंग - एग, एअ, एक्क

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एग, एअ, एक्क	एग, एअ, एक्क
	एगा, एआ, एक्का	एगा, एआ, एक्का
	एगु, एउ, एक्कु	एगइं, एअइं, एक्कइं
		एगाइं, एआइं, एक्काइं
द्वितीया	एग, एअ, एक्क	एग, एअ, एक्क
	एगा, एआ, एक्का	एगा, एआ, एक्का
	एगु, एउ, एक्कु	एगइं, एअइं, एक्कइं
		एगाइं, एआइं, एक्काइं
तृतीया	एगें, एएं, एक्कें	एगहिं, एअहिं, एक्कहिं
	एगेण, एएण, एक्केण	एगाहिं, एआहिं, एक्काहिं
	एगेणं, एएणं, एक्केणं	एगेहिं, एएहिं, एक्केहिं
चतुर्थी व षष्ठी	एग, एअ, एक्क	एग, एअ, एक्क
	एगा, एआ, एक्का	एगा, एआ, एक्का
	एगसु, एअसु, एक्कसु	एगहं, एअहं, एक्कहं
	एगासु, एआसु, एक्कासु	एगाहं, एआहं,एक्काहं
	एगहो, एअहो, एक्कहो	
	एगाहो, एआहो, एक्काहो	
	एगस्सु, एअस्सु, एक्कस्सु	
पंचमी	एगहां, एअहां, एक्कहां	एगहुं, एअहुं, एक्कहुं
	एगाहां, एआहां, एक्काहां	एगाहुं, एआहुं, एक्काहुं
सप्तमी	एगहिं, एअहिं, एक्कहिं	एगहिं, एअहिं, एक्कहिं
	एगाहिं, एआहिं, एक्काहिं	एगाहिं, एआहिं, एक्काहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

स्त्रीलिंग - एगा, एआ, एक्का

	एकवचन	बहुवचन
प्रथमा	एगा, एआ, एक्का	एगा, एआ, एक्का
	एग, एअ, एक्क	एग, एअ, एक्क
		एगाउ, एआउ, एक्काउ
		एगउ, एअउ, एक्कउ
		एगाओ, एआओ, एक्काओ
		एगओ, एअओ, एक्कओ
द्वितीया	एगा, एआ, एक्का	एगा, एआ, एक्का
	एग, एअ, एक्क	एग, एअ, एक्क
		एगाउ, एआउ, एक्काउ
		एगउ, एअउ, एक्कउ
		एगाओ, एआओ, एक्काओ
		एगओ, एअओ, एक्कओ
तृतीया	एगाए, एआए, एक्काए	एगाहिं, एआहिं, एक्काहिं
	एगए, एअए, एक्कए	एगहिं, एअहिं, एक्कहिं
चतुर्थी व षष्ठी	एगा, एआ, एक्का	एगा, एआ, एक्का
	एग, एअ, एक्क	एग, एअ, एक्क
	एगाहे, एआहे, एक्काहे	एगाहु, एआहु, एक्काहु
	एगहे, एअहे, एक्कहे	एगहु, एअहु, एक्कहु
पंचमी	एगाहे, एआहे, एक्काहे	एगाहु, एआहु, एक्काहु
	एगहे, एअहे, एक्कहे	एगहु, एअहु, एक्कहु
सप्तमी	एगाहिं, एआहिं, एक्काहिं	एगाहिं, एआहिं, एक्काहिं
	एगहिं, एअहिं, एक्कहिं	एगहिं, एअहिं, एक्कहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दु , दो, बे (तीनों लिंगों में)

	बहुवचन
प्रथमा	दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, बे
द्वितीया	दुवे, दोण्णि, दुण्णि, वेण्णि, विण्णि, दो, बे
तृतीया	दोहि, दोहिं, दोहिँ, वेहि, वेहिं, वेहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	दोण्ह, दोण्हं, दुण्ह, दुण्हं, वेण्ह, वेण्हं, विण्ह, विण्हं
पंचमी	दुत्तो, दुओ, दोउ, दोहिन्तो, दोसुन्तो, वित्तो वेओ, वेउ, वेहिन्तो
सप्तमी	दोसु, दोसुं, वेसु, वेसुं

तिण्ण (तीनों लिंगों में)

	बहुवचन
प्रथमा	तिण्णि
द्वितीया	तिण्णि
तृतीया	तीहि, तीहिं, तीहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	तीण्ह, तीण्हं
पंचमी	तित्तो, तीआ, तीउ, तीहिन्तो, तीसुन्तो
सप्तमी	तीसु, तीसुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चउ (तीनों लिंगों में)

	बहुवचन
प्रथमा	चत्तारो, चउरो, चत्तारि
द्वितीया	चत्तारो, चउरो, चत्तारि
तृतीया	चऊहि, चऊहिं, चऊहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	चउण्ह, चउण्हं
पंचमी	चउत्तो, चऊओ, चऊउ, चऊहिन्तो, चऊसुन्तो, चउओ, चउउ चउहिन्तो, चउसुन्तो
सप्तमी	चऊसु, चऊसुं , चउसु, चउसुं

पंच (तीनों लिंगों में)

	बहुवचन
प्रथमा	पंच
द्वितीया	पंच
तृतीया	पंचहि, पंचहिं, पंचहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	पंचण्ह, पंचण्हं
पंचमी	पंचत्तो, पंचाओ, पंचाउ, पंचाहि, पंचाहिन्तो पंचासुन्तो, पंचेहि
सप्तमी	पंचसु, पंचसुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

छ (तीनों लिंगों में)

	बहुवचन
प्रथमा	छ
द्वितीया	छ
तृतीया	छहि, छहिं, छहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	छण्ह, छण्हं
पंचमी	छओ, छउ, छहिन्तो, छसुन्तो
सप्तमी	छसु, छसुं

सात (तीनों लिंगों में)

	बहुवचन
प्रथमा	सत्त
द्वितीया	सत्त
तृतीया	सत्तहि, सत्तहिं, सत्तहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	सत्तण्ह, सत्तण्हं
पंचमी	सत्ताओ, सत्तउ, सत्तहिन्तो, सत्तसुन्तो
सप्तमी	सत्तसु, सत्तसुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

अट्ठ (तीनों लिंगों में)

	बहुवचन
प्रथमा	अट्ठ
द्वितीया	अट्ठ
तृतीया	अट्ठहि, अट्ठहिं, अट्ठहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	अट्ठण्ह, अट्ठण्हं
पंचमी	अट्ठाओ, अट्ठाउ, अट्ठाहिन्तो, अट्ठासुन्तो
सप्तमी	अट्ठसु, अट्ठसुं

णव, नव (तीनों लिंगों में)

	बहुवचन
प्रथमा	णव
द्वितीया	णव
तृतीया	णवहि, णवहिं, णवहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	णवण्ह, णवण्हं
पंचमी	णवाओ, णवाउ, णवाहिन्तो, णवासुन्तो
सप्तमी	णवसु, णवसुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

दह, दस (तीनों लिंगों में)

	बहुवचन
प्रथमा	दह, दस
द्वितीया	दह, दस
तृतीया	दहहि, दहहिं, दहहिँ, दसहि, दसहिं, दसहिँ
चतुर्थी व षष्ठी	दहण्ह, दहण्हं, दसण्ह, दसण्हं
पंचमी	दहाओ, दहाउ, दहाहिन्तो, दहासुन्तो दसाओ, दसाउ, दसाहिन्तो, दसासुन्तो
सप्तमी	दहसु, दहसुं , दससु, दससुं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पाठ 84

हेमचन्द्र के अनुसार
अपभ्रंश में
संज्ञा-शब्द-रूपों के
प्रत्यय (विभक्ति चिह्न)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथमा एकवचन

पुल्लिग	**देव** - अ	**हरि** - इ	**गामणी** - ई	**साहु** - उ	**सयंभू** - ऊ
	0	0	0	0	0
	0→आ	0→ई	0→इ	0→ऊ	0→उ
	अ→उ				
	अ→ओ				
नपुंसकलिंग	**कमल** - अ	**वारि** - इ		**महु** - उ	-
	0	0		0	
	0→आ	0→ई		0→ऊ	
	अ→उ				
	अन्त्य 'अ'→उं				
स्त्रीलिंग	**कहा** - अ	**मइ** - इ	**लच्छी** - ई	**धेणु** - उ	**बहू** - ऊ
	0	0	0	0	0
	0→अ	0→ई	0→इ	0→ऊ	0→उ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

प्रथमा बहुवचन

पुल्लिग	**देव** - अ	**हरि** - इ	**गामणी** - ई	**साहु** - उ	**सयंभू** - ऊ
	0	0	0	0	0
	0→आ	0→ई	0→इ	0→ऊ	0→उ
नपुंसकलिंग	**कमल** - अ	**वारि** - इ	-	**महु** - उ	
	0, 0→आ	0, 0→ई		0, 0→ऊ	
	इं	इं		इं	
	इं→आइं	इं→ईइं		इं→ऊइं	
स्त्रीलिंग	**कहा** - आ	**मइ** - इ	**लच्छी** - ई	**धेणु** - उ	**बहू** - ऊ
	0, 0→अ	0, 0→ई	0, 0→इ	0, 0→ऊ	0, 0→उ
	उ, उ→अउ	उ, उ→ईउ	उ, उ→इउ	उ, उ→ऊउ	उ, उ→उउ
	ओ, ओ→अओ	ओ, ओ→ईओ	ओ, ओ→इओ	ओ, ओ→ऊओ	ओ, ओ→उओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीया एकवचन

पुल्लिग	देव - अ	हरि - इ	गामणी - ई	साहु - उ	सयंभू - ऊ
	0	0	0	0	0
	0→आ	0→ई	0→इ	0→ऊ	0→उ
	अ→उ				
नपुंसकलिंग	कमल - अ	वारि - इ	-	महु - उ	-
	0	0		0	
	0→आ	0→ई		0→ऊ	
	अ→उ				
	अन्त्य 'अ'→उं				
स्त्रीलिंग	कहा - आ	मइ - इ	लच्छी - ई	धेणु - उ	बहू - ऊ
	0	0	0	0	0
	0→अ	0→ई	0→इ	0→ऊ	0→उ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्वितीया बहुवचन

पुल्लिग	**देव** - अ	**हरि** - इ	**गामणी** - ई	**साहु** - उ	**सयंभू** - ऊ
	0	0	0	0	0
	0→आ	0→ई	0→इ	0→ऊ	0→उ
नपुंसकलिंग	**कमल** - अ	**वारि** - इ	-	**महु** - उ	
	0, 0→आ	0, 0→ई		0, 0→ऊ	
	इं	इं		इं	
	इं→आइं	इं→ईइं		इं→ऊइं	
स्त्रीलिंग	**कहा** - आ	**मइ** - इ	**लच्छी** - ई	**धेणु** - उ	**बहू** - ऊ
	0, 0→अ	0, 0→ई	0, 0→इ	0, 0→ऊ	0, 0→उ
	उ, उ→अउ	उ, उ→ईउ	उ, उ→इउ	उ, उ→ऊउ	उ, उ→उउ
	ओ, ओ→अओ	ओ, ओ→ईओ	ओ, ओ→इओ	ओ, ओ→ऊओ	ओ, ओ→उओ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृतीया एकवचन

पुल्लिग	**देव** - अ	**हरि** - इ	**गामणी** - ई	**साहु** - उ	**सयंभू** - ऊ
	अ→ए→एं	एं, एं→ईएं	एं, एं→इएं	एं, एं→ऊएं	एं, एं→उएं
	ण→एण	(ं), (ं)→ईं	(ं), (ं)→इं	(ं), (ं)→ऊं	(ं), (ं)→उं
	णं→एणं	ण, ण→ईण	ण, ण→इण	ण, ण→ऊण	ण, ण→उण
		णं, णं→ईणं	णं, णं→इणं	णं, णं→ऊणं	णं, णं→उं
नपुंसकलिंग	**कमल** - अ	**वारि** - इ	-	**महु** - उ	
	अ→ए→एं	एं, एं→ईएं		एं, एं→ऊएं	
	ण→एण	(ं), (ं)→ईं		(ं), (ं)→ऊं	
	णं→एणं	ण, ण→ईण		ण, ण→ऊण	
		णं, णं→ईणं		णं , णं→ऊणं	
स्त्रीलिंग	**कहा** - आ	**मइ** - इ	**लच्छी** - ई	**धेणु** - उ	**बहू** - ऊ
	ए	ए	ए	ए	ए
	ए→अए	ए→ईए	ए→इए	ए→ऊए	ए→उए

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तृतीया बहुवचन

पुल्लिग	देव - अ हिं हिं→आहिं हिं-एहिं	हरि - इ हिं हिं→ईहिं	गामणी → ई हिं हिं→इहिं	साहु - उ हिं हिं→ऊहिं	सयंभू - ऊ हिं हिं→उहिं
नपुंसकलिंग	कमल - अ हिं हिं→आहिं हिं→एहिं	वारि - इ हिं हिं→ईहिं	-	महु - उ हिं हिं→ऊहिं	-
स्त्रीलिंग	कहा - आ हिं हिं→अहिं	मइ - इ हिं हिं→ईहिं	लच्छी - ई हिं हिं→इहिं	धेणु - उ हिं हिं→ऊहिं	बहू - ऊ हिं हिं→उहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्थी व षष्ठी एकवचन

पुल्लिंग	देव - अ	हरि - इ	गामणी - ई	साहु - उ	सयंभू - ऊ
	0, 0→आ	0	0	0	0
	सु, सु→आसु	0→ई	0→इ	0→ऊ	0→उ
	हो, हो→आहो				
	स्सु				
नपुंसकलिंग	कमल - अ	वारि - इ	-	महु - उ	-
	0, 0→आ	0		0	
	सु, सु→आसु	0→ई		0→ऊ	
	हो, हो→आहो				
	स्सु				
स्त्रीलिंग	कहा - आ	मइ - इ	लच्छी - ई	धेणु - उ	बहू - ऊ
	0, 0→अ	0, 0→ई	0, 0→इ	0, 0→ऊ	0, 0→उ
	हे, हे→अहे	हे, हे→ईहे	हे, हे→इहे	हे, हे→ऊहे	हे, हे→उहे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

चतुर्थी व षष्ठी बहुवचन

पुल्लिंग	**देव** - अ	**हरि** - इ	**गामणी** - ई	**साहु** - उ	**सयंभू** - ऊ
	0, 0→आ	0, 0→ई	0, 0→इ	0, 0→ऊ	0, 0→उ
	हं, हं→आहं	हं, हं-ईहं	हं, हं→इहं	हं, हं→ऊहं	हं, हं→उहं
		हुं, हुं→ईहुं	हुं , हुं→इहुं	हुं , हुं→ऊहुं	हुं , हुं→उहुं
नपुंसकलिंग	**कमल** - आ	**वारि** - इ	-	**महु** - उ	-
	0, 0→आ	0, 0→ई		0, 0→ऊ	
	हं, हं→आहं	हं, हं→ईहं		हं, हं→ऊहं	
		हुं , हुं→ईहुं		हुं , हुं→ऊहुं	
स्त्रीलिंग	**कहा** - आ	**मइ** - इ	**लच्छी** - ई	**धेणु** - उ	**बहू** - ऊ
	0, 0→अ	0, 0→ई	0, 0→इ	0, 0→ऊ	0, 0→उ
	हे, हे→अहे	हे, हे→ईहे	हे, हे→इहे	हे, हे→ऊहे	हे, हे→उहे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमी एकवचन

पुल्लिग	देव - अ	हरि - इ	गामणी - ई	साहु - उ	सयंभू - ऊ
	हे, हे→आहे	हे	हे	हे	हे
	हु, हु→आहु	हे→ईहे	हे→इहे	हे→ऊहे	हे→उहे
नपुंसकलिंग	कमल - अ	वारि - इ	-	महु - उ	-
	हे, हे→आहे	हे		हे	
	हु, हु→आहु	हे→ईहे		हे→ऊहे	
स्त्रीलिंग	कहा - आ	मइ - इ	लच्छी - ई	धेणु - उ	बहू - ऊ
	हे	हे	हे	हे	हे
	हे→अहे	हे→ईहे	हे→इहे	हे→ऊहे	हे→उहे

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

पंचमी बहुवचन

पुल्लिग	देव - अ	हरि - इ	गामणी - ई	साहु - उ	सयंभू - ऊ
	हुं	हुं	हुं	हुं	हुं
	हुं→आहुं	हुं→ईहुं	हुं→इहुं	हुं→ऊहुं	हुं→उहुं
नपुंसकलिंग	कमल - अ	वारि - इ	-	महु - उ	-
	हुं	हुं		हुं	
	हुं→आहुं	हुं→ईहुं		हुं→ऊहुं	
स्त्रीलिंग	कहा - आ	मइ - इ	लच्छी - ई	धेणु - उ	बहू - ऊ
	हु	हु	हु	हु	हु
	हु→अहु	हु→ईहु	हु→इहु	हु→ऊहु	हु→उहु

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सप्तमी एकवचन

पुल्लिग	**देव** - अ	**हरि** - इ	**गामणी** - ई	**साहु** - उ	**सयंभू** - ऊ
	अ→इ	हि	हि	हि	हि
	अ→ए	हि→ईहि	हि→इहि	हि→ऊहि	हि→उहि
नपुंसकलिंग	**कमल** - अ	**वारि** - इ	-	**महु** - उ	
	अ→इ	हि		हि	
	अ→ए	हि→ईहि		हि→ऊहि	
स्त्रीलिंग	**कहा** - आ	**मइ** - इ	**लच्छी** - ई	**धेणु** - उ	**बहू** - ऊ
	हिं, हिं→अहिं	हिं, हिं→ईहिं	हिं, हिं→इहिं	हिं, हिं→ऊहिं	हिं, हिं→उहिं
	हि, हि→अहि	हि, हि→ईहि	हि, हि→इहि	हि, हि→ऊहि	हि, हि→उहि

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सप्तमी बहुवचन

पुल्लिंग	**देव** - अ	**हरि** - इ	**गामणी** - ई	**साहु** - उ	**सयंभू** - ऊ
	हिं	हिं, हिं→ईहिं	हिं, हिं→इहिं	हिं, हिं→ऊहिं	हिं, हिं→उहिं
	हिं→आहिं	हुं, हुं→ईहुं	हुं, हुं→इहुं	हुं, हुं→ऊहुं	हुं, हुं→उहुं
नपुंसकलिंग	**कमल** - अ	**वारि** - इ		**महु** - उ	
	हिं	हिं, हिं→ईहिं		हिं, हिं→ऊहिं	
	हिं→आहिं	हुं, हुं→ईहुं		हुं, हुं→ऊहुं	
स्त्रीलिंग	**कहा** - आ	**मइ** - इ	**लच्छी** - ई	**धेणु** - उ	**बहू** - ऊ
	हिं	हिं	हिं	हिं	हिं
	हिं→अहिं	हिं→ईहिं	हिं→इहिं	हिं→ऊहिं	हिं→उहिं

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संबोधन एकवचन

पुल्लिग	**देव** - अ	**हरि** - इ	**गामणी** - ई	**साहु** - उ	**सयंभू** - ऊ
	0	0	0	0	0
	0→आ	0→ई	0→इ	0→ऊ	0→उ
	अ→उ				
	अ→ओ				
नपुंसकलिंग	**कमल** - अ	**वारि** - इ	-	**महु** - उ	-
	0	0		0	
	0→आ	0→ई		0→ऊ	
	अ→उ				
	अन्त्य 'अ'→उं				
स्त्रीलिंग	**कहा** - अ	**मइ** - इ	**लच्छी** - ई	**धेणु** - उ	**बहू** - ऊ
	0	0	0	0	0
	0→अ	0→ई	0→इ	0→ऊ	0→उ

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

संबोधन बहुवचन

पुल्लिग	**देव** - अ	**हरि** - इ	**गामणी** - ई	**साहु** - उ	**सयंभू** - ऊ
	0, 0→आ	0, 0→ई	0, 0→इ	0, 0→ऊ	0, 0→उ
	हो, हो→आहो	हो, हो→ईहो	हो, हो→इहो	हो, हो→ऊहो	हो, हो→उहो
नपुंसकलिंग	**कमल** - अ	**वारि** - इ	-	**महु** - उ	-
	0, 0→आ	0, 0→ई		0, 0→ऊ	
	इं, इं→आइं	इं, इं→ईइं		इं, इं→ऊइं	
	हो, हो→आहो	हो, हो→ईहो		हो, हो→ऊहो	
स्त्रीलिंग	**कहा** - आ	**मइ** - इ	**लच्छी** - ई	**धेणु** - उ	**बहू** - ऊ
	0, 0→अ	0, 0→ई	0, 0→इ	0, 0→ऊ	0, 0→उ
	उ, उ→अउ	उ, उ→ईउ	उ, उ→इउ	उ, उ→ऊउ	उ, उ→उउ
	ओ, ओ→अओ	ओ, ओ→ईओ	ओ, ओ→इओ	ओ, ओ→ऊओ	ओ, ओ→उओ
	हो, हो→अहो	हो, हो→ईहो	हो, हो→इहो	हो, हो→ऊहो	हो, हो→उहो

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट - 1

संज्ञा-कोष

अपभ्रंश रचना सौरभ में प्रयुक्त संज्ञा शब्द

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	पृ.सं.
1	अंसु	आँसू	नपु.	116
2	अच्छि	आँख	नपु.	116
3	अट्ठि	हड्डी	नपु.	116
4	अप्पलद्धि	आत्मलाभ	स्त्री	116
5	अरि	शत्रु	पु.	109
6	अवहि	समय की सीमा	स्त्री	116
7	असण	भोजन	नपु.	56
8	अहिलासा	अभिलाषा	स्त्री	63
9	आंखि	आँख	स्त्री	116
10	आउ	आयु	नपु.	116
11	आगम	शास्त्र	पु.	48
12	आगि	आग	स्त्री.	116
13	आणा	आज्ञा	स्त्री.	63
14	इत्थी	स्त्री	स्त्री.	116
15	उदग	जल	नपु.	56
16	उप्पत्ति	जन्म	स्त्री.	116
17	कइ	कवि	पु.	109
18	कट्ठ	काठ	नपु.	56
19	कडच्छु	कर्दी, चमची	स्त्री.	117
20	कण्डू	खाज	स्त्री.	117
21	कन्ना	कन्या	स्त्री.	63
22	कमल	कमल का फूल	नपु.	58

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	पृ.सं.
23	कमला	लक्ष्मी	स्त्री.	63
24	कम्म	कर्म	नपु.	56
25	कयंत	मृत्यु	पु.	48
26	करह	ऊँट	पु.	48
27	करि	हाथी	पु.	109
28	करुणा	दया	स्त्री.	63
29	करेणु	हाथी	पु.	109
30	कलसिया	छोटा घड़ा	स्त्री.	63
31	कहा	कथा	स्त्री.	63
32	कुक्कुर	कुत्ता	पु.	48
33	कूव	कुआ	पु.	48
34	केसरि	सिंह	पु.	109
35	खज्जू	खुजली	स्त्री.	117
36	खलपू	खलियान साफ करने वाला	पु.	117
37	खीर	दूध	नपु.	56
38	खेत्त	खेत	नपु.	56
39	गंगा	गंगा	स्त्री.	63
40	गंथ	पुस्तक	पु.	48
41	गड्डा	खड्डा	स्त्री.	63
42	गव्व	गर्व	पु.	48
43	गाण	गीत	नपु.	56
44	गाम	गाँव	पु.	48
45	गामणी	गाँव का मुखिया	पु.	117
46	गिरि	पर्वत	पु.	109
47	गुरु	गुरु	पु.	109

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	पृ.सं.
48	गुहा	गुफा	स्त्री.	63
49	घय	घी	नपु.	56
50	घर	मकान	पु.	48
51	चंचु	चोंच	स्त्री.	117
52	चमू	सैन्य	स्त्री.	117
53	छिक्क	छींक	नपु.	56
54	जइ	यति	पु.	109
55	जउणा	यमुना	स्त्री.	63
56	जंतु	प्राणी	पु.	109
57	जंबु	जामुन	पु.	109
58	जंबू	जामुन का पेड़	स्त्री.	117
59	जणेर	बाप	पु.	48
60	जणेरी	माता	स्त्री.	116
61	जरा	बुढापा	स्त्री.	63
62	जाआ	पत्नि	स्त्री.	63
63	जाणु	घुटना	नपु.	116
64	जामाउ	दामाद	पु.	109
65	जीवण	जीवन	नपु.	56
66	जुवइ	युवती	स्त्री.	116
67	जूअ	जुआ	नपु.	56
68	जोगि	योगी	पु.	109
69	जोव्वण	यौवन	नपु.	56
70	झुंपडा	झोपड़ी	स्त्री.	63
71	डाइणी	चुडैल	स्त्री.	116
72	णणन्दा	नणद	स्त्री.	63
73	णम्मया	नर्मदा	स्त्री.	63

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	पृ.सं.
74	णयरजण	नागरिक	नपु.	56
75	णर	मनुष्य	पु.	48
76	णरवइ	राजा	पु.	109
77	णरिंद	राजा	पु.	48
78	णह	आकाश	नपु.	56
79	णागरी	नगर में रहनेवाली स्त्री	स्त्री.	116
80	णाण	ज्ञान	नपु.	56
81	णारी	नारी	स्त्री.	116
82	णिद्दा	नींद	स्त्री.	63
83	णिसा	रात्रि	स्त्री.	63
84	तणया	पुत्री	स्त्री.	63
85	तण्हा	तृष्णा	स्त्री.	63
86	तणु	शरीर	स्त्री.	117
87	तत्ति	तृप्ति	स्त्री.	116
88	तरु	पेड़	पु.	109
89	तवस्सि	तपस्वी	पु.	109
90	तिण	घास	नपु.	56
91	तिसा	प्यास	स्त्री.	63
92	तेउ	तेज	पु.	109
93	थुइ	स्तुति	स्त्री.	116
94	दहि	दही	नपु.	116
95	दिअर	देवर	पु.	48
96	दिवायर	सूर्य	पु.	48
97	दुक्ख	दुःख	पु.	48
98	दुज्जस	अपयश	पु.	48
99	दुह	दुःख	पु.	48

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	पृ.सं.
100	धण	धन	नपु.	56
101	धणु	धनुष	पु.	109
102	धन्न	धान	नपु.	56
103	धिइ	धैर्य	स्त्री.	116
104	धूआ	बेटी	स्त्री.	63
105	धेणु	गाय	स्त्री.	117
106	पइ	पति	पु.	109
107	पइट्ठा	प्रतिष्ठा	स्त्री.	63
108	पड	वस्त्र	पु.	48
109	पण्णा	प्रज्ञा	स्त्री.	63
110	पत्त	कागज	नपु.	56
111	परमेसर	परमेश्वर	पु.	48
112	परमेसरी	ऐश्वर्य-सम्पन्न स्त्री	स्त्री.	116
113	परिक्खा	परीक्षा	स्त्री.	63
114	पसंसा	प्रशंसा	स्त्री.	63
115	पहु	प्रभु	पु.	109
116	पाणि	प्राणी	पु.	109
117	पिआमह	दादा	पु.	48
118	पिआमही	दादी	स्त्री.	116
119	पिउ	पिता	पु.	109
120	पिहिमि	धरती	स्त्री.	116
121	पुत्त	पुत्र	पु.	48
122	पुत्ती	पुत्री	स्त्री.	116
123	पोट्टल	गठरी	नपु.	56
124	पोत्त	पोता	पु.	48
125	फरसु	कुल्हाड़ा	पु.	109

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	पृ.सं.
126	बप्प	पिता	पु.	48
127	बहिणी	बहिन	स्त्री.	116
128	बहू	बहू	स्त्री.	117
129	बालअ	बालक	पु.	48
130	बिन्दु	बूँद	पु.	109
131	बीअ	बीज	नपु.	56
132	भत्ति	भक्ति	स्त्री.	116
133	भय	भय	नपु.	56
134	भव	संसार	पु.	48
135	भाइ	भाई	पु.	109
136	भुक्खा	भूख	स्त्री.	63
137	भोयण	भोजन	नपु.	56
138	मइ	मति	स्त्री.	116
139	मइरा	मदिरा	स्त्री.	63
140	मंति	मन्त्री	पु.	109
141	मच्चु	मृत्यु	पु.	109
142	मज्ज	मद्य	नपु.	56
143	मण	चित्त	नपु.	56
144	मणि	रत्न	स्त्री.	116
145	मरण	मरण	नपु.	56
146	महिला	स्त्री	स्त्री.	63
147	महेली	महिला	स्त्री.	116
148	महु	मधु	नपु.	116
149	माउल	मामा	पु.	48
150	माउसी	मौसी	स्त्री.	116
151	माया	माता	स्त्री.	63

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	पृ.सं.
152	मारुअ	पवन	पु.	48
153	मित्त	मित्र	पु.	48
154	मुणि	मुनि	पु.	109
155	मेरु	पर्वत विशेष	पु.	109
156	मेह	मेघ	पु.	48
157	मेहा	बुद्धि	स्त्री.	63
158	रक्खस	राक्षस	पु.	48
159	रज्ज	राज्य	नपु.	56
160	रज्जु	रस्सी	स्त्री.	117
161	रत्त	रक्त	नपु.	56
162	रत्ति	रात	स्त्री.	116
163	रयण	रत्न	पु.	48
164	रवि	सूर्य	नपु.	116
165	रहु	रघु	पु.	109
166	रहुणन्दण	राम	पु.	48
167	रहुवइ	रघुपति	पु.	109
168	राय	नरेश	पु.	48
169	रिउ	दुश्मन	पु.	109
170	रिण	कर्ज	नपु.	56
171	रिद्धि	वैभव	स्त्री.	116
172	रिसि	मुनि	पु.	109
173	रूप	रूप	नपु.	56
174	लक्कुड	लकड़ी	नपु.	56
175	लच्छी	लक्ष्मी	स्त्री.	116
176	वण	जंगल	नपु.	56
177	वत्थ	वस्त्र	नपु.	56

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	पृ.सं.
178	वत्थु	पदार्थ	नपु.	116
179	वय	व्रत	पु.	48
180	वसण	व्यसन	नपु.	56
181	वाउ	वायु	पु.	109
182	वाया	वाणी	स्त्री.	63
183	वारि	जल	नपु.	116
184	विज्जु	बिजली	पु.	109
185	विमाण	विमान	नपु.	56
186	विहि	विधि	पु.	109
187	वेरग्ग	वैराग्य	नपु.	56
188	संझा	सायंकाल	स्त्री.	63
189	संति	शान्ति	स्त्री.	126
190	सच्च	सत्य	नपु.	56
191	सत्ति	बल	स्त्री.	116
192	सत्तु	शत्रु	पु.	109
193	सद्धा	श्रद्धा	स्त्री.	63
194	सप्प	साँप	पु.	48
195	समणी	श्रमणी	स्त्री.	70
196	सयंभू	स्वयंभू	पु.	117
197	सरिआ	नदी	स्त्री.	63
198	सलिल	पानी	पु.	48
199	ससा	बहिन	स्त्री.	63
200	ससि	चन्द्रमा	पु.	109
201	ससुर	ससुर	पु.	48
202	सस्सु	सासू	स्त्री.	117
203	साडी	साड़ी	स्त्री.	116

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं.	संज्ञा शब्द	अर्थ	लिंग	पृ.सं.
204	सामि	मालिक	पु.	109
205	सामिणी	स्वामिनी	स्त्री.	116
206	सायर	समुद्र	पु.	48
207	सासण	शासन	नपु.	56
208	सासू	सासू	स्त्री.	117
209	सिक्खा	शिक्षा	स्त्री.	63
210	सिर	मस्तक	नपु.	56
211	सीया	सीता	स्त्री.	63
212	सील	सदाचार	नपु.	56
213	सीह	सिंह	पु.	48
214	सुत्त	धागा	नपु.	56
215	सुया	पुत्री	स्त्री.	63
216	सुह	सुख	नपु.	56
217	सूणु	पुत्र	पु.	109
218	सेणावइ	सेनापति	पु.	109
219	सोक्ख	सुख	नपु.	56
220	सोहा	शोभा	स्त्री.	63
221	हणु	ठोडी	स्त्री.	117
222	हणुवन्त	हनुमान	पु.	48
223	हत्थि	हाथी	पु.	109
224	हरि	हरि	पु.	109
225	हुअवह	अग्नि	पु.	48

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

परिशिष्ट - 2

क्रिया-कोश

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	अक/सक	पृ.सं.
1	अच्च	पूजा करना	सक	99
2	अच्छ	बैठना	अक	26
3	अस	खाना	सक	110
4	आगच्छ	आना	सक	118
5	आवड	अच्छा लगना	सक	118
6	इच्छ	इच्छा करना	सक	110
7	उग	उगना	अक	49
8	उग्घाड	खोलना, प्रकट करना	सक	99
9	उच्छल	उछलना	अक	26
10	उच्छह	उत्साहित होना	अक	57
11	उज्जम	प्रयास करना	अक	26
12	उट्ठ	उठना	अक	26
13	उड्ड	उड़ना	अक	49
14	उपकर	उपकार करना	सक	99
15	उप्पज्ज	पैदा होना	अक	49
16	उप्पाड	उपाड़ना, उन्मूलन करना	सक	99
17	उल्लस	खुश होना	अक	26
18	उवविस	बैठना	अक	64
19	उवसम	शान्त होना	अक	64
20	उस्सस	साँस लेना	अक	64
21	ऊतर	ऊतरना, नीचे आना	अक	64
22	ओढ	ओढ़ना	सक	110

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	अक/सक	पृ.सं.
23	कंद	रोना	अक	49
24	कंप	काँपना	अक	26
25	कट्ट	काटना	सक	99
26	कर	करना	सक	110
27	कलंक	कलंकित करना	सक	99
28	कलह	कलह करना	अक	26
29	कह	कहना	सक	109
30	कीण	खरीदना	सक	118
31	कील	कीलना (मन्त्रादि से)	अक	57
32	कील	क्रीड़ा करना	अक	57
33	कुट्ट	कूटना	सक	99
34	कुद्द	कूदना	अक	57
35	कुल्ल	कूदना	अक	26
36	कोक	बुलाना	सक	99
37	खंड	टुकड़ा करना	सक	118
38	खण	खोदना	सक	99
39	खम	क्षमा करना	सक	118
40	खय	नष्ट होना	अक	48
41	खा	खाना	सक	93
42	खाद	खाना	सक	110
43	खास	खाँसना	अक	64
44	खिंस	निन्दा करना	सक	118
45	खिज्ज	अफसोस करना	अक	57
46	खिव	फैंकना	सक	118
47	खुम्म	भूख लगना	अक	63
48	खेल	खेलना	अक	26

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	अक/सक	पृ.सं.
49	गच्छ	जाना	सक	118
50	गज्ज	गर्जना	अक	49
51	गडयड	गिड़गिड़ाना	अक	64
52	गण	गिनना	सक	118
53	गरह	निन्दा करना	सक	99
54	गल	गलना	अक	48
55	गवेस	खोज करना	सक	99
56	गा	गाना	सक	110
57	गाअ	गाना	सक	118
58	गुंज	गूँजना	अक	56
59	गुंथ	गूँथना	सक	118
60	घट	कम होना, घटना	अक	57
61	घाल	डालना	सक	99
62	घुम	घूमना	अक	26
63	चक्ख	चखना	सक	99
64	चप्प	चबाना	सक	99
65	चर	चरना	सक	93
66	चव	बोलना	सक	110
67	चिंत	चिंता करना	सक	110
68	चिट्ठ	ठहरना, बैठना	अक	57
69	चिण	चुनना	सक	99
70	चिराव	देर करना	अक	57
71	चुअ	टपकना	अक	56
72	चुअ	त्याग करना	सक	110
73	चुक्क	भूल करना	अक	57
74	चुस्स	चूसना	सक	118

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	अक/सक	पृ.सं.
75	चेट्ठ	प्रयत्न करना	अक	56
76	चोप्पड	स्निग्ध करना	सक	99
77	चोर	चुराना	सक	110
78	छंड	छोड़ना	सक	99
79	छल	ठगना	सक	99
80	छिज्ज	छीजना	अक	63
81	छुअ	स्पर्श करना	सक	99
82	छुट्ट	छूटना	अक	57
83	छोड	छोड़ना	सक	99
84	छोल्ल	छीलना	सक	99
85	जग्ग	जागना	अक	1
86	जगड	झगड़ा करना	अक	57
87	जण	उत्पन्न करना	सक	110
88	जम्म	जन्म लेना	अक	57
89	जर	बूढ़ा होना	अक	49
90	जल	जलना	अक	48
91	जागर	जागना	अक	57
92	जाण	जानना, समझना	सक	93
93	जिंघ	सूंघना	सक	118
94	जिण	जीतना	सक	118
95	जिम	जीमना	सक	99
96	जीव	जीना	अक	1
97	जुज्झ	लड़ना	अक	26
98	जेम	जीमना	सक	110
99	जोअ	प्रकाशित करना	सक	118
100	झाअ	ध्यान करना	सक	118

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	अक/सक	पृ.सं.
101	ठा	ठहरना	अक	11
102	ठेल्ल	ठेलना	सक	110
103	डंक	डसना	सक	110
104	डर	डरना	अक	26
105	डुल	डोलना, हिलना	अक	49
106	ढक्क	ढकना	सक	99
107	ढोय	ढोना	सक	110
108	णच्च	नाचना	अक	1
109	णम	नमस्कार करना	सक	110
110	णस्स	नष्ट होना	अक	49
111	णिज्झर	झरना	अक	48
112	णिरक्ख	देखना	सक	118
113	णिसुण	सुनना	सक	110
114	ण्हा	नहाना	अक	11
115	तडफड	छटपटाना	अक	26
116	तव	तपना	अक	57
117	तुट्ट	टूटना	अक	49
118	तोड	तोड़ना	सक	99
119	थंभ	रुकना	अक	64
120	थक्क	थकना	अक	26
121	थुण	स्तुति करना	सक	110
122	दह	जलाना	सक	118
123	दा	देना	सक	110
124	दुक्ख	दुखना	अक	49
125	देख	देखना	सक	99
126	धार	धारण करना	सक	110

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	अक/सक	पृ.सं.
127	धाव	दौड़ना	सक	118
128	धिक्कार	धिक्कारना	सक	118
129	धो	धोना	सक	99
130	पड	गिरना	अक	26
131	पढ	पढ़ना	सक	109
132	पणम	प्रणाम करना	सक	93
133	पला	भाग जाना	अक	49
134	पसर	फैलना	अक	48
135	पाल	पालना	सक	93
136	पाव	पाना	सक	118
137	पिब	पीना	सक	110
138	पीड	पीड़ा देना	सक	110
139	पीस	पीसना	सक	99
140	पुक्कर	पुकारना	सक	99
141	पेच्छ	देखना	सक	110
142	पेस	भेजना	सक	110
143	फाड	फाड़ना	सक	99
144	फुर	प्रकट होना	अक	57
145	बंध	बांधना	सक	110
146	बइस	बैठना	अक	49
147	बखाण	व्याख्यान करना	सक	109
148	बुक्क	भौंकना	अक	49
149	बुज्झ	समझना	सक	118
150	बोल्ल	बोलना	सक	109
151	भण	कहना	सक	109
152	भिड	भिड़ना	अक	26

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	अक/सक	पृ.सं.
153	भुंज	खाना	सक	118
154	भुल	भूलना	सक	109
155	मइल	मैला करना	सक	110
156	मग्ग	माँगना	सक	110
157	मर	मरना	अक	26
158	माण	सम्मान करना	सक	118
159	मार	मारना	सक	110
160	मुच्छ	मूर्च्छित होना	अक	26
161	मुण	जानना	सक	110
162	या	जाना	सक	118
163	रंग	रंगना	सक	109
164	रक्ख	रक्षा करना	सक	93
165	रक्ख	रखना	सक	118
166	रम	रमना	अक	57
167	रच	बनाना	सक	118
168	रुव	रोना	अक	26
169	रूस	रूसना	अक	1
170	रोक्क	रोकना	सक	99
171	लग्ग	लगना	अक	64
172	लज्ज	शरमाना	अक	26
173	लड्ड	लाड़-प्यार करना	सक	110
174	लभ	प्राप्त करना	सक	118
175	लिह	लिखना	सक	110
176	लिह	चाटना	सक	118
177	लुंच	बाल उखाड़ना	अक	63
178	लुक्क	छिपना	अक	1

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	अक/सक	पृ.सं.
179	लुढ	लुढ़कना	अक	48
180	ले	लेना	सक	110
181	लोट्ट	सोना, लोटना	अक	56
182	लोभ	लालच करना	अक	57
183	वंछ	चाहना	सक	118
184	वंद	प्रणाम करना	सक	118
185	वज्ज	जाना	सक	118
186	वड्ढ	बढना	अक	56
187	वण्ण	वर्णन करना	सक	110
188	वद्धाव	बधाई देना	सक	110
189	वम	वमन करना	अक	63
190	वल	मुड़ना	अक	49
191	वस	बसना	अक	57
192	वह	धारण करना	सक	110
193	विअस	खिलना	अक	56
194	विज्ज	उपस्थित होना	अक	57
195	सय	सोना	अक	1
196	सिंच	सींचना	सक	110
197	सिज्झ	सिद्ध होना	अक	56
198	सीख	सीखना	सक	118
199	सुक्क	सूखना	अक	48
200	सुण	सुनना	सक	93
201	सुमर	स्मरण करना	सक	109
202	सेव	सेवा करना	सक	110
203	सोह	शोभना	अक	48
204	हण	मारना	सक	110

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

क्र.सं.	क्रिया	अर्थ	अक/सक	पृ.सं.
205	हरिस	प्रसन्न होना	अक	49
206	हव	होना	अक	57
207	हस	हँसना	अक	1
208	हिंस	हिंसा करना	अक	49
209	हु	होना	अक	49
210	हो	होना	अक	11

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

सहायक पुस्तकें एवं कोश

1.	हेमचन्द्र प्राकृत व्याकरण, भाग 1-2	:	व्याख्याता श्री प्यारचन्द जी महाराज (श्री जैन दिवाकर-दिव्य ज्योति कार्यालय, मेवाड़ी बाज़ार, ब्यावर)
2.	प्राकृत भाषाओं का व्याकरण	:	डॉ. आर. पिशल (बिहार राष्ट्रभाषा परिषद् , पटना)
3.	अभिनव प्राकृत व्याकरण	:	डॉ. नेमिचन्द शास्त्री (तारा पब्लिकेशन, वाराणसी)
4.	प्राकृत मार्गोपदेशिका	:	पं. बेचरदास जीवराज दोशी (मोतीलाल बनारसीदास, दिल्ली)
5.	प्रौढ़ रचनानुवाद कौमुदी	:	डॉ. कपिलदेव द्विवेदी (विश्वविद्यालय प्रकाशन, वाराणसी)
6.	पाइअ-सद्द-महण्णवो	:	पं. हरगोविन्ददास त्रिकमचन्द सेठ (प्राकृत ग्रन्थ परिषद् , वाराणसी)
7.	अपभ्रंश-हिन्दी कोश, भाग 1-2	:	डॉ. नरेशकुमार (इण्डो-विजन प्रा. लि.) ख्ख ए, 220, नेहरु नगर, गाजियाबाद)
8.	हेमचन्द्र अपभ्रंश व्याकरण सूत्र विवेचन : (जैनविद्या के मुनि नयनन्दी एवं कनकामर विशेषांक, संख्या 7, 8)		डॉ. कमलचन्द सोगाणी (जैनविद्या संस्थान, दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र श्रीमहावीरजी, राजस्थान)
9.	Apabhramsa of Hemchandra :		Dr. Kantilal Baldevram Vyas (Parkrit Text Society, Ahm.)

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org